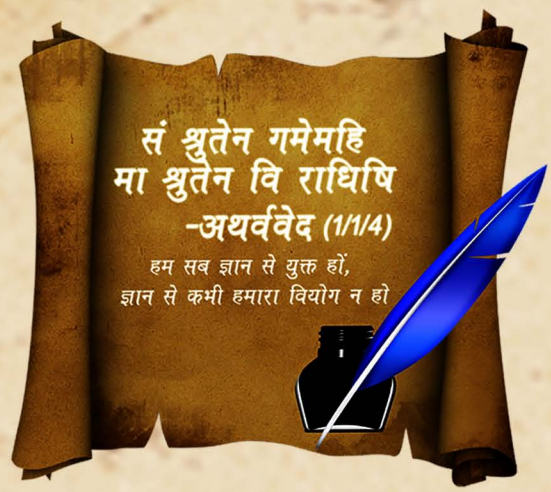

संवाद

सामान्य अंक, 2021

इसरो isro

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एन आर एस सी

संवाद

सामान्य अंक, 2021

संरक्षक
डॉ. राज कुमार
निदेशक व अध्यक्ष, राकास

सलाहकार
विंग कमांडर (से.नि.)
विभास सिंह गुप्ता
नियंत्रक

मुख्य संपादक
श्री विनोद एम बोथले
सह-निदेशक

संपादक
श्रीमती मीनाक्षी सक्सेना

संपादक मंडल
डॉ. एन. अपर्णा
श्रीमती भावना सहाय
श्रीमती जया सक्सेना
श्री विजय शेखर रेड्डी
श्री ओझा अनिल कुमार
श्री रामराज रेड्डी

आवरण एवं पत्रिका डिज़ाइन
श्री रामराज रेड्डी

आवरण पृष्ठ में आजादी का अमृत महोत्सव को समर्पित डिज़ाइन एवं पार्श्व पृष्ठ में विश्व हिंदी दिवस के विजेता बच्चों की तस्वीरों का कोलाज है।

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद-500037

अनुक्रमणिका....

इस अंक में...

	विषय	पृष्ठ सं.
1	राजभाषा प्रतिज्ञा	
2	आमुख	
3	संदेश	
4	मुख्य संपादक की कलम से	
5	महत्वपूर्ण घटनाएं	06
6	उपलब्धियां	14
7	सायोनारा	17
8	एनआरएससी में 'आजादी का अमृत महोत्सव' - एक संक्षिप्त रिपोर्ट	19
1	खाद्य सामग्री से उपजी कला – प्लेट आर्ट	20
2	21वीं सदी की नई शिक्षा नीति	23
3	एक अनुभव - मोबाइल टावर सिगनल के प्रति जागरूकता	25
4	राम और रामोजी फिल्मसिटी	26
5	अकबर की कैद—रक्षक बने हनुमान	33
6	मेरा अनोखा सफर-हैदराबाद शहर	37
7	जिंदगी का वास्तविक अनुभव	38
8	ओ मेरे छोटे जादूगर	39
9	जीकर देखो	39
10	रंगोली	40
11	बेटी	42
12	संरक्षण या अतिसंरक्षण	43
13	द्वारका-सोमनाथ—एक अविस्मरणीय यात्रा	45
14	पीछे क्यों छूट गए पापा ...	50
15	कोरोना	50
16	भूवैज्ञानिक स्मारक "मिलानी इग्नीस सुइट" जोधपुर, राजस्थान	51
17	ज्ञान का अहंकार	52
18	नाम था उनका एपीजे अब्दुल कलाम	53
19	ग़ज़ल	53
20	युद्ध भूमि - शुद्ध भूमि - बुद्ध भूमि, राजगीर	54
21	हमारे सनातन धर्म का एक अति दुर्लभ ग्रंथ	45
22	लिखो प्यार से	58
23	सुभाषित सुविचार	58
24	हौसला	59
33	ननद का भाभी को निवेदन	59
34	एक कविता हर माँ के नाम	61
35	मौसम	61
36	वर्चुअल वर्ल्ड—एक अलग दुनिया	62
37	सचित्र कविताएं	64

*प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो। संवाद के प्रकाशन में संपादक मंडल के साथ-साथ एनआरएससी की मुद्रण सुविधा, फोटो संसाधन समूह का भी विशेष योगदान है। वर्ष के दौरान एनआरएससी की गतिविधियों का फोटो संग्रह फोटो संसाधन समूह द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अतः संवाद, मुद्रण सुविधा एवं फोटो संसाधन के प्रति आभारी है। पत्रिका पूर्ण रूप से हिंदी अनुभाग द्वारा तैयार कर आंतरिक रूप से मुद्रित की गई है। इसे एनआरएससी की वेबसाइट www.nrsc.gov.in तथा www.rajbhasha.gov.in के ई-पत्रिका पुस्तकालय में भी पढ़ सकते हैं।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351
तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,
केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि
अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से;
अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से
अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,
उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;
अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए;
अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल
और प्रभावशाली बनाते हुए
राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।
हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति
सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

संवाद
सामान्य अंक, 2021

डॉ. राज कुमार
निदेशक एवं अध्यक्ष,
राकास (एनआरएससी)

आमुख

प्रिय पाठकों, आशा है आप सभी स्वस्थ और सुरक्षित होंगे। कोविड-19 महामारी के आतंक व भय के बीच एनआरएससी स्टाफ विविध चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी कर्मठता पर कायम है। इस महामारी में हमने अपने एक साथी को तो खोया ही, साथ ही कई परिवारों के सदस्य भी इसका शिकार होने से बच नहीं सके। अब जबकि देश में टीकाकरण की गतिविधियों ने जोर पकड़ लिया है तो धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य सा होता नजर आ रहा है। लेकिन आज भी हम इस भयावह संक्रमण के भय से मुक्त नहीं हो पाए हैं। हमारे लिए परिस्थितियां प्रतिकूल रहीं लेकिन हमने हार नहीं मानी और निरंतर अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होकर अबाध रूप से लगे रहे। एक ओर देश इस महामारी से जूझ रहा है तो दूसरी ओर प्रकृति अपनी विनाश लीला दिखाने में लगी है। ऋषिगंगा में आई अचानक बाढ़ ने एक अलग आतंक मचाया, ऐसे में एनआरएससी की ओर से भू-वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए तकनीकी सहायता के अलावा डीईएम जनन, आयतनिक विश्लेषण, उपग्रह डेटा व्याख्या, भूस्खलन बांध स्थिरता मूल्यांकन और घटनाओं के पुनर्निर्माण और घटनाओं के अनुक्रम के समय की जानकारी भी प्रदान की। हमने गुजरात में चक्रवात ताउते और ओड़िशा में यास द्वारा आई बाढ़ की निगरानी भी की। 03 मार्च 2021 को माननीय मुख्य सचिव, बिहार राज्य द्वारा बिहार में बाढ़ के जोखिम वाला एटलस आभासी बैठक में जारी किया गया।

देश "आजादी का अमृत महोत्सव" किसी पर्व के रूप में मना रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार हम एनआरएससी में भी इस महापर्व के आयोजन की श्रृंखला के अंतर्गत तकनीकी विषयों पर व्याख्यान आयोजित करने के साथ-साथ स्कूल / कॉलेज के बच्चों तक अंतरिक्ष अनुसंधान के ज्ञान को प्रसारित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमने संवाद के आवरण पृष्ठ को भी आज़ादी के महा उत्सव को समर्पित करते हुए तैयार किया है। एनआरएससी आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रमों के माध्यम से अपने ज्ञान के आदान-प्रदान, विचार, विशेषज्ञ व्याख्यान और विचारों के सृजन और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में सबसे आगे रहा है।

23 अगस्त 2021 को माननीय केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री द्वारा युक्तधारा पोर्टल का शुभारंभ किया गया तथा डॉ. जीतेन्द्र सिंह, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री, अंतरिक्ष विभाग, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, राज्य मंत्री कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, प्रधान मंत्री कार्यालय के राज्य मंत्री, राज्य मंत्री परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा जीआईएस योजना के लिए मानक संचालन नियमावली का भी ई-रिलीज किया गया।

कार्यालय में एक सुरक्षित कार्य करने योग्य वातावरण तैयार करने तथा कोविड-19 के प्रभावों से स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं को कम करने की दिशा में हमने अपने सभी कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को वैक्सीन दिलवाने की व्यवस्था भी की है। मैं ईश्वर से अपने सुधीजनों व पाठकों के भावी अच्छे दिनों की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

राज कुमार

(डॉ. राज कुमार)
निदेशक एवं अध्यक्ष,
राकास (एनआरएससी)

दिनांक-14.09.2021

संवाद
सामान्य अंक, 2021

संदेश

गृह पत्रिकाएं किसी भी संगठन के कार्मिकों को एक रचनात्मक मंच उपलब्ध कराती हैं जिसके माध्यम से वे अपनी लेखन प्रतिभा पर अपना हाथ आजमाते हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। राजभाषा अर्थात् राजकाज की भाषा सरकार द्वारा आम जनता के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा में कार्य करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। इसरो हमेशा से ही राजभाषा के प्रति समर्पित रहा है। यही कारण है कि गृह मंत्रालय ने भी हमें लगातार पांचवी बार कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति से पुरस्कृत किया है। हमारी पत्रिका राजभाषा प्रचार –प्रसार की दिशा में एक प्रयास है।

समय की मांग आज डिजिटल मंच से सभी आयोजन पूरे करने की है। हम भी इसी का अनुपालन करते हुए सभी कार्य जैसे कार्यशाला, गोष्ठी, व्याख्यान, कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं आभासी रूप में कर रहे हैं। हम हमेशा यह प्रयास करते रहते हैं कि कार्यालय में राजभाषा का उपयोग हर क्षेत्र में हो। हमने अपने कार्यालय की ओर से प्रकाशित समाचार पत्रिका पिक्सैल टू पीपुल का भी हिंदी रूपांतरण प्रकाशित कर जन-साधारण के लिए वेबसाइट पर अपलोड कर दिया है। इसके साथ ही हमने अपने आंतरिक पोर्टल डीक्स्ट्रा पर ई-लर्निंग का प्रवधान किया है जिसमें प्रशासन/ तकनीकी/राजभाषा विषयों द्वारा कर्मचारियों का ज्ञान बढ़ाने का प्रयास किया गया है ताकि अन्य तकनीकी एवं प्रशासनिक ज्ञान के साथ-साथ लोग राजभाषा हिंदी से संबंधित नियमों का ज्ञान भी अर्जित कर पाएं।

ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन के बाद संवाद का काफी विस्तार हो गया है। इसमें हर वर्ष नये लेखक जुड़ते जा रहे है। आशा है कि आनेवाले वर्षों में संभवतः और भी नए लेखक हमारी पत्रिका से जुड़ेंगे और हिंदी साहित्य का संग्रह तैयार करने में हमारा सहयोग करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

विभास गुप्ता

(विंग कमाण्डर (से.नि.)
विभास सिंह गुप्ता)
नियंत्रक, एनआरएससी

दिनांक-14.09.2021

विंग कमांडर (से.नि.)
विभास सिंह गुप्ता
नियंत्रक, एनआरएससी

संवाद
सामान्य अंक, 2021

मुख्य संपादक की कलम से...

अपने पाठकों को "संवाद" -2021 का यह अंक सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी स्वस्थ व सुरक्षित होंगे। आशा करता हूं कि आप सभी को यह नवीनतम अंक अवश्य पसंद आयेगा। हम हर वर्ष इसे नए रूप में संवारने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत अंक मुख्य रूप से आजादी का अमृत महोत्सव को समर्पित है। राजभाषा के प्रचार प्रसार में संवाद का योगदान चिर परिचित है। हम इसमें रचनात्मक लेखों द्वारा हिन्दी में मौलिक लेखन को बढ़ावा देने की कोशिश करते हैं। इस वर्ष राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा को भी पत्रिका का हिस्सा बनाया है। हमारा प्रयास यही रहता है कि हम इसमें साहित्य की हर विधा को शामिल करें। आज हमारी पत्रिका, विशेष कर तकनीकी अंक की पहुंच अनेक छात्रोपयोगी लाइब्रेरी तक है। यह जान कर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है कि हम राजभाषा में तकनीकी विषयों को अधिक से अधिक लोंगों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं। इसे हमने अपनी वेबसाइट www.nrsc.gov.in के साथ-साथ www.rajbhasha.gov.in में भी ई-पत्रिका के रूप में रखा है। ई-माध्यमों को अपनाना आज की सबसे बड़ी मांग है।

इस पत्रिका को हमने विविध विषयों से संवारने की कोशिश की है। एनआरएससी में हुए कार्यक्रम, घटनाओं की चित्रदीर्घा के साथ सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उनकी समर्पित सेवाओं के लिए आभार दिया है। हमने कर्मचारियों के बच्चों की उपलब्धियों को शामिल किया है। कुछ कर्मचारियों को वार्षिक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बधाई दी है। कोरोना काल ने हमसे कुछ कर्मचारियों को छीन लिया, उनके प्रति श्रद्धांजलि दी है। अंतरिक्ष विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन योजना (सोलिस) के विजेताओं को भी पत्रिका का हिस्सा बनाया है। हम अपने लेखकों को उन्मुक्त रूप से अपनी सृजनात्मकता कागज पर उतारने की आजादी देते हैं जिसमें संपादक मंडल का सहयोग केवल भाषा संबंधित सुधार एवं टंकण संबंधी त्रुटियों की ओर ध्यान देना होता है।

श्री विनोद एम. बोथले
सह निदेशक एवं मुख्य संपादक

पत्रिका में हमने आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की एक झलक के साथ-साथ प्लेट आर्ट जैसी विलक्षण कला को दर्शाया है। 21सवीं सदी की नई शिक्षा नीति और वर्तमान में घरों के ऊपर लगाए गए मोबाइल टावर के प्रति जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की है। जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव और भक्ति रस के साथ कुछ पेन्सिल स्कैच व पेंटिंग भी पत्रिका में शामिल हैं। इस अंक में हमारी कोशिश यही है कि हम हर तरह के रसास्वादन से आप लोगों का मनोरंजन व ज्ञानवर्धन करें। अपने पाठकों की प्रतिक्रियाओं का भी हमें इंतजार रहता है ताकि हम अपनी कमियों से उबरते हुए इसे और अधिक निखार सकें।

शुभेच्छु जय हिंद, जय हिंदी।

विनोद बोथले

(विनोद एम. बोथले)
अध्यक्ष, संपादक समिति, संवाद

दिनांक-14.09.2021

एनआरएससी, हैदराबाद में गणतंत्र दिवस समारोह

एनआरएससी, भू-केंद्र शादनगर में गणतंत्र दिवस समारोह

एनआरएससी, जन-संपर्क सुविधा जीडिमेट्ला में गणतंत्र दिवस समारोह

एनआरएससी, भू-केंद्र शादनगर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

एनआरएससी, बालानगर, हैदराबाद में स्वतंत्रता दिवस समारोह

एनआरएससी, जन-संपर्क सुविधा जीडिमेट्ला में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राजभाषा समारोह के दौरान संवाद का विमोचन

राजभाषा समारोह के दौरान अनुभाग पुरस्कार वितरण

प्रयोक्ता संपर्क बैठक के दैरान संवाद के तकनीकी अंक का विमोचन

विश्व हिंदी दिवस

हिंदी कार्यशाला

डॉ. कै. शिवन अध्यक्ष, इसरो द्वारा ग्लेशियल लेक एलटस का विमोचन

पिक्सैल टू पीपुल (हिंदी एवं अंग्रेजी) समाचार पत्रिका के जनवरी अंक का विमोचन

पिक्सैल टू पीपुल (हिंदी एवं अंग्रेजी) समाचार पत्रिका का जुलाई अंक का विमोचन

इसरो वार्षिक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह

एनआरएससी, बालानगर में महिला दिवस समारोह

एनआरएससी , भू-केंद्र शादनगर में महिला दिवस समारोह

एनआरएससी, बालानगर स्वच्छता शपथ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एंवं स्वास्थ्य जांच कार्यक्रम

आरआरएससी - दक्षिण, बेंगलुरु

आरआरएससी , बेंगलुरू में गणतंत्र दिवस समारोह

आरआरएससी , बेंगलुरू में हिंदी पखवाड़ा समारोह

आरआरएससी , बेंगलुरू में महिला दिवस

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र शार द्वारा आयोजित आंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी में श्रेष्ठ लेख प्रस्तुति के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राधेश्याम यादव

लियोस में आयोजित इसरो, पूल-2 की संयुक्त हिंदी तकनीकी संगोष्ठी के राजभाषा सत्र में श्रेष्ठ आलेख एवं श्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री शेख इंतियाज़ अहमद एवं श्री राधेश्याम यादव

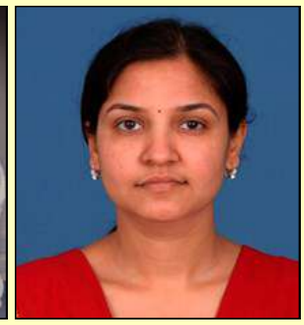

श्रीमती शिवम् त्रिवेदी, वैज्ञानिक अभियंता 'एसई', को लियोस में आयोजित इसरो, पूल-2 की संयुक्त हिंदी तकनीकी संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में श्रेष्ठ आलेख प्रस्तुति का पुरस्कार

आरआरएससी-पश्चिम, जोधपुर

आरआरएससी , जोधपुर में गणतंत्र दिवस समारोह

आरआरएससी , जोधपुर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दैरान सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा लेते हुए कर्मचारीगण

हिंदी पखवाड़ा समारोह

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी पखवाड़ा के समय विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागी

विश्व हिंदी दिवस के समय विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागी

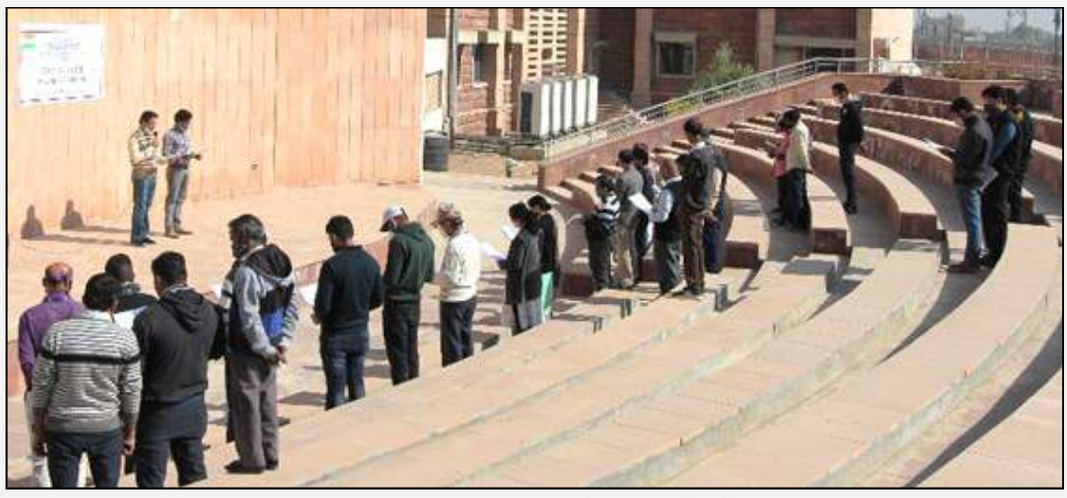

स्वच्छता शपथ ग्रहण करते हुए कर्मचारी

आरआरएससी-पूर्व, कोलकाता

आरआरएससी, कोलकाता में स्वच्छता पखवाड़ा

इसरो ISRO

वार्षिक सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार विजेता

एलिजाबेथ थॉमस

रंगनाथ टीएनसी

नागेश्वर राव एस

सुजन कुमार एन

बाला सुब्रमण्यम एवी

कृष्णा ए

नरसिम्हलू एम

नारायण सी

सुमन सेलिना पॉल

सीमा कुलकर्णी

जयचंद्रन नायर

श्रीनिवास राव जी

ओम प्रकाश शर्मा

सोमसुंदरम एस

रेवती पी

पद्मावती ए

श्रीनिवास राव जी

शिवम्मा जी

टी सुजना

मीनाक्षी सक्सेना

नरसिम्हा कुमार टी

रविंदर पी

रमेश बाबू एम एन

प्रसादिनी सीएचएसवी

पद्मावती बी

जॉन बॉस्को

निर्मला ओ

राजेश्वरी जी

श्रीनिवास राव सीएच

श्री विनोद एम. बोथले
सह निदेशक एवं मुख्य संपादक
संपादक रत्न पुरस्कार

!! प्रशस्ति पत्र !!

क्रमांक V/681/21

बृजलोक साहित्य-कला-संस्कृति अकादमी

गाँव-रिहावली, डाक तारौली गूजर, फतेहाबाद, आगरा-283111 (उ.प्र.), मो.-9627912535, 9456994678

श्री/श्रीमती/डॉ./सुश्री......विनोद बोथले (संवाद)......जी आपके द्वारा माँ भारती की अमूल्य सेवा अनवरत की जा रही है। आपकी साहित्यिक/सांस्कृतिक/धार्मिक/कलात्मिक/सामाजिक सेवा को देखते हुए सम्मानोपाधि........"संपादक रत्न"........से अलंकृत करते हैं। संस्था परिवार आपका सम्मान करके गौरवान्वित है।

जीवेत् शरदः शतम्

संरक्षकः-
श्रीमती सालिनी सी. (केरल)
श्रीमती डॉ. आशा सिंह (उ.प्र.)
श्री डॉ. सुरेन्द्र प्रताप सिंह (उ.प्र.)
श्रीमती राधा दुबे (म.प्र.)
श्री रामसूरत बिंद (उ.प्र.)

Awadhesh Kumar
सचिवः-
अवधेश कुमार निषाद मझवार

अध्यक्षः-
मुकेश कुमार "ऋषि वर्मा"
युवा साहित्यकार एवं क्षेत्रीय फिल्म कलाकार

दिनांक 20/05/2021

उपलब्धियां

अनादि श्रीवास्तव
सुपुत्र श्री गौरव श्रीवास्तव को नेशनल 3rd ऑल इंडिया हेल्पिंग हैंड्स ई-काता चैंपियनशिप, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश में "स्वर्ण पदक तथा तेलंगाना द्वारा आयोजित पहली एशियाई ऑनलाइन ई-काता चैंपियनशिप में रजत पदक के लिए हार्दिक बधाइयां

शिवाजय सक्सेना
सुपुत्र श्रीमती जया सक्सेना को इन्फोसिस कैच थीम यंग स्टार प्रमाणपत्र के लिए हार्दिक बधाइयां

मुदिता शर्मा
सुपुत्री, श्री विनोद कुमार शर्मा, आरआरएससी, दिल्ली को दसवीं कक्षा में हिंदी में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए हार्दिक बाधाईयां

ए दिया
सुपुत्री, श्री शिवय्या को 12वीं कक्षा में हिंदी में 89 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए हार्दिक बाधाईयां

सोलिस (अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना) विजेता

संतोष पोलोजु

कुनाल राय

सविता ए

काव्या पडाला

सी एच श्रीकांत

प्रियंका सी एस

संध्या पी

केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयो/विभागों में कार्यरत कर्मचारियों को अपना मूल कार्य हिंदी में करने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू है। अंतरिक्ष विभाग/इसरो के सभी केन्द्रों में इसी प्रकार की प्रोत्साहन योजना सोलिस (अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना) के नाम से लागू है। इस योजना का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। उपरोक्त कर्मचारियों के योगदान से परिसर में राजभाषा कार्यान्वयन सुदृढ़ हो रहा है। सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई तथा अन्य कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे भी अपने कार्य स्थल में राजभाषा का प्रयोग करते हुए एनआरएससी एवं आरआरएससी के सभी परिसरों में राजभाषा कार्यान्वयन को और सशक्त बनाएं।

चौधरी एस बी
30.09.2020

वेंकटेश्वर राव सीएच
31.10.2020

मनोज राज सक्सेना
30.11.2020

सत्यनारायण एमएस
31.12.2020

अजय मंडल
31.12.2020

बोरकर एस एन
31.12.2020

शांतनु चौधरी
31.12.2020

आनंद राव जी
31.01.2021

कृष्णा कुमार वी
31.01.2021

कोंडायाह यू
28.02.2021

श्रीनिवास रेड्डी जी
28.02.2021

आनंद फ्रांसिस
28.02.2021

रमेश के सो
30.04.2021

शिवलाल
30.04.2021

सुब्बा राव ए
30.04.2021

चंद्र सेकरन डी
31.05.2021

संजय जैन
30.06.2021

मूर्ति वीएसवीएस एसएसआर
30.06.2021

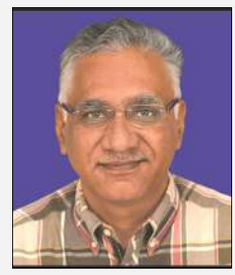

वेंकट नरसिम्हा राव पी
30.06.2021

आनंद कुमार मो
30.06.2021

के गणेश राज
31.07.2021

प्रसाद ए वी वी
31.07.2021

शिव राम कृष्ण के एस
31.08.2021

चंद्र शेखर के वी
31.08.2021

वेणुगोपाल राव के
31.08.2021

उपर्युक्त पदाधिकारियों ने दीर्घ काल तक एनआरएससी को अपनी समर्पित सेवाएं उपलब्ध कराईं।
इन सभी को स्वस्थ, आनंद दायक भावी दिनों की हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रद्धांजलि

नरसिंह राव के
17.10.2020

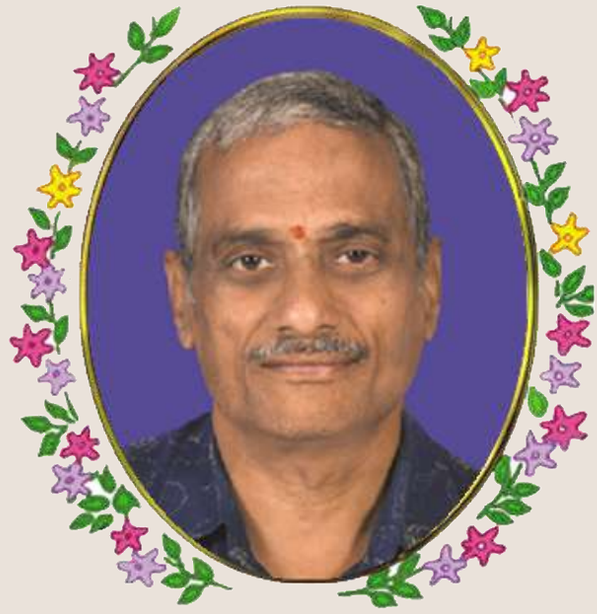

पी सत्यनारायण
06.05.2021

के सुधा रानी
02.08.2021

उपर्युक्त पदाधिकारियों ने दीर्घ काल तक एनआरएससी को अपनी समर्पित सेवाएं उपलब्ध कराईं। आज ये हमारे बीच नहीं रहें। भगवान इनकी आत्मा को शांति दें।

एनआरएससी में 'आजादी का अमृत महोत्सव' - एक संक्षिप्त रिपोर्ट

'आजादी का अमृत महोत्सव' यानी - नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत। यह भारत सरकार की एक पहल है, जो प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल और इसके लोगों के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और उपलब्धियों का पर्व मनाने के लिए है। 12 मार्च, 2021 को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से पदयात्रा (स्वतंत्रता मार्च) को हरी झंडी दिखाकर आजादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की एकमात्र संस्था होने के नाते और जन सेवा के लिए अपनी प्रतिबद्धता के चलते इसरो-एनआरएससी इस कार्यक्रम के भाग के रूप में, पूरे भारत में स्थित विभिन्न इसरो केंद्रों, विद्यार्थियों तथा विभिन्न संस्थाओं को जोड़ कर विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर वेबिनार श्रृंखला का आयोजन कर रहा है एनआरएससी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रयोग करने के लिए "आज़ादी का अमृत महोत्सव" को सपर्मित एक लोगो भी डिज़ाइन किया गया। इस लोगो को डॉ. राजश्री विनोद बोथले, समूह निदेशक,टीईओजी की संकल्पना के आधार पर रामराज रेड्डी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने डिज़ाइन किया। इसका इस्तेमाल तब तक किया गया जब तक अधिकारिक लोगो की धोषणा नहीं की गई थी।

इस कार्यक्रम के तहत दिनांक 15.03.2021 से 19.03.2021 तक एनआरएससी हैदराबाद, आरआरएससी-बेंगलुरू, कोलकाता, जोधपुर एवं नागपुर के विभिन्न वैज्ञानिकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली/ बेंगलुरू के माध्यम से पांच दिवसीय ऑनलाइन संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े वैज्ञानिको को अनुवाद के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। यह कार्यक्रम कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का संकल्प है। इस कार्यक्रम में दिनांक 15.03.2021 से 19.03.2021 तक विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए गए जिसमें "भारत सरकार में अनुवाद की आवश्यकता, व्यवस्था और अनुवाद का महत्व" विषय पर श्री. विनोद संदलेश,संयुक्त निदेशक,केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग,नई दिल्ली का व्याख्यान, "सामान्य प्रशासन से संबंधित शब्दों पर चर्चा - प्रशासनिक वाक्यांश और अभिव्यक्तियां" विषय पर श्री. एम.एम.भांडेकर,सहायक निदेशक व केंद्र प्रभारी,केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,राजभाषा विभाग,बेंगलुरु का व्याख्यान, "अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार" विषय पर श्री. प्रकाश चंद पाण्डेय,सहायक निदेशक,केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,राजभाषा विभाग,नई दिल्ली का व्याख्यान," अनुवाद प्रक्रिया" विषय पर श्रीमती लेखा सरीन, सहायक निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,राजभाषा विभाग,नई दिल्ली का व्याख्यान," जटिल वाक्यों के अनुवाद की समस्याएं और उनका व्यावहारिक समाधान " विषय पर श्रीमती मीना गुप्ता ,सहायक निदेशक,केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,राजभाषा विभाग,नई दिल्ली का व्याख्यान और " सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद " विषय पर श्री. विजय शर्मा, सहायक निदेशक,केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो,राजभाषा विभाग,नई दिल्ली का व्याख्यान शामिल हैं।

दिनांक 27.05.21 को स्कूल के बच्चों के लिए अंतरिक्ष जागरूकता पर 3 दिवसीय वेबिनॉर का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत व्याख्यान तथा ऑनलाइन प्रश्नोत्तीरी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 100 बच्चों ने भाग लिया। दिनांक 05.08.2021 को "इसरो के जियोपोर्टल में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों की क्षमता का दोहन" विषय पर श्री. विनोद बोथाले, उत्कृष्ट वैज्ञानिक और सह निदेशक, एनआरएससी के व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में इसरो के विभिन्न केंद्रों के वैज्ञानिकों सहित दिल्ली विश्वाविद्यालय के शोधार्थियों ने भाग लिया। दिनांक 12.08.2021 को सुदूर संवेदन दिवस पर स्कूल के छात्रों के लिए एक वेबिनार तथा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया इसमें 5000 से भी अधिक छात्रों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम एक वर्ष तक जारी रहेगा।

खाद्य सामग्री से उपजी कला – प्लेट आर्ट

✍ *डॉ राजश्री विनोद बोथले, एनआरएससी, हैदराबाद*

अभी भी मुझे वह दिन याद है, जिस दिन मैंने रंग बिरंगी सब्जियाँ काटने के लिए ली। अवसर था नाश्ते में बाजरे का उपमा बनाने का। मैंने हरी शिमला मिर्च, पीली शिमला मिर्च, गाजर, मक्का, अंकुरित मूंग, चुकंदर, घर में उगाये गए माइक्रो ग्रीन एक के बाद एक काटे और कटिंग बोर्ड पर रखते गई। पूरा काटने के बाद मेरा ध्यान गया तो मैं देख कर हैरान हो गई कि एक सुंदर सी आकृति ने जन्म लिया। थोड़ा फोटो सम्पादन किया और उस आकृति को एक तितली का आकार दिया। फेसबुक पर जब मैंने इसे डाला तो लोगों को वह बहुत पसंद आया और मुझे कुछ नया करने की प्रेरणा मिली।

वह डिजाईन जिसने "प्लेटआर्ट" को जन्म दिया

डिजाइन आकार लेने लगे और चॉपिंग बोर्ड पर सब्जियां मुझसे बात करने लगीं। उस दिन से आज तक लगातार नई-नई आकृतियाँ बना रही हूँ और लोगों की वाह वाही लूट रही हूँ। इस कला का नाम मैंने प्लेट आर्ट दिया है। प्लेट आर्ट भोजन सामग्री को कला में बदलने के लिए विचारों को दर्शाती है।

एक पृष्ठभूमि के रूप में एक प्लेट का उपयोग करते हुए, एक कहानी, एक विचार, एक अवधारणा को चित्रित करने के लिए पूरी तरह से खाद्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। यह रचनात्मकता और कल्पना दिखाने के लिए एक शानदार माध्यम है। खाद्य सामग्री विभिन्न प्रकार के रंगों और आकारों में आती हैं, और उन्हें काटकर, छीलकर और टुकड़ा करके, हम उन्हें अपनी कल्पना द्वारा नये आकार में बदल सकते हैं। एक ही सामग्री को लेकर पूरी तरह से अलग आकर्षक डिजाइन का बनना, बहुत आश्चर्यजनक लगता है. ऐसा बच्चों के साथ करने से वे रचनात्मक तरीके से सोचने के लिए प्रोत्साहित होते हैं और सब्जियों के प्रति उनमें रुझान विकसित होता है।

प्लेट आर्ट में डिजाइन सब्जियों, फलों और अनाज जैसे रोजमर्रा के खाद्य पदार्थों का उपयोग करके बनाया जाता है। सब्जियों को विभिन्न आकार में काटा जाता है। उन्हें अलग-अलग मोटाई में कद्दू कस किया जाता है। पत्तेदार सब्जियां (स्टेम और पत्तियां), गहरे हरे रंग के लिए ककड़ी का छिलका, हल्के हरे रंग के लिए लौकी का छिलका, हरी मिर्च, शिमला मिर्च, करी पत्ते आदि का उपयोग प्लेट कला को हरा रंग प्रदान करने के लिए किया जाता है। विभिन्न रंगों के गाजर, कद्दू (कच्चा और पका हुआ), टमाटर, सेब का छिलका और गाजर आम तौर पर डिजाइन को रंग प्रदान करते हैं।

अब हम कुछ डिज़ाइन की चर्चा करते हैं। एक ही सब्जी को अलग अलग काटने से अलग तरह का डिज़ाइन बनता है। चित्र में कटे हुए कद्दू, अंकुरित मोंठ और गाजर और ककड़ी के छिलकों से बनी बनावट दिखाई गई है जिसमें गाजर को त्रिकोणी और लंबा काटा गया है। करेले के आधे टुकड़ों और कद्दू कस किये गाजर से बनी दो बनावट, जो दिखने में सुन्दर पर एकदम अलग अलग हैं।

धीरे धीरे मैंने पाया कि सब्जियाँ मुझसे बातें करने लगी। सलाद के लिए कटते हुए, गाजर ने मुझसे पूछा, क्या बात है आज तुम्हें, मुझ पर कुछ नहीं सूझा। पौष्टिक हूं और सुंदर भी, कई रंगों में मिलता हूं, चलाओ अपना जादू, फिर देखो कैसे खिलता हूं। उस दिन मुनगे का सांभार बनाने चली तो मुनगा भी बोल उठा। कहीं कहे मुनगा, कहीं कहे सहजन, ड्रमस्टिक खिले हमारे घर आंगन। बहुत गुणी, बहू उपयोगी, मेरी तना, पत्ती और फली। देखो गाजर के साथ, मैं आज सांभार में चली। गाजर के फूल और अंकुरित मूंग की कली, ककड़ी के छिलकों से बने पत्तों ने की अठखेली. गाजर और शिमला मिर्च के साथ मक्के का छिलका और लौकी का छिलका ने जैसे समा ही बांध दिया।

प्लेट आर्ट द्वारा संदेश देने का काम भी हो सकता है। रिश्वत न लेने को यहाँ दिखाया गया है। गाजर से मनुष्य बनाए गए हैं। नौसेना दिवस पर समुद्र और जहाज के साथ मूली से बने उड़ते पक्षी ने मानो समा ही बांध दिया है। त्योहार भी इस कला से दर्शाये जा सकते हैं। तरबूज, कसी मूली, गाजर, बेल पेपर और मूली से बने सांता क्लॉज़ आप सभी को पसंद आ रहे होंगे। 15 अगस्त को झण्डा वन्दन दर्शाने वाला दृश्य भी बहुत मनोहारी है।

रिश्वत को नहीं कहना | नौसेना दिवस | सांता क्लॉज़ | झण्डा वन्दन

सब्जियों से परिदृश्य भी बनाए जा सकते हैं। खुशियों के शहर में बसा यह हावड़ा ब्रिज देख कर आप सभी हैरान हो जाएंगे। चलिये अब कुछ जानवर बनाने का प्रयास करते हैं। मूली, लौकी के बीज, गूदा और छिलका, आलू के छिलके, गाजर से बना यह अंटार्कटिका का दृश्य है जिसमें पेंगुइन दिख रहे हैं। पक्षियों का मनमोहक दृश्य यहाँ देखने को मिल सकता है। लौकीके छिलकों के वृक्ष बनाये हैं. सूरण और गाजर के टुकड़ोंकी जमीन है. गाजर का पक्षियों का जोड़ा है और तीसरा पक्षी मूली का है. चलिये ले चलते हैं आपको कश्मीर जहां बर्फ से ढकी वादियां, सुंदर ट्यूलिप के फूल हैं। केसर के हों खेत जहां और सब कुछ लगे कूल कूल. पानी पर तैरता घर है जहां, सेबों की लालिमा जहां. धरती का स्वर्ग यह कहलाता है, जो सेबऔर ककड़ी के छिलके, भीगी हुई चना दाल, जीरा पाउडर से बनाया गया है।

हावड़ा ब्रिज | अंटार्कटिका | पक्षियों का मनमोहक दृश्य | कश्मीर

कहानी का हम सब के जीवन में बहुत महत्त्व है. कहानियां कई तरह की होती है. धार्मिक, ऐतिहासिक, शौर्य गाथाएं या फिर शिक्षाप्रद. हर कहानी का एक ऐसा दृश्य होता है, जो उस पूरी कहानी को दर्शा सकता है.प्लेट आर्ट द्वारा कहानी को भी दर्शाया जा सकता है. यहाँ पर भी प्लेट आर्ट में ऐसा ही प्रयास किया है जब एक दृश्य से आप समझ सके कि क्या दर्शाया जा रहा है. कहानी के मुख्य किरदार को देखते हुए सब्जी या फलों का चुनाव किया गया।

फिर दृश्य के लिए लगने वाली सामग्री का चुनाव किया ताकि कहानी का सार समझ आ सके. यहाँ पर पंचतंत्र की एक कहानी बन्दर और मगरमच्छ को दर्शाया गया है। यह कहानी हमें शिक्षा देती है कि मित्र के साथ कभी धोखा नहीं करना चाहिए और विपत्ति के समय धैर्य और बुद्धि से काम लेना चाहिए. करेले के छिलके और बीज का यहाँ उपयोग किया है. हरे प्याज का पेड़ और मेथी के पत्ते बनाए गए हैं. बन्दर सूरण से बनाया है.

प्लेट आर्ट ने मेरे जीवन में एक बदलाव सा ला दिया है। रोज आने वाले दिवस के बारे में सोच कर उन पर प्लेट डिज़ाइन बनाना, उसे लोगों तक पहुंचाना एक आदत सी बन गयी है। मिलने वाली प्रशंसा से कुछ नया और बढ़िया बनाने की हर वक्त चाह रहती है। मन एकदम प्रसन्न और कल्पनाओं से भरा रहता है। एक खुश मन ऑफिस में काम करने के लिए नई ऊर्जा देता है।

बंदर और मगरमच्छ की कहानी

लाल गुलाब

बहुत खूबसूरत है यह लाल गुलाब,
सुगंध महके इसकी लाजवाब।
मंडरा रहे हैं इनपे भँवरे,
इनकी कलियाँ भी सुन्दर, फूल भी सुन्दर
मन मोह लेते हैं लाल गुलाब।

स्वच्छ भारत

कूड़ा- करकट मत गिराओ,
देश को स्वच्छ बनाओ।
स्वच्छ रहेगा देश हमारा,
बीमारियों को दूर भगाओ।

21वीं सदी की नई शिक्षा नीति

✍ दुर्गा रेड्डी, बहन, श्री रामराज रेड्डी, एनआरएससी, हैदराबाद

29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी। यानी नई शिक्षा नीति को मंजूरी मिले एक साल से ज्यादा हो गया। शिक्षा पर पिछली नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुँच के मुद्दों पर था। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जिसे 1992 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986/92) में संशोधित किया गया था , के अधूरे काम को इस नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है। 1986/92 की पिछली नीति के बाद से एक बड़ा कदम नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध करवाया। मानव संसाधन मंत्रालय को अब फिर से शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जा रहा है। शुरूआत में इस मंत्रालय का नाम शिक्षा मंत्रालय ही था परंतु 1985 में इसे बदल कर मानव संसाधन मंत्रालय नाम दिया गया था। नई शिक्षा नीति देश-दुनिया की बदलती हुई जरूरतों के मद्देनजर शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। इस नीति को बनाने के लिए देश के कोने-कोने से सभी वर्गों के लोगों की राय ली गई। शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि शिक्षा नीति बनाने के लिए देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, 6600 ब्लॉक और 676 जिलों से सलाह ली गई। शिक्षाविदों अध्यापकों, जनप्रतिनिधियों, अभिभावकों और छात्रों तक के दो लाख से अधिक सुझावों पर मंथन कर जन आकांक्षाओं के अनुरूप नई शिक्षा नीति को साकार किया गया। यह लगभग तीन दशकों के बाद हमारे देश के शिक्षा स्वरूप में बहुप्रतीक्षित बदलाव का दस्तावेज है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार का रास्ता खुला। शैक्षणिक मनोविज्ञान एवं यूनेस्को की 2008 की रिपोर्ट के अनुसार मातृभाषा में संप्रेषण और संज्ञान सहज एवं शीघ्र हो जाता है, जो पूर्ण संज्ञानात्मक विकास के लिए जरूरी है। नई शिक्षा नीति में इस पर गंभीरता से विचार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के अनुसार कम से कम कक्षा-5 तक की पढ़ाई स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में होनी चाहिए, जिसे कक्षा- 8 तक भी बढ़ाया जा सकता है और अंग्रेजी को एक विषय के तौर पर पढ़ाया जाए। इस नीति में त्रिभाषा फ़ार्मूला का क्रियान्वयन करने का जिक्र भी है। अत: हम कह सकते हैं कि यह भारतीय भाषाओं और संस्कृति की मजबूती की दिशा में भी एक बड़ा कदम साबित होगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री ने विद्या प्रवेश प्रोग्राम लांच किया इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अब तक प्ले स्कूल की परिकल्पना बड़े शहरों तक ही सीमित है। विद्या प्रवेश के जरिये यह गांव-गांव जाएगा। ये कार्यक्रम आने वाले समय में यूनिवर्सल तौर पर लागू होगा और राज्य भी इसे जरूरत के हिसाब से लागू करेंगे। देश के किसी भी हिस्से मं अमीर हो या गरीब, उसकी पढ़ाई खेलते और हंसते हुए और आसानी से होगी तो कामयाबी का रास्ता भी आसानी से पूरा होगा। कोरोना के इस काल में भी लाखों नागरिकों, शिक्षकों, राज्यों से सुझाव लेकर, कार्य बल बनाकर शिक्षा नीति को लागू किया जा रहा है। इंजीनियरिंग के कोर्स का 11 भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए टूल का विकास किया जा चुका हैं। आठ राज्यों के 14 इंजीनियंरिंग कॉलेज 5 भारतीय भाषाओं हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी और बांग्ला में इंजीनियरिंग की पढाई शुरू करने जा रहे हैं। हालांकि भारत में हिंदी और तमिल माध्ययम में पहले से ही कई तकनीकी अध्ययन उपलब्ध है।

अभी तक हमारे देश में स्कूली पाठ्यक्रम 10+2 के हिसाब से चलता रहा है परंतु अब ये 5+3+3+4 के हिसाब से होगा। छठवीं कक्षा से ही कौशल सीखने का मौका मिलेगा। इससे न सिर्फ आगे चलकर देश को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का भी विकास होगा। छात्र अपनी मर्जी और स्वेच्छा के आधार पर विषय का चयन कर सकेंगे। अब विज्ञान या वाणिज्य के विद्यार्थी मानविकी के विषय भी पढ़ सकेंगे। अगर कोई छात्र विज्ञान के साथ संगीत को भी एक विषय के रूप में पढ़ना चाहे तो पढ़ सकेंगे। यह व्यवस्था स्नातक स्तर पर भी लागू होगी। अमेरिका और यूरोप के विश्वविद्यालयों में यह बहुत पहले से है। अभी स्नातक उपाधि तीन वर्ष की होती है। अगर किन्हीं कारणों से छात्र/छात्रओं को बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़े तो सारा समय, परिश्रम और धन बेकार चला जाता है। लेकिन इस नई शिक्षा नीति के अनुसार अब जरूरत पड़ने पर एक या दो साल की पढ़ाई के बाद भी छात्र को सर्टिफिकेट या डिप्लोमा दिया जाएगा। हालाँकि इग्नू जैसे विश्व विद्यालयों में कुछ पाठ्यक्रमों में ऐसी सुविधा पहले से ही है, जैसे कोई छात्र एम.कॉम या एमबीए का एक वर्ष पास करने के बाद पीजी डिप्लोमा लेने का विकल्प, एम.ए.(ज्योतिष विज्ञान) में एक वर्ष पूरा करने पर पीजी डिप्लोमा, एम.एस.सी.(सूचना विज्ञान) में एक वर्ष का पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक पूरा करने पर पीजी डिप्लोमा आदि का विकल्प पहले से ही है। नई शिक्षा नीति में स्नानतक के तीन साल एवं चार साल दोनों विकल्प होंगे। चार वर्षीय स्नातक उपाधि उनके लिए है जो आगे पीजी या पीएचडी करना चाहते हैं। अगर छात्र

चार साल का विकल्प चुनता हैं तो उसकी स्नातकोत्तर उपाधि केवल एक वर्ष ही होगी। बीएड कोर्स में भी बदलाव इस प्रकार है- उच्च माध्यमिक के बाद 4 वर्षीय बीएड, स्नातक के बाद 2 वर्ष बीएड, परास्नातक के बाद 1 वर्ष का बीएड कोर्स होगा। पी.एच.डी. के लिए एम.फिल अनिवार्य नहीं होगा। अत: जो छात्र शोध में जाना चाहते हैं, वे चार वर्ष का ग्रेजुएशन कोर्स करेंगे और जो ग्रेजुएशन के बाद नौकरी करना चाहते हैं, वे तीन वर्ष में अपनी पढ़ाई पूरी कर निकल जाएं। इससे दोनों वर्गों का भला होगा। इस नीति में यह आजादी भी होगी कि छात्र कोई कोर्स बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में दाखिला ले सकता है। इसी संदर्भ में एक अभिनव प्रावधान है एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स का। यह एक तरह का डिजिटल क्रेडिट बैंक होगा, जिसके द्वारा छात्रों द्वारा किसी एक प्रोग्राम या संस्थान में प्राप्त क्रेडिट को दूसरे प्रोग्राम या संस्थानों में स्थानांतरित किया जाएगा। इसके अलावा एकल विषयक संस्थानों जैसे लॉ, एग्रीकल्चर विश्व विद्यालय आदि को समाप्त कर बहुविषयक संस्थानों में बदला जाएगा। यहां तक कि इंजीनियरिंग संस्थान भी कला और मानविकी का अधिकाधिक समन्वय करते हुए समग्र और बहुविषयक दिशा में अग्रसर होंगे। उच्च शिक्षा के लिए एक ही नियामक संस्था होगी। स्टेट स्कूल रेगुलेटरी ऑथोरिटी बनेगी जिसके चीफ शिक्षा विभाग से जुड़े होंगे। भारत द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक ''सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढावा दिए जाने'' का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नई शिक्षा नीति की जरूरत है। सर्व साधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता वाला अधिगम सामग्री और अन्य महत्वपूर्ण लिखित एवं मौखिक सामग्री तैयार करवाने हेतु इस नीति में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन (आईआईटीआई) की स्थापना की बात की गई है। भारत जैसे बहुभाषीय देश में ऐसे संस्थानों की बहुत जरूरत है। इससे अनुवादकों के लिए रोज़गार की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।

इस नीति के अनुसार शिक्षक नियुक्ति में डेमो/स्किल टेस्ट और इंटरव्यू भी शामिल होंगे। नई ट्रांसफर पॉलिसी आयेगी जिसमें ट्रांसफर लगभग बन्द हो जाएंगे, ट्रांसफर सिर्फ पदोन्नति पर ही होंगे। ग्रामीण इलाकों में स्टाफ क्वार्टर बनाए जाएंगे। इस शिक्षा नीति में बच्चों के रिपोर्ट कार्ड के संदर्भ में भी बदलाव है। जैसे अब तक रिपोर्ट कार्ड केवल अध्यापक बनाने थे, लेकिन अब इसमें अध्यापक के साथ-साथ बच्चे खुद स्वयं मूल्यांकन करेंगे और उनके सहपाठियों के मूल्यांकन का भी स्थान होगा। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है। यू-डाइज 2016-17 के आंकड़े के अनुसार भारत के 28 प्रतिशत सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं 14.8 प्रतिशत उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों में 30 से भी कम छात्र पढ़ते हैं। कक्षा 1 से 8 तक के स्कूलों में प्रति कक्षा औसतन 14 छात्र हैं जबकि बहुत से स्कूलों में तो यह औसत मात्र 6 से कम है। वर्ष 2016-17 में 1,08,017 स्कूल एकल शिक्षक स्कूल थे। इनमें से अधिकांश (85743) कक्षा 1 से 5 वाले प्राथमिक स्कूल थे। हम उम्मीद कर सकते हैं कि नई शिक्षा नीति इन कमियों को दूर करते हुए प्रत्येक माता-पिता के लिए सरकारी स्कूल एक आकर्षक विकल्प सिद्ध होगा। प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे बाणभट्ट की कादंबरी शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में वर्णित करती हैं। इन 64 कलाओं में न केवल गायन एवं चित्रकला जैसे विषय शामिल हैं बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायनशास्त्र और गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यवसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी और साथ ही साथ संप्रेषण, चर्चा और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) भी शामिल हैं। यह विचार कि इंसानी सृजन के सभी क्षेत्रों (जिसमें गणित, विज्ञान, पेशेवर और व्यावसायिक विषय और व्यवहारिक कौशल शामिल हैं) को कलाओं के रूप में देखा जाना चाहिए, भारतीय चिंतन की देन है। विभिन्न कलाओं के ज्ञान के इस विचार या जैसा कि आधुनिक युग में जिसे लिबरल आर्टस कहा जाता है, को भारतीय शिक्षा में पुन: शामिल करना ही होगा, चूँकि यह वही शिक्षा है जिसकी 21 वीं शताब्दी में आवश्यकता है। एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा, जो कि भारत के इतिहास में सुंदर ढंग से वर्णित की गई है-वास्तव में आज के स्कूलों की जरूरत है, ताकि हम इक्कीसवीं शताब्दी और चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व कर सकें। एक साल में शिक्षा नीति को आधार बनाकर अनेक बड़े फैसले लिए गए हैं। इसी कड़ी में नई योजनाओं की शुरूआत का सौभाग्य मिला है। ये महत्वपूर्ण अवसर ऐसे समय में आया है, जब देश आजादी के 75 साल का महोत्सव मना रहा है। एक तरह से ये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन आजादी के महापर्व का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

एक अनुभव - मोबाइल टावर सिगनल के प्रति जागरूकता

श्री सत्येंद्र सिंह रघुवंशी, एनआरएससी, हैदराबाद

- हाल ही मे एक टेलीकॉम कंपनी के रिप्रेजेंटेटिव ने मुझसे संपर्क किया तथा मेरे घर आकर, मेरे मकान की छत पर मोबाइल टावर लगाने की इच्छा जताई और 3 माह के एडवांस के साथ आकर्षक किराए का ऑफर देने लगा ।
- स्वयं तकनीकी क्षेत्र में कार्यरत होने के नाते, मैंने उससे जरूरी तकनीकी दस्तावेज़, कंपनी की नियम व शर्तों की जानकारी उपलब्ध कराने को कहा, साथ ही सादर पूर्वक उसको उलझाए रखा ताकि मैं ये जान संकू कि कैसे ये टेलीकॉम कंपनियां एक आम आदमी को अपने घरों की छत पर स्वास्थ जोखिम वाले (हैल्थ रिसकी) मोबाइल टावर लगाने के लिए मना लेती है। एक सप्ताह के भीतर, टेलीकॉम कंपनी के प्रतिनिधित्व ने मुझसे 4 से 5 बार संपर्क किया और मैंने हर बार उससे अधिक से अधिक तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने को कहा एवं मोबाइल टावर सिग्नल रेडिएशन के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावो के बारे मे, प्रतिनिधि के जबाबों को सुना ।
- साथ ही साथ मैंने टेक्निकल लिटरेचर एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सरकार की मोबाइल टावर सिग्नल रेडिएशन की गाइड लाइन तथा कुछ केस स्टडीस को पड़ा जिसमे जयपुर के एक परिवार का सुप्रीम कोर्ट केस भी शामिल है - जिसमे एक ही परिवार के 3 सदस्यो को कैंसर होने का मूल कारण मोबाइल टावर को ही माना। इसके अलावा मैंने अपने एक परिचित से भी बात की जिनके पड़ोस वाले घर की छत पर मोबाइल टावर लगा है, मेरे परिचित ने बताया कि उनकी माता जी भी स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही है तथा पड़ोस के एक और घर में एक बच्चे को गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं है। इन स्वास्थ्य समस्याओं के लिए वह भी मोबाइल टावर रेडिएशन को जिम्मेदार मानते हैं। आगे उन्होने बताया कि, कॉलोनी सोसाइटी के कड़े विरोध एवं पड़ोसियों के गुस्से के चलते, मोबाइल टावर वाली बिल्डिंग का मालिक चाहकर भी मोबाइल टावर को स्वयं के घर की छत से नहीं हटा पा रहा है क्योंकि जो उसने टेलीकॉम कंपनी के साथ अग्रीमेंट, टावर लगाने के समय, किया था उसमे बहुत ज्यादा पेनालिटी एवं कड़ी शर्ते लागू होगी यदि मकान मालिक बाद मे मोबाइल टावर को हटाने की पेशकश करता है । इन कंपनियो के पास मकान मालिकों एवं सोसाइटी के विरोध को न्यायिक तरीके से हैंडल करने के लिए बेहतरीन वकीलों और लीगल सलाहकारों की टीम भी होती है।
- उल्लेखित बिन्दुओं से स्पष्ट है कि मोबाइल फोन से हमारे स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है, जिनका औसतन उपयोग हम सब कम से कम लगभग 1 से 2 घंटे (औसतन प्रति दिन कुल उपयोग अवधि) रोज कर रहे है। इन वायरलेस रेडिएशन का दुष्प्रभाव, व्यक्ति के शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करता है। परंतु दूसरी तरफ वर्तमान की सच्चाई यह भी है कि, हम सब को मोबाइल नेटवर्क कवरेज एवं सिगनल स्ट्रेंथ भी बहुत अच्छी चाहिए ताकि अच्छी इंटरनेट स्पीड मिल सके। इससे मैं स्वयं भी अछूता नहीं हूँ।मोबाइल फोन से भी अधिक हानिकारक है आवासीय क्षेत्र मे घरों की छतों पर लगे हुये मोबाइल टावर , जिससे 24x7 लगातार रेडियो फ्रिक्वेन्सी तरंगे रेडिएट होती रहती हैं, इन रेडिएशन के दूरगामी दुष्प्रभाव, टावर वाले घर के व्यक्तियों एवं आसपास रहने वाले (500 मीटर के दायरे मे) लोगों में खतरनाक बीमारियों के रूप मे सामने आ रहे है। जिसके साक्षी हम सब है । इसी साल अक्षय कुमार की एक फिल्म 2.0 भी आयी है जो कि पक्षी राजन (सलीम आली) के ऊपर बनाई गई है जिसमे मोबाइल टावर्स के पक्षियों पर दुष्प्रभावों को स्पष्टता से बताया गया है ।
- हालांकि मोबाइल टावर सिग्नल रेडिएशन की सीमा, भारत में, सरकार एवं नियंत्रण प्राधिकरण के द्वारा, बाकी देशों से दस गुणा कम एवं नियंत्रित है। फिर भी मेरे विचार में, नागरिकों के स्वास्थ्य से समझौता करके, मोबाइल टावरों को आवासीय क्षेत्रों मे घरों की छतों पर बिलकुल भी नहीं लगाना चाहिए क्योकि यह अनैतिक एवं आसमाजिक है ।
- अंततः ये हम सब नागरिकों की सामाजिक ज़िम्मेदारी है कि वह मोबाइल टावर्स के दूरगामी परिणामो को समझे एवं जागरूक बने और अपने या अपने आसपास के घरों पर मोबाइल टावर्स लगाने पर सहमति न दें एवं टेलीकॉम कंपनियों के आकर्षक ऑफर से बचे ।

राम और रामोजी फिल्मसिटी

रामराज रेड्डी, एनआरएससी, हैदराबाद

राम और रामोजी फिल्मसिटी मेरे फेसबुक खाते में एक अलबम का नाम है (इस अलबम को www.facebook.com/ramrajsuryavanshi लिंक पर देखा जा सकता है) जो करीब आठ साल पहले मैंने बनाया था। मुझे फेसबुक की एक बात बहुत अच्छी लगती हैं, यहां लोग एक -दूसरे के उम्र, जाति या हैसियत से नहीं बल्कि उनके विचारों से जुड़ते है। फेसबुक हर साल ठीक उसी समय पर आप से आपकी स्मृतियां साझा करता है। इसी क्रम में फेसबुक ने मुझे मेरे रामोजीफिल्म सिटी में बिताए हर पल को "8 इयर्स एगो सी योर मेमोरीज" के रूप में याद दिलाया और मैं आज-कल हर दिन उन्हें फेसबुक में दोबारा साझा करता रहता हूं साथ ही उनका एक स्क्रीन शॉट लेकर व्हाट्सएप स्टेटस में भी पोस्ट करके अपनी स्मृतियों में खो जाता हूँ। उन दिनों मैं फेसबुक पर हर दिन एक तस्वीर डालता था शायद रामोजी फिल्मसिटी का कोई कोना नहीं होगा जहां मैंने तस्वीर न खिंचवायी होगी। वैसे भी आज कल तालाबंदी के दौरान न कहीं जा पाते हैं न ही कोई तस्वीर खिंचवाने का मन करता है। पुरानी फोटों को शेयर कर अपनी स्मतियों में खो जाने का अपना ही आनंद है। फेसबुक पोस्ट ने ही आज मुझे इस लेख को लिखने के लिए प्रेरित किया है। इसलिए इसका शीर्षक भी मैंने फेसबुक अलबम के नाम "राम और रामोजी फिल्मसिटी" पर ही रखा। जब मैं आठवी कक्षा में पढ़ता था तब रामोजी फिल्म सिटी के बारे में काफी सुना था जिंदगी में एक बार इस फिल्म सिटी का दर्शन करना एक शौक सा बन गया था। दिनों दिन इसकी ख्याति और भी बढ़ती गई। इसके बाद पता चला कि रामोजी फिल्मसिटी दुनिया के सबसे बडे फिल्म स्टूडियो परिसर के नाम से गिनीसबुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शुमार हो गया है। इसके बारे में जहां भी कोई लेख देखता तो पढ़ता था। उम्र जितनी बढ़ती गई फिल्मसिटी जाने का शौक भी बढ़ता गया पर जाने के लिए अनुमति और पैसे कौन देंगे। यह प्रश्न दिमाग में घूमता रहता था। उस समय ऐसे शौक को पूरा करने के लिए मिडिल क्लास के पैरेंट्स कभी सपोर्ट नहीं करेंगे इतना तो मालूम था। सोचता था कभी नौकरी करूंगा तो एक दिन पूरे परिवार को लेकर फिल्मसिटी जाऊंगा।

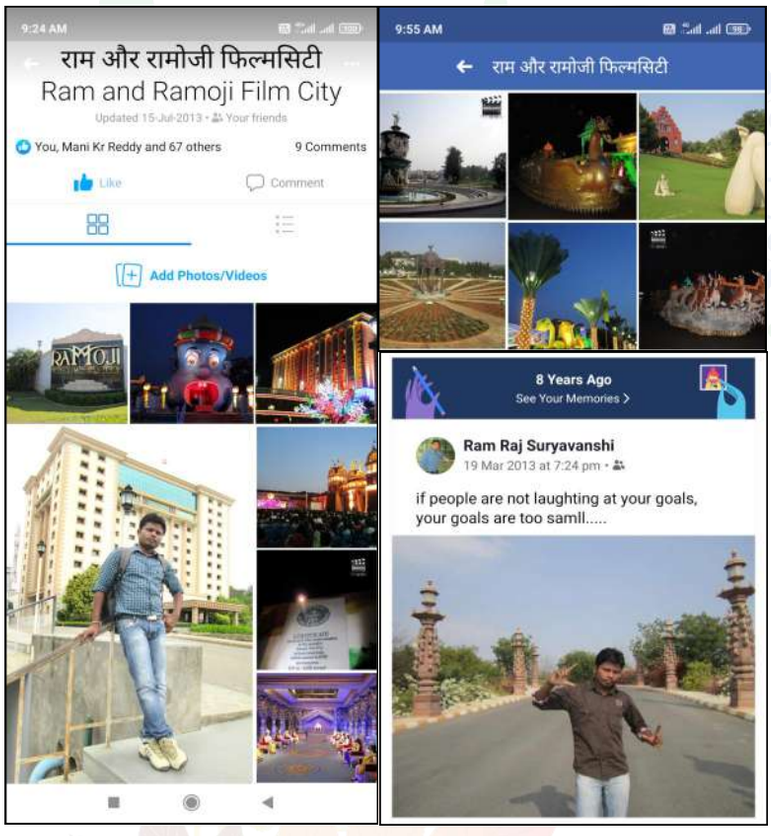

राम और रामोजी फिल्मसिटी फेसबुक अलबम एवं 8 ईयर्स एगो सी योर मेमोरीज का स्क्रीन शॉट

जब मैं स्नातक के अंतिम वर्ष में था, एक बार रेलवे में रिक्ति के बारे में आवेदन पत्र देखा। उन दिनों केंद्र सरकार की कोई भी रिक्ति हो, हर स्टेशनरी की दुकान में आवेदन प्रपत्र दूर से ही टंगे हुए दिखाई देते थे। आवेदन पत्र पढ़ने के बाद पता चला कि हम परीक्षा केंद्र अपनी मर्जी से चुन सकते हैं तो मैंने जानबूझ कर परीक्षा केंद्र सिकंदराबाद चुना ताकि परीक्षा के बहाने हैदराबाद जा सकूं और फिल्मसिटी घूमने का अवसर मिले। फिर कुछ दिनों बाद प्रवेश पत्र मिला और अपने मित्र त्रिलोचन के साथ हैदराबाद जाकर परीक्षा लिखने के बारे में पिताजी को बताया। मेरा मित्र त्रिलोचन यात्रा करने का काफी शौकीन था तो उसने भी परीक्षा प्रपत्र भर दिया और मेरे साथ जाने को तैयार हो गया। हम परीक्षा देने के लिए जा रहे थे तो हमारे पास दो ही दिन थे। सोचा एक दिन परीक्षा, दूसरे दिन रामोजी फिल्मसिटी का दर्शन और फिर घर वापसी। एक दिन तो परीक्षा में निकल गया। वैसे परीक्षा तो बस बहाना था परंतु परीक्षा देना जरूरी था क्योंकि आया तो परीक्षा के नाम पर ही था। अगले दिन रामोजी फिल्मसिटी जाने के बारे में लॉज

वाले से बात-चीत की तो पता चला कि वहां जाने के लिए रु.200/- टिकट लगता है और उसे देखने के लिए पूरा दिन चाहिए और हमें सुबह 8 बजे ही लॉज से निकल जाना होगा क्योंकि 10 बजे तक ही टिकट मिलता है। मेरे दोस्त को केवल रामोजी फिल्मसिटी देखने के लिए रु.200 देना मंजूर नहीं था मगर यह बात उसने खुल कर नहीं बताई, हालांकि मैं समझ गया उसने बहाने मारते हुए कहा हमारे पास एक ही दिन है और सिर्फ रामोजी फिल्मसिटी देख कर घर वापस जाने में मजा नहीं आयोगा बल्कि उतने समय में हमें पूरा हैदराबाद घूम सकते हैं। वास्तव में वित्तीय दृष्टि से देखा जाए तो रामोजी फिल्म सिटी की तुलना में पूरा हैदराबाद घूमना हमारे लिए सस्ता था। उस समय मात्र 22 रूपये मं आरटीसी दैनिक पास मिलता था यानी हम 22 रुपये में पूरा हैदराबाद घूम सकते थे हम जब विद्यार्थी जीवन में थे तो रु.200 भी हमारे लिए ज्यादा रकम ही हुआ करती थी। मैंने मन ही मन सोचा इसका टिकट मैं ही दे देता हूं तो शायद वो मान जाए और मेरा शौक भी पूरा हो जाएगा। वैसे मेरा मित्र त्रिलोचन बहुत ही खुद्दार है वो आज नहीं तो कल पैसे मुझे वापस कर ही देगा ये बात मुझे अच्छी तरह मालूम थी परंतु शायद प्रकृति को ये मंजूर नहीं था। अगले दिन सुबह से ही बहुत तेज बारिश होने लगी ये बारिश लगातार 12 बजे तक होती रही। हम लॉज में बंधे रह गए, न उसका हैदराबाद घूमने का शौक पूरा हुआ और न मेरा फिल्मसिटी जाने का। फिल्मसिटी न जा पाने का बहुत दुःख था। 12 बजे के बाद बारिश थोड़ी कम हुई, मगर पूरी तरह कम तो नहीं हुई परंतु छाता लेकर घूमने जा सकते थे। हमने लंच करने के बाद 2 छाते खरीद लिए और रु 22 का बस पास लेकर घूमने के लिए निकल पड़े। दैनिक बस पास हमारे लिए एक नया अनुभव था क्योंकि दुर्गापूर जैसे छोटे शहर में दैनिक बस पास नहीं हुआ करता था। हमें जहां जाना है, जितनी बार जाना है हर बार टिकट खरीदना पड़ता था। हमारे लिए ये बस पास अलाद्दीन का

हुसैन सागर

चारमिनार

चिराग जैसा ही था क्योंकि एक टिकट और जितना मन करे उतनी बसें बदलो। जहाँ मन करें वहां जाओ। हम बिन पूछे किसी भी बस में चढ़ जाते थे और कंडक्टर से पूछते थे ये बस चारमिनार, गोलकोंडा, हुसैन सागर या कोई भी पर्यटन स्थल जायेगी। फिर जैसे कंडक्टर निर्देश देते हम निकल पड़ते। ऐसे ही करते –करते हम रात 11.30 बजे तक घूमते रहे और घूमते –घूमते चारमीनार, गोलकोंडा किला, हुसैन सागर, सालार जंग म्यूजियम,बिरला मंदिर और फिल्म अभिनेता मेगास्टार चिरंजीवी का घर और उनका ब्लड बैंक आदि देख कर लॉज के लिए निकल पड़े। अगले दिन दुर्गापूर के लिए निकलना था एक तरफ भीगते- भीगते ही सही पूरा हैदराबाद घूमने की खुशी थी और दूसरी तरफ फिल्मसिटी नहीं घूम पाने का ग़म।

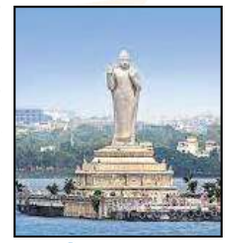

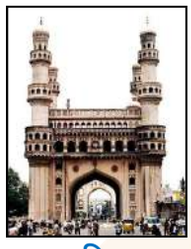

हैदराबाद घूमने के दौरान हैदराबाद टूरिज्म से संबंधित हमने कुछ किताबें खरीदी थी उनमें रामोजी फिल्मसिटी का वर्णन पढ़ कर मेरी फिल्मसिटी जाने की इच्छा और तीव्र होती गई। फिर धीरे –धीरे दिन बीतते गए ,मेरी स्नातक परीक्षा खत्म हो गई, परीक्षा परिणाम भी आ गए थे आगे पीजी करनी है या नौकरी ये सारी बाते चल रही थीं फिर एक दिन अपने दोस्तों के साथ "ओम शांति ओम" फिल्म देखने गए उस दिन हमने पहली बार एक दिन में लगातार 2 फिल्में देखीं। दुर्गापूर सिनेमा में 12 बजे से 3 बजे "सांवरिया" और 3 बजे से 6 बजे "ओम शांति ओम"। सांवरिया देख हम सबका मूड़ खराब हो गया था घर वापस जाने का मन कर रहा था परंतु दोनों फिल्मों के टिकट

एडवांस बुकिंग में लिए थे, तो पैसे भी वसूल करने थे। "सांवरिया" के बाद फिर उसी सिनेमा घर में "ओम शांति ओम" देखने लग गए। फिल्म की कॉमेडी ने हमारा मूड़ ठीक कर दिया। फिल्म का एक डायलॉग -"कहते है अगर किसी चीज को दिल से चाहो तो पूरी कायनात उसे तुमसे मिलाने की कोशिश में लग जाती है"। इसने मुझे बहुत प्रभावित किया बल्कि वह मेरा मन पसंद डायलॉग बन गया। फिल्म देखने के बाद घर लौटते –लौटते शाम 7 बज गए। सारा परिवार दिवाली मनाने के लिए पूरा दिन मेरा इंतजार करता रहा हलांकि 7 बजे कोई ज्यादा देर नहीं थी परंतु सुबह भी घर से करीब 10 बजे ही निकल गया था तो थोडी बहुत बाते सुननी भी पड़ी थी । फिर परिवार के साथ दिवाली मनाई।

उन दिनों मैं ऑल इंडिया एपोइंटमेंट गजट नाम का एक साप्ताहिक अखबार लेता था। यह अखबार बहुत सस्ता हुआ करता था पूरे महीने के 5 रुपये ही लगते थे। इतने रुपये में अखबार वाला घर पर दे जाता था। रोजगार समाचार पत्र की एक प्रति 5 रुपया हुआ करता था परंतु इसका महीने का पांच रुपया अत: एक बेरोजगार इसे ही लेना उचित समझेगा। वास्तव में रोजगार समाचार में पृष्ठ भी काफी होते थे इसमें बहुत कम, यह भी एक कारण था । दिवाली के अगले दिन कुछ रोजगार की तलाश में ये अखबार निकाला तो एक विज्ञापन देखा जिसमें ईटीवी में एम.ए. (जन-संचार) के अभर्थियों के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए थे। उस विज्ञापन की सबसे आकर्षक बात यह थी कि

ईटीवी का कार्यालय रामोजी फिल्मसिटी में है और साक्षात्कार एवं परीक्षा के लिए रामोजी फिल्मसिटी जाना है, इसके साथ ही परीक्षा देने एवं साक्षात्कार के लिए चयनित अभ्यर्थियों के लिए आने-जाने और रहने की व्यवस्था खुद ईटीवी ही करेगा। बस फिर क्या मैंने सोच लिया जन-संचार की पढ़ाई कर लेते हैं तो कम से कम परीक्षा देने के बहाने फिल्मसिटी घूम सकेंगे वो भी रामोजी राव जी के पैसों से। सोचा यह विज्ञापन आज आया है तो 2 वर्ष बाद भी आ सकता है। फिर अपने विश्वविद्यालय में मैंने और मित्र त्रिलोचन जन-संचार की सीट के लिए प्रवेश परीक्षा दी और मैंने प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण भी कर ली परंतु मौखिक परीक्षा में उपस्थित नहीं हो सका तो मौका हाथ से छूट गया बहुत मायूस हुआ फिर सोचा ये नहीं तो कोई और विश्वविद्यालय फिर क्या मैंने 2 वर्षों में जन-संचार में स्नातकोत्तर सफलता पूर्वक पूरा कर लिया और फिर उस विज्ञापन का इंतजार करता रहा फिर कुछ महीनों में ही ईटीवी में अनुसंधानकर्ता का विज्ञापन निकला और मैंने खुश होकर उसमें आवेदन कर दिया और प्रतियोगिता दर्पण के एक वर्ष की सारे पत्रिकाओं पर एक नज़र घुमा ली। वास्तव में मैंने जन-संचार में स्नातकोत्तर तो कर लिया परंतु मैं सामाचार पत्र पढ़ने में बहुत ज्यादा रुचि नहीं रखता था इसलिए प्रतियोगिता दर्पण पढ़ लिया इसमें लगभग सारे मुख्य समाचार कवर हो जाते हैं जो परीक्षा एवं साक्षात्कार के लिए काफी है। फिर कुछ ही दिनों में आने-जाने के किराये तथा रहने की व्यवस्था के साथ रामोजी फिल्मसिटी से बुलावा आ गया और मैं हैदराबद पहुंच गया। फिल्मसिटी के लिए बस से रवाना हुआ तो मुझे खिड़की के पास वाली ही सीट मिल गई और मैं खिड़की से बाहर के दृश्यों को देख-देख कर फिल्मसिटी आने का इंतजार कर रहा था कुछ देर चलने के बाद दूर से ही फिल्म सिटी का साइन बोर्ड दिखाई दिया और मेरे दिल की धड़कने बढ़ने लगी । एक अज़ीब सा अहसास और आखिर फिल्मसिटी पहुंच गया। सुरक्षा जांच के बाद कॉल लैटर दिखा कर फिल्मसिटी के अंदर चला गया वहां देखा कि पूरे भारत से काफी लोग आये थे। हमारी परीक्षा ईनाडू जर्नलिज्म स्कूल में हुई थी। पता चला कि लिखित परीक्षा के लिए करीब 300 लोगों का चयन किया गया था। मैंने लिखित परीक्षा देने के बाद ही परीक्षा के परिणाम की चिंता किए बिना ही कुछ अभ्यर्थियों के साथ फिल्मसिटी का लुफ्त उठाने निकल गया। उस दिन लगा मेरे जन संचार की डिग्री ने मेरा सपना पूरा कर दिया। फिल्मसिटी का नज़ारा देख बहुत खुश हुआ। कई-कई फिल्म शूटिंग हो रही थी डर से नज़दीक तो नहीं गया पर दूर से ही आनंद लिया। 2-3 घंटे घूमने के बाद फिर परीक्षा परिणाम के लिए वापस ईटीवी कार्यालय पहुंचा, तो पता चला कि पूरे भारत से करीब 50 लोगों का चयन हुआ है जिसमें मेरा नाम भी शामिल था। उस समय ईटीवी, भारत के लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध था तो पूरे भारत से ही लोग आये थे। मैं बहुत खुश हुआ क्योंकि साक्षात्कार के लिए और एक दिन यहां रहने का मौका मिल गया। साक्षात्कार देकर मैं काफी विश्वस्त महसूस कर रहा था। हलांकि ये मेरी जिंदगी का पहला साक्षात्कार था। साक्षात्कार के बाद मैं फिर से दुर्गापूर वापस आ गया। साक्षात्कार के परिणाम के लिए हर दिन ई-मेल चेक करता रहता था क्योंकि मेरे अनुसार साक्षात्कार बहुत ही अच्छा रहा । मैं वहां मिले कुछ दोस्तों को फोन भी करके जानकारी लेता था, पता चला सब मेरे जैसे ही इंतजार कर रहे है। परीक्षा के परिणाम जो भी होते मुझे कोई फर्क नहीं पडता। मैं बस इस बात से खुश था कि मैंने जिस मकसद से जन-संचार की पढ़ाई की वो मकसद पूरा हो गया। मैं छोटी-छोटी बातों से भी बहुत खुश हो जाता हूं।

रामोजी फिल्मसिटी साइनबोर्ड

ईनाडू जर्नलिजिम स्कूल

फिर वो दिन आ गया जिसके बारे में, मैंने सोचना बंद कर दिया था। मुझे ईटीवी से ई-मेल मिला कि अनुसंधान कर्ता के लिए मुझे चुन लिया गया है, मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। ओम शांति ओम के डायलॉग पर यकीन होने लग गया। हालांकि जन-संचार की पढ़ाई के दौरान मुझे पता चला कि ओम शांति ओम का ये डायलॉग पाओलो कोएलो (Paulo Coelho) के कोटेशन से प्रेरित है वह कुछ इस प्रकार है- " when you want something, all the universe conspires in helping you to achieve it" इसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है " जब आप कुछ चाहते हैं तो पूरा ब्रह्माण्ड उसे हासिल करने के लिए आपकी मदद की साजिश करता है" परंतु किसी से भी पूछा जाए तो एक झटके में कह देंगे कि ये डायलाग शाह रुख खान का है। समाज में सिनेमा का प्रभाव ही कुछ

ईटीवी आईडी कार्ड एवं विजिटिंग कार्ड

ऐसा है। मैं भी उनसे अलग नहीं हूं। रामोजी फिल्मसिटी को जिंदगी में बस एक बार देख लेना ही मेरा सपना था परंतु यहां तो उम्मीद से दोगुना मिल गया। हमारा कार्यालय इतना भव्य और सुंदर था मानो अमेरिका का व्हाइट हाउस। उस भवन के सामने न जाने कितनी बार फोटो खिंचवा के फेसबुक पर डाली होंगी। बाद में हमारे सामने ही यहां क्रिश 3 फिल्म की शूटिंग भी हुई, क्रिश 3 के कई दृश्य रामोजीफिल्म सिटी में ही फिल्माए गए थे। करीब 2 महीनों तक हृतिक रौशन रामोजी फिल्मसिटी में ही रहे थे। इसके अलावा हमारे कार्यालय को हम कई सारे फिल्मों में कभी होटल के रूप में तो कभी कार्यालय के रूप में देख सकते है। इस भवन के सबसे ऊपरी मंजिल पर हमारे अध्यक्ष रामोजी राव सर का कार्यालय और हमारा प्रथम तल पर। करीब दस दिन तक हमारे लिए रामोजी फिल्मसिटी के होटल में ही रहने-खाने की व्यवस्था की गई थी। मैं 8 घंटे ड्यूटी के अलावा पूरा समय फिल्मसिटी घूम कर ही मजा लेता था। 2 हजार एकड़ जमीन पर बिछी फिल्मसिटी पूरा घूमना संभव नहीं था परंतु मैंने अपने पूरे कार्यकाल के दौरान पूरा कर लिया। मैं फिल्मसिटी घूम कर कभी थकता नहीं था। 10 दिन बाद मैं कुछ दोस्तों के साथ मिलकर किराए के मकान में वनस्थलीपुरम में रहने लगा। किराए के मकान का भी अपना ही मजा है। अपनी इच्छा के अनुसार जहां मन चाहे वहां रह सकते हैं। मैंने वनस्थलीपुरम में ऐसी जगह मकान लिया जहां से दो सिनेमा घर (सुष्मा थियेटर और संपूर्णा थियेटर) मात्र 300 मीटर की दूरी पर थे और दो सिनेमा घर 2 कि.मी. की दूरी पर (विष्णु थियेटर और विजयलक्ष्मी थियेटर) यानि मेरे घर के आस-पास चार सिनेमाघर थे। वास्तव में मैं दुर्गापूर में तेलगु फिल्म को बहुत मिस करता था अतः इस कमी को पूरा करना चाहता था। मेरी ये आदत बन गई थी कि इन चारों सिनेमाघरों में कोई भी फिल्म आए, मैं जरूर देखता था।मेरा फिल्मों के प्रति इतना लगाव था कि मेरी मन पसंद फिल्म अर्या-1 , अर्या 2 के बाद आर्या-3 जब नहीं बनी तब खुद ही उसका पोस्टर डिज़ाइन कर उसे फेसबुक में डाल डाला दिया था।

रामोजीग्रुप कोर्पोरेट कार्यालय

मुझे ईटीवी में भी कुछ मज़ेदार काम ही दिया गया था कॉपी एडिटर की मांग के अनुसार हम अनुसंधान करके न्यूजरील, डॉक्यूमेंट्री या बुलेटिन के लिए संबंधित विजुवल्स संपादन कर उन्हे उपलब्ध करते थे। अपनी सुविधा के लिए उस वीडियो डाटाबेस को भी हम ही बनाते थे। ईटीवी में किया गया काम मुझे कभी काम ही नहीं लगा। हमारा कार्यालय का समय 24X7 था तो मेरी "ए", "बी" और "सी" शिफ्ट हुआ करती थी। ई टीवी में पिक-अप और ड्राप की सुविधा थी और खाने के लिए सस्ता कैंटीन भी जहां मात्र 8 रुपये में अनलिमिटेड जबरदस्त स्वादिष्ट शानदार भोजन मिलता था। इसके साथ ही पूरी फैमली को फिल्मसिटी घुमाने का मौका भी मिलता था। पूरी फैमली को फिल्मसिटी घुमाने का मेरा सपना भी पूरा हो गया। फिल्मसिटी घूम कर मेरे घरवाले काफी खुश थे। मेरी ड्यूटी 8 घंटे की ही हुआ करती थी परंतु मैं फिल्मसिटी में 12-15 घंटे बिताता था। वास्तव में रामोजी फिल्मसिटी में आठ रुपये में 8-9 आइटम के साथ मजेदार भोजन और पांच रुपये में नाश्ता मिल जाता था तो जो खुद से पकाकर खाने से कई गुणा सस्ता पडता था तो मैं खुद खाना पकाकर कभी समय बर्बाद नहीं करता था मैं अधिकतर समय फिल्मसिटी में बिताता था। अगर मेरी "ए" शिफ्ट हो तो मेरी ड्यूटी 6-2 तक ही होती थी परंतु मैं ड्यूटी के बाद 2 बजे घर जाने के बजाय फिल्मसिटी में ही लंच और डिनर करके रात को 10 बजे घर जाता था। अगर मेरी "बी" शिफ्ट रहती तो मैं सुबह 10 बजे ही फिल्मसिटी में हाजिर हो जाता था 10 बजे सी 2 बजे तक शूटिंग देखता फिर लंच करके "बी" शिफ्ट करता था "सी" यानि नाइट शिफ्ट में मैं 2 बजे ही फिल्मसिटी पहुंच जाता था समय से पहले आकर मैं

सपरिवार फिल्मसिटी दौरा

रामोजी कैंटीन, एयरपोर्ट, फ्लाइट तथा गॉडलेस टेंपल परिसर में ली गई कुछ तस्वीर।

फिल्मसिटी में इधर-उधर शूटिंग देखने निकल जाता था। हमारे कार्यालय के सबसे नज़दीक की शूटिंग स्पॉट एयर पोर्ट है जो बस 100 मीटर की ही दूरी पर स्थित है। इस एयरपोर्ट की खास बात यह हैं कि इसके सामने का भाग एयरपोर्ट है तो पीछे वाला भाग अस्पताल और यह एयरपोर्ट कभी अंतरराष्ट्रीय बन जाता है तो कभी डोमेस्टिक। यहां फ्लाइट भी है जिसमें हम कई बार चढ़ कर मजे लेते थे। इस फ्लाइट के अंदर कई फिल्मों के फ्लाइन के अंदर के शीन फिल्माये जाते थे। यहां शाहरुख खान की फिल्म राव.वन और प्रभास की रेबल की शूटिंग देखने के लिए हम कई बार जाते थे। हमारा चार-पांच लोगों का एक गैंग बन गया था हम मौका मिलते ही शूटिंग देखने निकल जाते था। एयरपोर्ट के थोड़ी ही दूर पर गॉडलेस टेंपल है। इसे बिन भगवान का मंदिर कहा जाता है क्योंकि यहां आमतौर पर कोई भगवान की मूर्ति नहीं रखी जाती थी परंतु शूटिंग के दौरान निदेशक के अनुसार यहां भागवान रखे जाते है फिर शूटिंग के बाद निदेशक अपने भगवान साथ लेकर चले जाते है। यह मंदिर कभी शिव मंदिर तो कभी गणेश या कभी राम मंदिर आदि का रूप ले लेता है। इस मंदिर को "चेन्नई एक्सप्रेस" में रामेश्वरम के मंदिर के रूप में दिखाया गया है। इसी जगह शाहरूख खान दीपिका पादुकोण को गोद में उठाते हुए कई सीढ़ियां चढ़ते है। इसके अलावा इस मंदिर को कई हिंदी, तेलगु,तमिल,उड़िया,बांग्ला और भोजपुरी फिल्मों में देखा जा सकता है। फिल्मसिटी में मंदिर के अलावा मस्जिद (ईद के दिन का विश यहीं तस्वीर खींच के फेसबुक पर डालते थे), रेलवे स्टेशन, चेन्नई एक्सप्रेस में दिखाया गया पूरा गांव है। इस गांव में कई फिल्में हमारे ही सामने बनी हैं। सूर्यवंशम में अमिताभ बच्चन साहब का घर और चंद्रमुखी फिल्म का महल, कृष्णा कोटेज का कॉलेज भी हमारे कार्यालय के करीब 300 मीटर की ही दूरी पर था। सूर्यवंशम और चंद्रमुखी की शूटिंग तो हमने नहीं देखी परंतु इस महल को कई फिल्मों में कोर्ट और अन्य भवन के रूप में दिखाते हुए कई शूटिंग देखी। इसके अलावा क्रिश-3 फिल्म का सिंगापुर और मुंबई का एक मार्केट का निर्माण यहीं किया गया था। क्रिश 3 फिल्म का मुंबई मार्केट हमारे कार्यालय से काफी दूरी पर बनाया गया था। जिसे करीब एक महीने बाद नष्ट भी कर दिया गया। रामोजी फिल्मसिटी में काफी फिल्मों के सेट बनाये जाते है और शूटिंग के बाद नष्ट भी कर दिए जाते है। परंतु बाहुबली फिल्म के लिए बना माहिष्मती साम्राज्य का सेट आज भी यहां स्थित है। बाहुबली की शूटिंग मेरे फिल्मसिटी में रहने के दौरान ही हुई परंतु कभी माहिष्मती साम्राज्य देख नहीं पाया क्योंकि राजमौली फिल्म के हीरो सहित सभी क्रू में बर्स को आई डी कार्ड देते थे और खुद भी पहनते थे बिना आई डी कार्ड के कोई भी सदस्य शूटिंग परिसर में नहीं जा सकते थे। मगर आज यह स्थल सभी के लए खुला है। यह स्थल पर्यटकों के बीच काफी लोक प्रिय है। फिल्म शूटिंग के दौरान फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है इसलिए इतने सारे फिल्म शूटिंग देखने के बावजूद भी हम कभी तस्वीर नहीं ले पाएं, प्रभास की फिल्म रेबल के दौरान तस्वीर लेने की कोशिश की तो फोन छीनने तक की नौबत आ गई थी फिर फिल्म के निदेशक लारेंस ने कहा फोन दे दो और उसे कहो कि दोबारा कभी तस्वीर न खींचे।

रामोजी फिल्म सिटी घूमने के लिए हर साल 10 लाख से अधिक पर्यटक आते है। 2 हजार एकड़ का स्थल किसी के लिए भी पैदल घूमना संभव नहीं है अतः प्रवेश टिकट के साथ लाल रंग की खूबसूरत विंटेज बस और निःशुल्क गाइड उपलब्ध होते है जो हमें पूरे फिल्मसिटी का दर्शन कराते है। सैर के दौरान मुगल गार्डन, लेग गार्डेन (जाहं डर्टी पिचर का ऊलाला ऊलाला गाना फिल्माया गया है, आज-कल लोग इसे ऊलालाला गार्डेन भी कहते है) जापानी गार्डेन, बोनसाई, कृपालू गुफा, कई सारे वाटर फाउंटेन देख सकते है साथ ही घूमने के दौरान कई सारे फिल्मों की शूटिंग भी देख सकते है। कई जगह बस रोकी भी जाती है ताकि पर्यटक फोटोग्राफी आदि का आनंद ले सके। फिल्मसिटी में पक्षियों के पार्क भी है जहां हम विदेशी पक्षियों की कई प्रजातियां देख सकते है। बस में घूमते-घूमते हम बिना पासपोर्ट के लंदन की सड़को पर पहुंच जाते है। लंदन की प्रिंस स्ट्रीट का सेट यहां स्थित है यहां कई फिल्मों के गाने शूट होते है। आल द बेस्ट, गोलमाल कई फिल्मों में इसे देख

विंटेज बस

प्रिंस स्ट्रीट

फिल्मसिटी में स्थित पांच सितारा होटल

यूरेका परिसर में ली गई कुछ तस्वीर

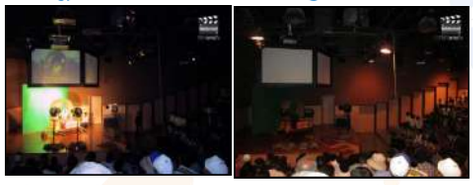

ग्रीन स्क्रीन एफेक्ट एवं फिल्म प्रदर्शन हॉल

सकते हैं। बादशाह फिल्म में दिखाया गया शाहरूख खान का डिटेक्टिव ऑफिस भी यहीं पर स्थित है। विंटेज बस में घूमते समय कई जगहों को देख कर फिल्मों के दृश्य याद आते रहेंगे और याद नहीं भी आये तो बस में बैठे गाइड आपको याद दिला देंगे। कई भारतीय फिल्मों में दिखाया गया सेंट्रल जेल इसी फिल्म सिटी का है जिसे 'तेरे नाम' में पागलखाना के रूप में दिखाया गया है। सेंट्रल जेल के पास ही रेलवे स्टेशन है इसकी खास बात यह हैं कि इसके एक तरफ हमें शहर का रेलवे स्टेशन दिखेगा तो दूसरी तरफ गांव। चैन्नई एक्सप्रेस में इसके सामने का दृश्य दिखाया गया है तो दिलवाले दुल्हानिया ले जाएंगे में पीछे का हिस्सा। इसमें स्थित रेल की खास बात यह है कि इसमें टायर लगे रहते हैं और रेल को ट्रैक्टर से खींचा जाता है। फिल्मों में दिखाते समय हमें इंजन का शॉट और पटरी का शॉट कई ओर से लेकर जोड कर दिखाया जाता है और हम बेवकूफ बन जाते हैं। रामोजी फिल्मसिटी में घूमने के दौरान लोग अपना अधिक समय युरेका परिसर में ही बिताते है। यहां पर खाने-पीने के लिए करीब 30 रेस्टोरेंट भी है, जिसमें सुपर स्टार, दिल से आदि कई सारे शामिल है। इस परिसर में आप तरह -तरह के नृत्य, स्टंट शो, फिल्मी दुनिया आदि देख सकते है। इसके साथ ही यहां ग्रीन स्क्रीन के माध्यम से दिखाया जाता है कि एक फिल्म कैसे शूट होती है, उसमें विभिन्न दृश्यों को कैसे जोड़ते है साथ ही इसमें ध्वनि आदि कैसे तैयार किए जाते है और फिल्मों में जोड़े जाते है। इसकी विशेष बात यह है कि इस प्रक्रिया को समझाने के लिए कलाकारों के रूप में दर्शकों में से ही लोगों को बुलाया जाता है। कुल मिलाकर सारी प्रक्रियाओं का एक फिल्म बनाया जाता है और उसकी स्क्रीनिंग भी होती है। इसमें काम करने वाले पर्यटक कलाकार चाहे तो इसकी प्रति भी प्राप्त कर सकते हैं। स्क्रीन पर देखी गई दुनियो को यहां हम वास्तविक रूप से देख सकते है। फिल्मसिटी ज्वाइन करने के तीन वर्ष बाद मेरा मित्र त्रिलोचन मुझसे मिलने हैदराबाद आया और हम दोनों ने मिलकर फिल्मसिटी का भरपूर आनंद लिया और जी भर कर हैदराबाद का भ्रमण भी किया तथा पुरानी यादों में खो गए। त्रिलोचन भ्रमण प्रेमी है वह जहां भी घूमने की बात करें वहां के लिए निकल पड़ता है। हम दोनो ने भारत के कई पर्यटन स्थोलों का भ्रमण किये जैसे पुरी, कोनार्क, तिरूवनंतपुरम, कोच्चि, कन्याकुमारी,मैसूर, बेंगलुरू,,रामेश्वरम, मदुरै, कोकाता दि। त्रिलोचन के अलावा मेरे कई दोस्त रामोजी फिल्मसिटी घूमने आए उनके साथ मैं भी पर्यटक बन कर फिल्म सिटी का दर्शन करता था। पर्यटक बन कर घूमने का अगल ही मज़ा है।

मेरे मित्र त्रिलोचन के रामोजी फिल्मसिटी दौरे के दौरान साथ में ली गई कुछ तस्वीरें

सब कुछ ठीक ही चल रहा था फिर मेरी शादी हुई। फिल्मसिटी अब मेरे लिए केवल जॉब करने का ही स्थान बन गया। घर में मेरी धर्मपत्नी को अकेले छोड़ कर फिल्मसिटी में घूमने का कोई मतलब अब नहीं रह गया था। इसके साथ ही मेरी ड्यूटी 24X7 थी अतः "ए", "बी" , "सी" शिफ्ट। जब मेरी शादी हुई तब मेरी पत्नी इंटरमिडीयेट में पढ़ती थी यानी उसका बचपना अभी नहीं गया था। उसे आत्माओं में काफी विश्वास था। रात के समय घर में अकेले उसे काफी डर लगता था। अतः मेरी "सी" शिफ्ट ड्यूटी का मतलब मेरी नींद के साथ-साथ उसकी भी नींद भी गायब। हालंकि मेरी शादी के बाद मेरे अनुरोध पर करीब 3 महीने "सी" शिफ्ट नहीं देने का वादा भी किया गया था। वास्तव में फिल्मसिटी में मैं केवल पैसों के लिए जॉब नहीं करता था वहां समय बिताना मुझे अच्छा लगता था इसलिए जब तक वहां था तब

तक कहीं भी इंटरव्यू नहीं दिया। शादी के बाद मुझे 9 बजे से 5 बजे की ड्यूटी वाली नौकरी की आवश्यकता महसूस हुई तो सरकारी नौकरी की ख्वाहिश जागी अतः मैं सरकारी नौकरी की तैयारी में लग गया प्रेरणा के लिए तो मेरे पास पहले से ही ओम शांति ओम का डायलॉग कहे या पाओलो कोएलो की सूक्ति, तो थे ही, इसके साथ ही ई-टीवी में काम करते समय मैंने इसरो की काफी ख्याति सुनी तो इसरो के प्रति मुझे अलग खिंचाव भी पैदा हो रहा था और जब पता चला कि इसकी ख्याति के पीछे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का भी हाथ हैं, तो मैं इनके द्वारा लिखित पुस्तक विंग्स ऑफ फायर (अग्नि की उड़ान) पढ़ी , उसमें एक जगह लिखा हुआ था- "Desire, when it stems from the heart and spirit, when it is pure and intense, possesses awesome electro-magnetic energy. This energy is released into the ether each night, as the mind falls into the sleep state. Each morning it returns to the conscious state reinforced with the cosmic currents" उसका हिंदी अनुवाद कुछ इस प्रकार है – " ख्वाहिश अगर दिलो जान से निकली हो, वो पवित्र हो और उसमें शिद्दत हो तो उसमें कमाल की एक इलेक्ट्रोमेग्नेटिक एनर्जी होती है।

शादी की तस्वीर एवं हाथ में लगा टैटू

निज़ामों के अंदाज़ में कहे तो एक बर्की मकनती सी ताकत होती है। दिमाग जब सोता है तो वो एनर्जी रात की खामोशी में बाहर निकल जाती है और सुबह कायनात, ब्रह्मांड से सितारों की गति रफ्तार को अपने साथ समेट कर दिमाग में वासप लौट आती है।" जिसने मुझे बहुत ही प्रेरित किया और इन पंक्तियों को ही प्रेरणा के रूप में लेकर मैं सरकारी नौकरी की तैयारी करता रहा और मुझे कुछ ही महीनों में सरकारी नौकरी भी मिल गई वैसे स्कूल के दिनों से ही से ही भारत सरकार का अशोक स्तंभ एवं इसरो का प्रतीक चिन्ह (लोगो) मेरे मन पसंद लोगो रहे हैं, जिस प्रकार अशोक स्तभ का प्रतीक चिन्ह पूरे भारत को प्रतिनिधित्व करता है, उसी तर्ज पर मेरे घर - परिवार को प्रतिनिधित्व करने से संबंधित मेरे पिताजी के नाम एवं माता-पिता का चित्र का प्रयोग करके मैंने भी अपना "सूर्यवंशम" प्रतीक चिन्ह का भी डिजाइन किया था इसे त्रिभाषा बनाने की प्रेरणा मुझे इसरो के प्रतीक चिह्न से ही मिली थी। मैंने, इसका स्टांप और लैटर हेड के साथ इसका टैटू भी अपने हाथ में बनवाया था मैंने जब यू ट्यूब चैनल बनाया तो मेरे नाम का भी एक लोगो –"रामराज सूर्यवंशी-क्रियेटिवीटी" बनाया तथा शादी के बाद अपने और पत्नी, बच्चों के नाम का एक्रनिम एवं सभी के चित्रों का प्रयोग करके "रामराज्यम" लोगो का भी डिज़ाइन किया तथा इन तीनों लोगो का मैंने अपने यूट्यूब चैनल में भी प्रयोग किया है। मेरे लिए प्रतीक चिन्ह काफी महत्व रखते हैं। मुझे जब इसरो में भर्ती का मौका मिला तो मुझे मेरे पिछले कार्यालय से कार्यमुक्ति आदेश लाना अनिवार्य था, कार्यमुक्ति आदेश के लिए मुझे पिछले कार्यालय को त्यागपत्र देना था। सरकारी कार्यालयों में नियमित कर्मचारी को कार्यमुक्ति के लिए या तो मुझे 3 माह का नोटिस अवधि देना था या फिर जीएसटी के साथ 3 माह की सैलरी। 3 माह का नोटिस देंगे तो इसरो में भर्ती होने का मौका छूटने का खतरा था और 3 माह की सैलरी का मतलब एक लाख से भी ज्यादा रकम। मेरे पिछले कार्यालय के बहुत अधिकारियों ने समझाया कि सेम पोस्ट के लिए 3 माह की सैलरी देना बेवकूफी होगी क्योंकि मैं वहां जाकर कनिष्ठ हो जाउंगा और यदि यहां रहता हूं तो वरिष्ठ होने के नाते पदोन्नति का भी अवसर मिलेंगे। इसरो प्रतीक चिन्ह के साथ अपना खिंचाव इस प्रकार था कि वहां जाने के लिए अपना पदोन्नति का अवसर को भी खोने के लिए तैयार था। मैंने अपने पिछले संगठन को 3 माह की सैलरी दे दी और इसरो में भर्ती हो गया। आज मेरे दोनों प्रिय प्रतीक चिन्हों को एक साथ अपने आईडी कार्ड पर देख कर लगता है कि वाकई दिलो जान से निकली हुई पवित्र ख्वाहिश को पूरा करने के लिए सारी कायनात हमारी मदद करती हैं।

सूर्यवंशम, रामराज सूर्यवंशी क्रियेटिविटी एवं रामराज्यम लोगो

अकबर की कैद—रक्षक बने हनुमान

मीना सक्सेना, पत्नी, श्री सुभाष सक्सेना, एनआरएससी, हैदराबाद

रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी उत्तर भारत के विदेशी तुर्क मुगल बादशाह अकबर के शासन क्षेत्र में रहते थे। एक बार अकबर को यह पता चला कि तुलसीदास जी ने किसी मृत व्यक्ति को जिंदा कर दिया है। यह सुनकर उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने बीरबल से इस बारे में पूछा। बीरबल ने बताया कि उन्होने रामचरित मानस लिखी या वे एक पहुंचे हुए कवि हैं। यह सुनकर बादशाह ने तुलसीदासजी को अपने सामने हाजिर होने का फरमान भेजा। अकबर के सैनिकों ने तुलसीदास जी के पास जाकर कहा कि बादशाह ने तुम्हें हाजिर होने को कहा है। तुलसीदासजी ने कहा कि मेरे तो एक ही बादशाह है प्रभु श्रीराम। मैं तो भगवान श्रीराम का भक्त हूं मुझे किसी बादशाह या लालकिले से क्या लेना देना। तुलसीदास जी ने वहां जाने से साफ मना कर दिया। जब यह बात बादशाह को पता चली तो उसने तुलसीदास जी को बंदी बनाकर सामने पेश करने को कहा। तुलसीदास जी को जंजीरों में जकड़कर अकबर के सामने पेश किया गया। अकबर ने कहा कि मैं बादशाह हूं और तुम्हें नहीं मालूम कि एक बादशाह के सामने सिर झुकाकर खड़े रहते हैं। यह सुनकर तुलसीदास जी ने कहा कि मेरा सिर तो मेरे प्रभु श्रीराम के सामने ही झुकता है क्योंकि वे ही तीनों जहां के मालिक हैं। यह सुनकर बादशाह अकबर क्रोधित हो गए और उन्होंने कहा कि हम चाहे तो अभी तुम्हारा सिर कलम कर सकते हैं या तुम्हें बंदी बनाकर कारागार में डाल सकते हैं। देखते हैं कि फिर तुम्हारे प्रभु श्रीराम तुम्हें कैसे बचाते हैं, इस पर तुलसीदास जी ने कहा कि मेरे प्रभु श्रीराम को मुझे बचाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह तो बहुत छोटा सा काम है। यह काम तो प्रभु श्रीराम के भक्त हनुमान जी ही कर देंगे। यह सुनकर अकबर और भी क्रोधित हो गए। आगबबूला अकबर ने क्रोध में आकर सिपाहियों से कहा इस दुष्ट को कारागार में डाल दो। यह सुनकर जंजीर में जकड़े तुलसीदास जी को सैनिक जंजीरों से खींचने लगे तभी तुलसीदास जी ने हनुमान जी का स्मरण किया और उनके मुख से हनुमान चालीसा निकलने लगी।

अकबर ने पूछा, ये क्या बोल रहा है। बीरबल ने कहा कि यह हनुमानजी से प्रार्थना कर रहा है। तुलसीदास जी हनुमान चालीसा पढ़ ही रहे थे कि तभी थोड़ी देर में ही वहां पर लाखों बंदरों ने एक साथ हमला बोल दिया। अचानक हुए इस हमले को देख कर सारे सैनिक घबरा गए और इधर उधर भागने लगे। अकबर को भी अपनी जान बचाने के लिए ऊपर गलियारे में भागना पड़ा। अकबर ने बीरबल से पूछा, ये क्या हो रहा है ये अचानक इतने सारे बंदर कहां से आ गए। तब बीरबल ने कहा कि महाराज ये वानर सेना है। तुलसीदास की रक्षा के लिए आई है। अब इन बंदरों का गुस्सा तब तक शांत नहीं होगा जब तक हम तुलसीदास जी से माफी नहीं मांग लेते। हमारा यहां से बचकर भागना मुश्किल है। हुजूर आप करिश्मा देखना चाहते थे तो देखें श्रीराम भक्त हनुमान जी का करिश्मा। यह सुनकर अकबर घबरा गए और तुलसीदासजी से क्षमा मांगने लगे। तुलसीदास जी ने कहा कि मैं क्षमा करने वाला कौन हूं। मैं तो अपने प्रभु का दास हूं। बाद में अकबर ने तुलसीदासजी को सम्मान देते हुए उन्हें लाव लश्कर के साथ मथुरा भिजवा दिया। कहते हैं कि बाद में हनुमानजी ने तुलसीदास जी के सामने प्रकट होकर कहा कि तुमने मेरे प्रति जो स्तुति पढ़ी है, वह अद्भुत है। आज के बाद जो भी यह चालीसा पढ़ेगा, मैं उस रामभक्त की रक्षा के लिए उपस्थित हो जाऊंगा। इस चालीसा को हनुमान चालीसा के नाम से जाना जाएगा। उल्लेखनीय है कि ऐसा भी कहा जाता है कि अकबर ने तुलसीदास जी की प्रशंसा में कुछ ग्रंथ लिखने और चमत्कार दिखाने के लिए कहा था। लेकिन उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया था, इसके बाद अकबर ने उन्हें बंदी बना लिया था। तब तुलसीदास जी ने अकबर के कारागर में ही हनुमान चालीसा लिखी और उसका निरंतर पाठ किया। कहा जाता है कि हनुमान चालीसा के कई बार पाठ के बाद अकबर के महल परिसर और शहर में अचानक बंदरों ने हमला कर दिया और जब अकबर को इस बात का पता चला तो तुलसीदास जी को रिहा करने का आदेश दे दिया।

हिन्दू धर्म के सबसे जाग्रत और सर्वशक्तिशाली देवताओं में एकमात्र हनुमानजी हैं जिनकी कृपा जिस पर बरसरना शुरू होती है उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। दस दिशाओं और चारों युग में उनका प्रताप है। जो कोई

भी व्यक्ति उनसे जुड़ा समझो उसका संकट कटा। प्रतिदिन हनुमान चालीसा पढ़ना चाहिए। मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन व्रत करने से और इसी दिन हनुमान-पाठ, जप, अनुष्ठान आदि प्रारंभ करने से त्वरित फल प्राप्त होता है। हनुमानजी इस कलियुग में सबसे ज्यादा जाग्रत और साक्षात हैं। कलियुग में हनुमानजी की भक्ति ही लोगों को दुख और संकट से बचाने में सक्षम हैं। बहुत से लोग किसी बाबा, गुरु, अन्य देवी-देवता, ज्योतिष और तांत्रिकों के चक्कर में भटकते रहते हैं, क्योंकि वे हनुमानजी की भक्ति-शक्ति को नहीं पहचानते। ऐसे भटके हुए लोगों का राम ही भला करे। हनुमानजी की भक्ति और हनुमान चालीसा पढ़ने से व्यक्ति खुद को इन 10 तरह की बाधाओं से बचा लेता है।

भूत-पिशाच : भूत पिशाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै ॥24॥ अर्थ : जहां महावीर हनुमानजी का नाम सुनाया जाता है, वहां भूत, पिशाच पास भी नहीं फटक सकते। जिसे किसी अनजान शक्ति या भूत पिशाच आदि से डर लगता है वे हनुमानजी का बस नाम ही जपते रहेंगे तो भयमुक्त हो जाएंगे।

शनि और ग्रह बाधा : जिसे लगता है कि उसको शनि या अन्य किसी ग्रह की बाधा है, साढ़े साती, अढ़य्या या राहु की महादशा चल रही है तो घबराने की जरूरत नहीं। जिन पर हनुमानजी की कृपा होती है, उसका शनि और यमराज भी बाल बांका नहीं कर सकते। आप प्रति मंगलवार हनुमान मंदिर जाएं और शराब व मांस के सेवन से दूर रहें। इसके अलावा शनिवार को सुंदरकांड या हनुमान चालीसा पाठ करने से शनि भगवान आपको लाभ देने लगेंगे। शनिवार को हनुमान मंदिर में जाकर हनुमानजी को आटे के दीपक लगाएं।

रोग और शोकः "नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा" अर्थात बीर हनुमान जी आपका निरंतर जप करने से सब रोग और पीड़ा मिट जाती है। यदि आपको शरीर में पीड़ा है या आप किसी रोग से ग्रस्त हैं तो आप हनुमान बाहुक का पाठ करें। हनुमान बाहुक गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित स्त्रोत है। जनश्रुति के अनुसार एक बार जब कलियुग के प्रकोप से उनको पीड़ा हुई तो उसके निवारण के लिए तुलसीदास जी ने इस स्त्रोत की रचना की।

कोर्ट कचहरी—जेल बंधन से मुक्तिः हनुमान जी बंदी छोड़ बाबा हैं। उनके अलावा कोई अन्य बंदी छोड़ नहीं है। जो व्यक्ति नित्य सुबह और शाम हनुमान चालीसा पढ़ता रहता है उसे कोई भी व्यक्ति बंधक नहीं बना सकता। उस पर कारागार का संकट कभी नहीं आता। वह मानसिक रूप से भी बंधन से मुक्त हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति को अपने कुकर्मों के कारण कारागार हो गई है तो उसे संकल्प लेकर क्षमा प्रार्थना करना चाहिए और आगे से कभी किसी भी प्रकार के कुकर्म नहीं करने का वचन देते हुए हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें। हनुमान जी की कृपा हुई तो कारागार से ऐसे व्यक्ति मुक्त हो जाते हैं।

मारण सम्मोहन उच्चाटनः बहुत से व्यक्ति अपने कार्य या व्यवहार से लोगों को रूष्ट कर देते हैं, उससे उनके शत्रु बढ़ जाते हैं। कुछ लोगों को स्पष्ट बोलने की आदत होती है जिसके कारण उनके गुप्त शत्रु भी होते हैं। यह भी हो सकता है कि आप सभी तरह से अच्छे हैं फिर भी आपकी तरक्की से लोग जलते हो और आपके विरूद्ध षडयंत्र रचते हो। ऐसे समय में यदि आप सच्चे हैं तो श्रीबजरंग बाण आपको बचाता है और शत्रुओं को दंड देता है। बजरंग बाण से शत्रु को उसके किए की सजा मिल जाती है, लेकिन इसका पाठ एक जगह बैठकर अनुष्ठानपूर्वक 21 दिन तक करना चाहिए और हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलने का संकल्प लेना चाहिए, क्योंकि हनुमान जी सिर्फ सच्चे और पवित्र लोगों का ही साथ देतं हैं। 21 दिन में तुरंत फल मिलता है।

घटना-दुर्घटना से बचनाः घटना—दुर्घटना को राहु-केतु और शनि अंजाम देते हैं। जैसे अचानक आग लग जाना, आपकी गाड़ी का एक्सिडेंट हो जाना या किसी मुसीबत का अचानक आ जाना। हनुमान जी आपको सभी तरह की घटना और दुर्घटना से बचा लेते हैं। इसके लिए आप सदा उनकी शरण में रहकर प्रतिदिन हनुमान चालीसा पढ़ते रहे। कभी सुंदरकांड भी पढ़े और बजरंग बाण भी। इसके अलावा साबर मंत्रों को भी ज्ञान प्राप्त कर लें। हनुमान जी का साबर मंत्र अत्यंत सिद्ध मंत्र है। इसके प्रयोग से हनुमान जी तुरंत ही आपके मन की बात सुन लेते हैं। यह मंत्र आपके जीवन के सभी संकटों और कष्टों को तुरंत ही चमत्कारिक रूप से समाप्त करने की क्षमता रखता है। हनुमान जी के कई शाबर मंत्र हैं तथा अलग-अलग कार्यों के लिए हैं।

मंगल दोषः बहुत से लोग मंगलदोष के भय से ग्रसित हैं। शादी के लिए मंगल को जिन स्थानों पर देखा जाता है वे 1, 4, 7, 8 और 12 भाव हैं। सामान्य तौर पर अर्थ है कि विशेष परिस्थितियों में इन स्थानों पर बैठा मंगल भी अच्छे परिणाम दे सकता है। ऐसा माना जाता है कि 28 वर्ष की उम्र के बाद यह दोष समाप्त होना शुरू हो जाता है। मंगलवार के दिन व्रत रखकर सिंदूर से हनुमान जी की पूजा करने एवं हनुमान चालीसा का पाठ करने से मंगली दोष शांत होता है। इसके अलावा लाल वस्त्र में मसूर दाल, रक्त चंदन, रक्त पुष्प, मिष्टान एवं द्रव्य लपेट कर नदी में प्रवाहित करने से मंगल का अमंगल दूर होता है।

कर्ज से मुक्तिः यदि किसी कारणवश आप कर्ज में डूब गए हैं या कर्ज से परेशान हैं तो हनुमान भक्ति से कर्ज से छुटकारा पा सकते हैं। कर्ज से मुक्त होना आसान नहीं लेकिन कठिन भी नहीं। हनुमान जी की कृपा हुई तो तुरंत ही इससे मुक्त हो जाएंगे। मंगलवार का दिन हनुमान जी का माना जाता है। यह दिन कर्ज से मुक्ति के लिए सबसे उत्तम है। यदि किसी से कर्ज लिया है तो उसे मंगलवार के दिन चुकाने के बारे में सोचे। बुधवार और रविवार को कभी किसी को उधार न दें। मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करके हनुमान मंदिर में नारियल रखना अच्छा माना जाता है। मंगलवार को इन चीजों के प्रयोग व दान का विशेष महत्व है। तांबा, मतान्तर से सोना, केसर, कस्तूरी, गेहूं, लाल चंदन, लाल गुलाब, सिन्दूर, शहद, लाल पुष्प, शेर, मृगछाला, मसूर की दाल, लाल कनेर, लाल मिर्च, लाल पत्थर, लाल मूंगा। आटे के बने दीपक को बड़ के पत्ते पर रखकर जलाएं। ऐसे पांच पत्तों पर पांच दीपक रखे और उसे ले कर हनुमान जी के मंदिर में रख दें। ऐसा कम से कम 11 मंगलवार को करें। शुक्लपक्ष के किसी मंगलवार की रात को हनुमान जी के मंदिर में दो दीप जलाएं और हनुमान चालीसा का 11 बार पाठ करें। पहला देसी घी का छोटा दीप जलाएं। दूसरा 9 बत्तियों वाला एक बड़ा दीप लगाएं जिसमें सरसों का तेल हो और दो लौंग डाली गई हो और जो रात भर जलता रहे। छोटा दीपक आपके दाहिनी ओर रहेगा और बड़ा दीप हनुमान जी के सामने। ऐसा पांच मंगलवार करें।

नौकरी और रोजगारः आप बेरोजगार हैं या आपका व्यापार नहीं चल रहा है तो आप मंदिर में मंगलवार के दिन सुंदरकांड का पाठ करें। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें और प्रति मंगलवार को हनुमान जी के मंदिर जाएं। हो सके तो पांच शनिवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। यदि यह संभव नहीं हो तो पांच बार कभी भी किसी भी शनिवार को चोला चढ़ाएं। आप अपने संस्थान में एक लाल कपड़े में नारियल को नाड़े से बांधकर एक ओर लटका दें। दूसरा यदि आप नौकरी पाना चाहते हैं तो नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाएं तो जेब में लाल रूमाल या कोई लाल कपड़ा रखें। संभव हो तो शर्ट भी लाल पहनें। आप जितना अधिक लाल रंग का प्रयोग कर सकते हैं करें, लेकिन यह याद रखें का लाल रंग भड़कीला न लगे सौम्य लगे।

तनाव या चिंताः बहुत से लोगों को अनावश्यक भय और चिंता सताती रहती है जिसके कारण वे तनाव में रहने लगते हैं। तनाव में रहने की आदत भी हो जाती है जिसके चलते व्यक्ति कई तरह के रोग से भी घिर सकता है। ऐसे व्यक्ति को मन ही मन हनुमान जी के मंत्र ऊं हनुमते नमः या उं हनुमंत नमः का जप करते रहना चाहिए। रात में सोते समय उसे 108 बार इस मंत्र का जप करके सो जाना चाहिए और सुबह उटकर नित्यकर्म से निपटने के बाद एक आसन पर बैठ कर इस मंत्र का जप करना चाहिए। धीरे-धीरे भय, चिंता और आशंका मिटने लगेंगे।

हनुमानजी की भक्ति से चमत्कारिक रूप से संकट खत्म होकर भक्त को शांति और सुख प्राप्त होता है। विद्वान लोग कहते हैं कि जिसने एक बार हनुमानजी की भक्ति का रस चख लिया वह फिर जिंदगी में अपनी बाजी कभी हारता नहीं। जो उसे हार नजर आती है वह अंत में जीत में बदल जाती है। ऐसे भक्त का कोई शत्रु नहीं होता।

आपने हनुमानजी के बहुत से चित्र देखे होंगे। जैसे- पहाड़ उठाए हनुमानजी, उड़ते हुए हनुमानजी, पंचमुखी हनुमानजी, रामभक्ति में रत हनुमानजी, छाती चिरते हुए, रावण की सभा में अपनी पूंछ के आसन पर बैठे हनुमानजी, लंका दहन करते हनुमान, सीता वाटिका में अंगुठी देते हनुमानजी, गदा से राक्षसों को मारते हनुमानजी, विशालरूप दिखाते हुए हनुमानजी, आशीर्वाद देते हनुमानजी, राम और लक्ष्मण को कंधे पर उठाते हुए हनुमानजी, रामायण पढ़ते हनुमानजी, सूर्य को निगलते हुए हनुमानजी, बाल हनुमानजी, समुद्र लांगते हुए हनुमानजी, श्रीराम-हनुमानजी मिलन, सुरसा के मुंह से सूक्ष्म रूप में निकलते हुए हनुमानजी, पत्थर पर श्रीराम नाम लिखते हनुमानजी, लेटे हुए हनुमानजी, खड़े हनुमानजी, शिव पर जल अर्पित करते हनुमानजी, रामायण पढ़ते हुए हनुमानजी, अखाड़े में हनुमानजी शनि को पटकनी देते हुए, ध्यान करते हनुमानजी, श्रीकृष्ण रथ के उपर बैठे हनुमानजी, गदा को कंधे पर रख एक घुटने पर बैठे हनुमानजी, पाताल में मकरध्वज और अहिरावण से लड़ते हनुमानजी, हिमालय पर हनुमानजी, दुर्गा माता के आगे हनुमानजी, तुलसीदासजी को आशीर्वाद देते हनुमानजी, अशोक वाटिका उजाड़ते हुए हनुमानजी, श्रीराम दरबार में नमस्कार मुद्रा में बैठे हनुमानजी आदि। जिस घर में हनुमानजी का चित्र होता है वहां मंगल, शनि, पितृ और भूतादि का दोष नहीं

रहता। हनुमानजी के भक्त हैं तो घर में हनुमानजी के चित्र कहां और किस प्रकार के लगाएं यह जानना जरूरी है। आओ आज हम आपको बताते हैं श्रीहनुमानजी के चित्र लगाने के कुछ नियम...

किस दिशा में लगाएं हनुमानजी का चित्र : वास्तु के अनुसार हनुमानजी का चित्र हमेशा दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए लगाना चाहिए। यह चित्र बैठी मुद्रा में लाल रंग का होना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर मुख करके हनुमानजी का चित्र इसलिए अधिक शुभ है क्योंकि हनुमानजी ने अपना प्रभाव सर्वाधिक इसी दिशा में दिखाया है। हनुमानजी का चित्र लगाने पर दक्षिण दिशा से आने वाली हर बुरी ताकत हनुमानजी का चित्र देखकर लौट जाती है। इससे घर में सुख और समृद्धि बढ़ती है।

पंचमुखी हनुमानः वास्तुविज्ञान के अनुसार पंचमुखी हनुमान जी की मूर्ति जिस घर में होती है वहां उन्नति के मार्ग में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं और धन संपत्ति में वृद्धि होती है। पंचमुखी हनुमान जी का उपरोक्त चित्र भी अच्छा है। बैठक रूप में : बैठक रूम में आप श्रीराम दरबार का फोटो लगाएं, जहां हनुमानजी प्रभु श्रीरामजी के चरणों में बैठे हुए हैं। इसके अलावा बैठक रूम में पंचमुखी हनुमानजी का चित्र, पर्वत उठाते हुए हनुमानजी का चित्र या श्रीराम भजन करते हुए हनुमानजी का चित्र लगा सकते हैं। ध्यान रखें कि उपरोक्त में से कोई एक चित्र लगा सकते हैं। पर्वत उठाते हुए हनुमान का चित्र : यदि यह चित्र आपके घर में है तो आपमें साहस, बल, विश्वास और जिम्मेदारी का विकास होगा। आप किसी भी परिस्थिति से घबराएंगे नहीं। हर परिस्थिति आपके समक्ष आपको छोटी नजर आएगी और तुरंत ही उसका समाधान हो जाएगा।

उड़ते हुए हनुमान: यदि यह चित्र आपके घर में है तो आपकी उन्नती, तरक्की और सफलता को कोई रोक नहीं सकता। आपमें आगे बढ़ने के प्रति उत्साह और साहस का संचार होगा। निरंतर आप सफलता के मार्ग पर बढ़ते जाएंगे।

मंगलदोष से मुक्ति हेतु : वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में दक्षिण दीवार पर हनुमानजी का लाल रंग का चित्र लगाएं। ऐसा करने से अगर मंगल आपका अशुभ है तो वो शुभ परिणाम देने लगेगा। हनुमानजी का आशीर्वाद आपको मिलने लगेगा। साथ ही पूरे परिवार का स्वास्थय अच्छा रहेगा।

पेन्सिल स्कैच

मौनिका रेड्डी , धर्मपत्नी , श्री रामराज रेड्डी, एनआरएससी, हैदराबाद

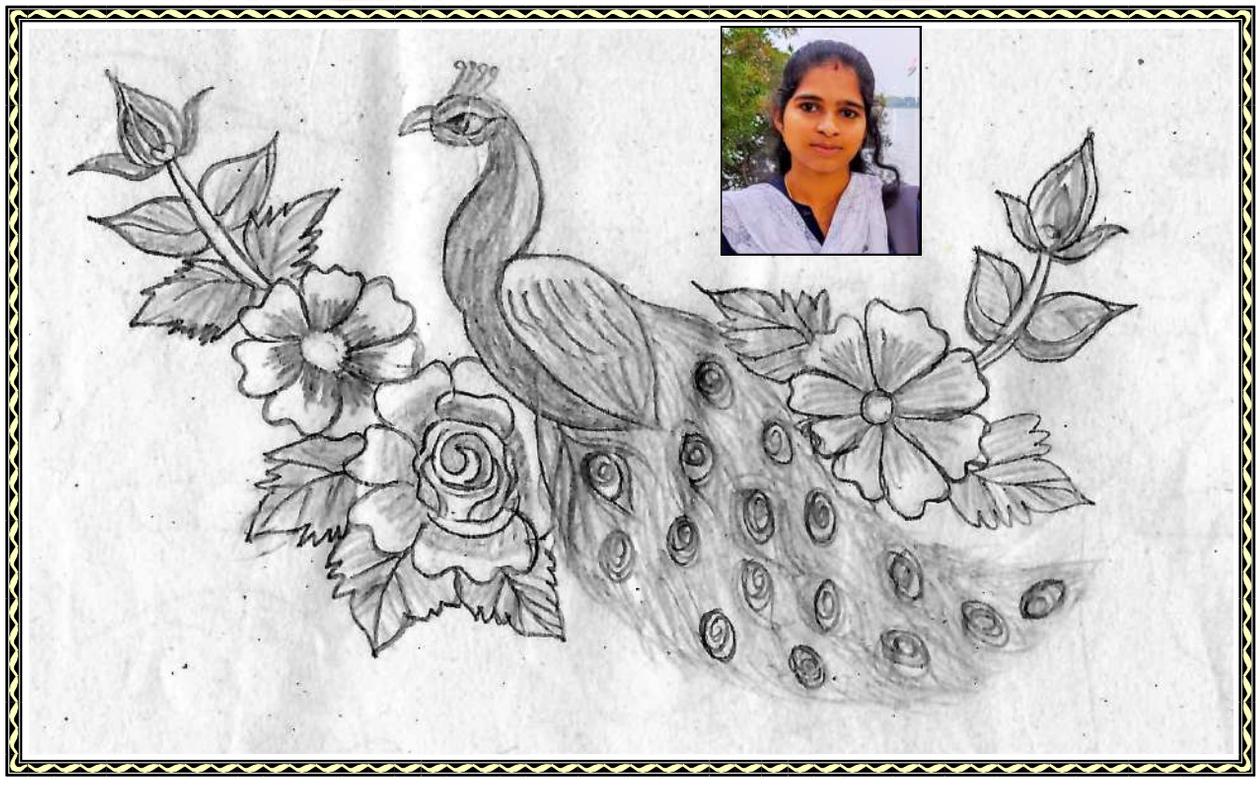

मेरा अनोखा सफर-हैदराबाद शहर

✍ *पटेल निलेश दिपकभाई, एनआरएससी, हैदराबाद*

एक अन्जान नए शहर में जाना अपने आप में एक चुनौती होता है क्योंकि हमें न तो जगह के बारे में पता होता है न ही वहां के लोगों के बारें। मै जब नया-नया हैदराबाद शहर आया तब मै यहां किसी को नही जानता था और न ही मैं इस शहर के बारे मे कुछ जानता था फिर यहां आकर हैदराबादी बिरयानी के बारे में पता चला। लोगों ने यह भी बताया कि बिरयानी शाकाहारी लोगों

के लिए भी होती है, मैं तो पक्का शाकाहारी हूं। मैं शाकाहारी खाना ही खाता हूं। लेकिन, हैदराबाद के बारे में मैंने एक चीज अच्छी पाई कि यह शहर हर किसी को अपना लेता है चाहे वह किसी जाति, धर्म या समुदाय का क्यों न हो। मांसाहारी हो या शाकाहारी हो, खाने-पीने के शौकीन लगते हैं हैदराबाद, तभी तो हर गली नुक्कड़ पर खाने-पीने की चीजों की कोई कमी नहीं होती है। मुझे हैदराबाद एक

अनोखा शहर लगा जैसे-जैसे दिन गुजरते गए मैंने इस शहर के बारे में बहुत सारी बातें जान लीं। अब मैं इस शहर में रहने का आनंद उठाने लगा। धीरे-धीरे बहुत सारे नए दोस्त भी बन गए। मेरे दोस्तों ने मुझे इस शहर से परिचित कराया और मेरी मदद की। समय गुजरता गया और मैं भी धीरे-धीरे हैदराबादी बनता गया। कुछ समय बीता और मेरे रिश्तेदार मुझसे मिलने व मेरा हालचाल देखने आ पहुंचे। अब तक मैं हैदराबाद से काफी हद तक परिचित हो चुका था, लिहाजा मैं उन्हें घुमाने के लिए हैदराबाद के कुछ विशेष

पर्यटन स्थलों तक ले गया। बिरला मंन्दिर जहां बालाजी भगवान की विशाल मूर्ति देखी। मंदिर के सबसे ऊंचे प्रांगड़ से हैदराबाद शहर पूरी तरह से देखा जा सकता है। उसके बाद हम सभी बिड़ला विज्ञान संग्रहागय पहुंचे जिसमे विज्ञान के अलग अलग मॉडल देख कर मन प्रफुल्लित हो गया और इसरो का स्पेस म्यूजियम भी देखा, वहां पर छोटा सा अंटार्कटिका का भी मॉडल है। राजा महाराजा और मुगल के समय के कटार, भाला, तलवार, बंदूके देखे उसके बाद हम हुसैन सागर देखा जिसमे हमने बोटिंग भी की और पानी के बीचो बीच भगवान बुध्द की प्रतिमा देखी। लुंबिनी पार्क भी देखा और दूसरे दिन इनके साथ सिटी बस से एक दिन का पास लेकर हैदराबाद की शान चार मिनार जिसका पुरातत्व विभाग देख रेख करते है और चार मिनार के पहली मंजिल से पूरे शहर का नजारा देखा जा सकता है। उसके सामने चार मीनार का मशहूर बाजार भी लगा दिखा जहां से हम सस्ते दाम में कई चीजें खरीद सकते हैं।

उसके पास ही नेहरु जूलॉजीकल पार्क (जू पार्क) भी देखा जिसका रखरखाव तेलंगाना सरकार कर रही है जिसमे अलग अलग जानवर जैसे कि बंगालटाईगर (सफेदबाध), हाथी, जिराफ़, नीलगाय, तेंदुआ, कछुए, बन्दर, भेड़िया, हिरण, सांभर, मगरमच्छ, बहुत सारे पक्षियों को देखने को आंनद मिलाऔर फिर हमने देखी हैदराबाद की आई टी हब कही जाने वाली हाईटेक सिटी । ऊंची शानदार इमारतें और लोकल ट्रेन (एम एम टी एस) देखकर हमें मजा आ गया। वहां से लिंगमपल्ली से फलकनुमा जाने वाली लोकल ट्रेन में बेठ कर उसका भी आंनद लिया। हैदराबाद शहर एक दिन में नहीं घूम सकते, बहुत कुछ है यहां देखने के लिए लेकिन अपने कामो मे व्यस्त होने के कारण हम ईतना ही घूम पाये। इस शहर के अंदाज अजब है और यह शहर बहुत ही अलग ही है जहां जीवन यापन के अच्छा साधन किफायती दाम में मिल सकते हैं, जहां हर आय वर्ग के लोग जीवन यापन कर सकते हैं। मोतियों के इस शहर की शान मै और क्या कहूं.....

जिंदगी का वास्तविक अनुभव

शंभू सिंह टाक, आरआरएससी, जोधपुर

पढ़ाई पूरी करने के बाद एक छात्र किसी बड़ी कंपनी में नौकरी पाने की चाह में इंटरव्यू देने के लिये पहुंचा । छात्र ने बड़ी आसनी से पहला इंटरव्यू पास कर लिया। अब फाइनल इंटरव्यू कंपनी के डायरेक्टर को लेना था और डायरेक्टर को ही तय करना था कि उस छात्र को नौकरी पर रखा जाय या नहीं । डायरक्टर ने छात्र का जीवनवृत्त देखा और पाया कि पढ़ाई के साथ यह छात्र अतिरिक्त/अन्य गतिविधियों में हमेशा अव्वल रहा ।

डायरेक्टर : क्या तुम्हें पढ़ाई के दौरान कभी छात्रवृत्ति मिली?

छात्र : जी नहीं

डायरेक्टर : इसका मतलब स्कूल-कॉलेज की फीस तुम्हारे पिता अदा करते थे।

छात्र : जी हाँ श्रीमान।

डायरेक्टर: तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हे ?

छात्र : जी वो लोगों के कपड़े धोते हैं ।

यह सुनकर डायरेक्टर ने कहा : जरा अपने हाथ तो दिखाना ।

छात्र के हाथ रेशम की तरह मुलायम और नाजुक थे ।

डायरेक्टर: तुमने कभी कपड़े धोने मे अपने पिताजी की मदद की ?

छात्र : जी नहीं मेरे पिता हमेशा यही चाहते थे कि मैं
पढ़ाई करु और ज्यादा से ज्यादा किताबें पढ़ूं।

डायरेक्टर: क्या मैं तुम्हें एक काम कह सकता हूं?

छात्र : जी, आदेश कीजिए।

डायरेक्टर : आज घर वापस जाने के बाद अपने पिताजी के हाथ धोना फिर कल सुबह मुझसे आकर मिलना

छात्र यह सुनकर प्रसन्न हो गया । उसे लगा कि अब नौकरी मिलना तो पक्का हैं, तभी तो डायरेक्टर ने कल फिर बुलाया है । छात्र ने घर आकर खुशी - खुशी अपने पिता को ये सारी बाते बताई और अपने हाथ दिखाने को कहा । पिता की थोड़ी हैरानी हुई। लेकिन फिर भी उसने बेटे की इच्छा का मान करते हुए अपने दोनो हाथ उसके हाथों में दे दिए छात्र ने पिता के हाथों को धीरे -धीरे धोना शुरु किया कुछ देर में ही हाथ धोने के साथ ही उसकी आंखों से आंसू भी झर झर बहने लगे। पिता के हाथ रेगमाल (emery paper)की तरह सख्त और जगह जगह से कटे थे । यहां तक कि जब भी वह कटे के निशानी पर पानी डालता, चुभन का अहसास पिता के चेहरे पर साफ झलक जाता था। छात्र को जिंदगी में पहली बार एहसास हुआ कि ये वही हाथ है जो रोज लोगों के कपडे धो-धोकर उसके लिए अच्छे खाने, कपड़ो और स्कूल की फीस का इंतजाम करते थे पिता के हाथ का हर छाला सबूत था उसके (एकेडैमिक कैरियर की एक एक कामयाबी का, पिता के हाथ धोने के बाद छात्र को पता ही नहीं चला कि असने उस दिन के बचे हुए सारे कपड़े एक-एक करके धो डाले उसके पिता रोकते ही रह गए, लेकिन छात्र अपनी धुन में कपड़े धोता चला गया। उस रात बाप-बेटे ने काफी देर तक बाते की अगली सुबह छात्र फिर नौकरी के लिए कंपनी के डायरेक्टर के आफिस पहुंचा। डायरेक्टर का सामना करते हुए छात्र की आंखें गीली थी

डायरेक्टर साहब बोले : "हाँ, तो फिर कैसा रहा कल घर पर? क्या तुम अपना अनुभव मेरे साथ साझा करना चाहोगे?

छात्र बोला : जी हां, सर, कल मैंने आपनी जिंदगी का एक वास्तविक अनुभव सीखा ।

पहला कि मैने सीखा कि सराहना क्या होती हैं । अगर मेरे पिता न होते तो मैं पढ़ाई में इतना आगे नहीं आसकता था ।

दूसरा पिता की मदद करने से मुझे अनुभव हुआ कि किसी काम को करना कितना मुश्किल और सख्त होता हैं ।

तीसरा मैने रिश्तों की अहमियत पहली बार इतनी शिद्दत के साथ महसूस की ।डायरेक्टर साहब बोले यही सब मैं अपने मैनेजर में देखना चाहता हूं मैं यह नौकरी उसे देना चाहता हूं जो दूसरो की मदद की कद्र करें, ऐसा व्यक्ति जो काम के दौरान दूसरो की तकलीफ भी महसूस करें । ऐसा इंसान जिसने पैसे को ही जीवन का ध्येय न बना रखा हो बधाई हो, तुम इस नौकरी के पूरे हकदार हो।

शिक्षा –एक दूसरे का हाथ बंटाते हुए काम करने का जज्बा अपने अंदर लाएं ।

ओ मेरे छोटे जादूगर

मेलों में, बाजारों में
हमने देखे खेल बहुत पर
तुम सा न मिला कोई जादूगर
ओ मेरे छोटे जादूगर

हँसी तुम्हारी मधुर चाँदनी नहा रहा घर सारा
इतनी हँसी, हँसी है तुमने फैल रहा उजियारा

भाग रहा अँधियारा भी अब सिर पर पाँवो को धरकर
तुम सा न मिला कोई जादूगर ओ मेरे छोटे जादूगर

सम्मोहन में बँधे-बँधे हम दौड़ा गये कुछ दूरी
हिरन चौकड़ी भाग रहे तुम लिये साथ कस्तूरी

पकड़ा अब पकड़ा, पकड़ा हम सब दौड़े तेज बहुत पर
तुम सा न मिला कोई जादूगर ओ मेरे छोटे जादूगर

इस मुट्ठी से उस मुट्ठी में
सिक्के रहे छिपाते कहते बूझो दादा,
दादी अनपढ़ हम बन जाते

जादू के इस मोहपाश में मन उलझा रहे उमर भर
तुम सा न मिला कोई जादूगर ओ मेरे छोटे जादूगर

सारे जग को प्यार करो औ
मंदिर दीप जलाओ

जीकर देखो

श्री बृजनाथ श्रीवास्तव,
पिता गौरव श्रीवास्तव, एनआरएससी

सुनो अनाया
इस दुनिया में आयी हो तो
जीकर देखो

यहाँ मिलेंगी गंगा,जमुना
खूब नहाना जी भर के
भैया के सँग खेल-खेल कर
नेह लुटाना जी भर के

सुनो अनाया वहाँ मिलेंगे मगर,
मछलियाँ जीकर देखो

हँसे कमलिनी ताल मिलेंगे और बबूलों के जंगल
कदम-कदम पर शूल चुभेंगे पर मन में रखना मंगल

सुनो अनाया
कोमल और कठिन दिन होंगे जीकर देखो

पैनी नजर रखो तुम बेटा हिंसक होंगे बस्ती में
उन पर करना नहीं भरोसा लोग लगें जो गश्ती में

सुनो अनाया दुनियादारी तुम्हें मिलेगी
जीकर देखो

*** हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा "निराला पुरस्कार" से सम्मानित कवि।**

रंगोली

पद्मा वेंकटेश्वरन, एनआरएससी, हैदराबाद

रंगोली हमारे जीवन का अभिन्न रूप माना जाता है। प्रातःकाल स्त्रियां सबसे पहले अपने घर-आंगन की साफ-सफाई करके घर के प्रवेश द्वारा के सामने सुंदर से सुंदर रंगोली बनाती हैं। ऐसी मान्यता है कि ईश्वर या माता लक्ष्मी जब घर में प्रवेश करना चाहें और घर के आसपास साफ-सफाई व सुंदर कलाकारी दिखे तो वे प्रसन्न मन से आपके घर में प्रवेश करते हैं और अपने आशीष से आपको सराबोर कर देते हैं। यह हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर व परंपरा है जो हमारी लोक संस्कृति का हिस्सा भी है। अलग-अलग प्रदेशों में रंगोली के नाम और उनकी शैली में भिन्नता देखी जा सकती है लेकिन इसके पीछे निहित भावना और संस्कृति में पर्याप्त समानता है। इसकी यही विशेषता है कि इसके रूप एवं साज-सज्जा अलग-अलग पाई जाती है। इसे सामान्यतः त्योहार, व्रत, पूजा, उत्सव, विवाह संस्कार आदि जैसे शुभ अवसरों पर सूखे व प्राकृतिक रंगों से बनाया जाता है। इसे बनाने के पीछे कुछ धार्मिक व सांस्कृति मान्यताएं भी शामिल हैं। आपने इसके ज्यामितिक आकार भी देखे होंगे या कभी – कभी इनको देवी-देवताओं की आकृतियों से सजाया जाता है। इनका प्रयोजन सजावट और सुमंगल है। इन्हें प्रायः विशेष अवसरों पर अलग-अलग बनाया जाता है। अक्सर इन्हें सूखा या गीला चावल, सिंदूर, रोली, हल्दी, सूखा आटा और अन्य प्राकृतिक रंगों के प्रयोग से बनाया जाता है। परन्तु अब रंगोली में रासायनिक रंगों का प्रयोग भी किया जाने लगा है। रंगोली को द्वार की देहरी, आंगन के केन्द्र और उत्सव के लिए निश्चित स्थान के बीच में या चारों ओर बनाया जाता है। कभीकभी इसे फूलों, लकड़ी या किसी अन्य वस्तु के बुरादे या चावल आदि अन्न से भी बनाते हैं।

विभिन्न प्रांतों की रंगोली: रंगोली एक अलंकरण कला है जिसका भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाम है। उत्तर प्रदेश में इसे चौक पूरना, राजस्थान में मांडना, बिहार में अरिपन, बंगाल में अल्पना, महाराष्ट्र में रंगोली, कर्नाटक में रंगवल्ली, तमिलनाडु में कोलम, उत्तरांचल में ऐपण, आंद्र प्रदेश में मुग्गु या मुग्गुलू, हिमाचल प्रदेश में अदूपना, कुमाऊं में लिखथाप या थापा, तो केरल में कोलम के नाम से जानी जाती है। महाराष्ट्र में लोग अपने घरों के दरवाजे पर सुबह के समय रंगोली इसलिए बनाते हैं ताकि घर में कोई बुरी ताकत प्रवेश न कर सके। भारत के दक्षिण किनारे पर बसे केरल में ओणम के अवसर पर फूलों से सजी हुई रंगोली बनाई जाती है। जिसे विविध रंगों और किस्मों के फूलों से बनाया जाता है। इस पवित्र रंगोली के चारों ओर विशेष अवसर पर वहां के लोग पारंपरिक नाच गाना भी करते हैं। दक्षिण भारतीय प्रांतों में इसमें कुछ भेद पाए जाते हैं। इसकी मूल बातें यथावत होती हैं। मूलतः यह ज्यामितीय और सममितीय आकृतियों से तैयार की जाती है। इसके लिए चावल के आटे या घोल का इस्तेमाल किया जाता है। चावल के आटे के इस्तेमाल के पीछे इसका सफेद रंग होना व आसानी से उपलब्धता है। सूखे चावल के आटे को अंगूठे व तर्जनी के बीच रखकर एक निश्चित सांचे में गिराया जाता है। राजस्थान का मांडना जो मंडन शब्द से लिया गया है का अर्थ साज सज्जा है। मांडने को विभिन्न परवों, मुख्य उत्सवों तथा ऋतुओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसे आकृतियों के विभिन्न आकार के आधार पर भी बांटा जा सकता है। कुमाऊं के लिख थाप या थापा में अनेक प्रकार के आलेखन प्रतीकों, कलात्मक डिजाइनों, बेलबूटों का प्रयोग किया जाता है। लिखथाप में समाज के अलग-अलग वर्गों द्वारा अलग-अलग चिह्नों और कला माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर दक्षिण भारतीय रंगोली ज्यामितीय कारों पर आधारित होती है जबकि उत्तर भारत की शुभ चिह्नों पर।

बिंदु रंगोली: रंगोली दो प्रकार से बनाई जाती है, सूखी और गीली। दोनों में एक मुक्हस्त से और दूसरी बिंदुओं को जोड़कर बनाई जाती है। बिंदुओं को जोड़कर बनाई जाने वाली रंगोली के लिए पहले सफेद रंग से जमीन पर किसी विशेष आकार में निश्चित बिंदु बनाए जाते हैं फिर उन बिंदुओं को मिलाते हुए एक सुंदर आकृति आकार ले लेती है। आकृति बनाने के बाद उसमें मनचाहे रंग भरे जाते हैं। मुक्हस्त रंगोली में सीधे जमीन पर ही आकृति बनाई जाती है। पारंपरिक

मांडना बनाने में गेरू और सफेद खड़ी का प्रयोग किया जाता है। बाज़ार में मिलने वाले रंगोली के रंगों से रंगोली को रंग बिरंग बनाया जा सकता है। रंगोली बनाने के झंझट से मुक्ति चाहने वालों के लिए अपनी घर की देहरी को सजाने के लिए रेडिमेड रंगोली स्टिकर भी बाज़ार में मिलते हैं जिन्हें मनचाहे स्थान पर चिलकाकर रंगोली के नमूने बनाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त बाजार में प्लास्टिक पर बिंदुओं के रूप में उभरी हुई आकृतियां भी मिलती हैं जिसे जमीन पर रखकर उसके ऊपर रंग डालने स जमीन पर सुंदर आकृति उभर कर सामने आती है। अगर किसी को रंगोली बनाने का अभ्यास नहीं हो तो इन वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है। कुछ सांचे ऐसे भी मिलते हैं जिनमें आटा या रंग का पाउडर भरा जा सकता है। इसमें नमूने के अनुसार छोटे छेद होते हैं। इन्हें ज़मीन से हल्का सा टकराते ही निश्चित स्थानों पर रंग झलकता है और सुंदर नमूना प्रकट हो जाता है। रंगोली बनाने के लिए प्लास्टिक के स्टेंसिल्स का भी प्रयोग किया जाता है। गीली रंगोली चावल को पीसकर उसमें पानी मिलाकर तैयार की जाती है। इस घोल को ऐपण, ऐपन या पिठार कहा जाता है। इसे रंगीन बनाने के लिए हल्दी का प्रयोग भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त रंगीन रंगोली बाज़ार में मिलने वाले पोस्टर, क्रेयॉन, फेब्रिक और एक्रिलिक रंगों से भी बनाई जाती है।

अल्पना रंगोली: आजकल रंगोली के लिए कलाकारों ने पानी को भी माध्यम बना लिया है। इसके लिए एक टब या टैंक में पानी लेकर स्थिर व समतल क्षेत्र में पानी को डाल दिया जाता है। कोशिश यह की जाती है कि पानी को हवा या किसी अन्य सतह के संवेग से बचाया जाए। इसके बाद चारकोल के पावडर को छिड़क दिया जाता है। इस पर कलाकार अन्य सामग्रियों के साथ रंगोली सजाते हैं। इस तरह की रंगोली भव्य नजर आती है। भरे हुए पानी पर फूलों की पंखुड़ियों और दीपों की सहायता से भी रंगोली बनाई जाती है। पानी की सतह पर रंगों को रोकने के लिए चारकोल की जगह, डिस्टेंपर या पिघले हुए मोम का भी प्रयोग किया जाता है। कुछ रंगोली पानी के भीतर भी बनाई जाती है। इसके लिए एक कम गहरे बर्तन में पानी भरा जाता है फिर एक तश्तरी या ट्रे पर अच्छी तरह से तेल लगाकर रंगोली बनाई जाती है। बाद में इस पर हल्का सा तेल स्प्रे कर धीरे से पानी के बर्तन की तली में रख दिया जाता है। तेल लगने के कारण रंगोली पानी में फैलती नहीं है। महाराष्ट्र के नागपुर की रहने वाली वंदना जोशी विश्व की पहली ऐसी महिला हैं जिन्होंने पानी पर रंगोली बनाने में महारत हासिल की है। वह 7 फरवरी 2004 को दुनिया की सबसे बड़ी रंगोली बना कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज करा चुकी हैं।

रंगोली भारत की सांस्कृतिक परंपराओं में सबसे प्राचीन लोक चित्रकला है। इस चित्रकला के तीन प्रमुख रूप मिलते हैं, भूमि रेखांकन, भित्ति चित्र और कागज तथा वस्तों पर चित्रांकन। इसमें सबसे अधिक लोकप्रिय भूमि रेखांकन है जिन्हें अल्पना या रंगोली के रूप में लोगों ने इसे विविध मान्यताओं व विश्वास से जोड़ दिया है। तमिलनाडु में यह मिथक प्रचलित है कि मारगई (या धनुर्मास) के महीने में देवी आंडाल ने भगवान तिरूमाल से विवाह की विनती की। लंबी साधना के बाद वो भगवान तिरूमाल में विलीन हो गई। इसलिए इस महीने में अविवाहित लड़कियां सूर्योदय के पहले उठकर भगवान तिरूमाल के स्वागत के लिए रंगोली सजाती हैं। रंगोली से जुड़ी कई कथाएं हमारे पुराणों में दी गई हैं। एक मान्यता के अनुसार एक राजा के पुरोहित का बेटा मर गया। ब्रह्मा ने राजा से कहा कि वह लड़के का रेखाचित्र जमीन पर बना दे ताकि उसमें जान डाली जा सके। राजा ने जमीन पर कुछ रेखाएं खींची यहीं से अल्पना या रंगोली की शुरूआत हुई। इसी संदर्भ में एक और कथा है कि ब्रह्मा ने सृजन के उन्माद में आम के पेड़ का रस निकाल कर उसी से ज़मीन पर एक स्त्री की आकृति बनाई। उस स्त्री का सौंदर्य अप्सराओं को मात देने वाला था, बाद में वह स्त्री उर्वशी कहलाई। ब्रह्मा द्वारा खींची गई यह आकृति रंगोली का प्रथम रूप है। चावल के आटे के इस्तेमाल के पीछे यह मान्यता है कि चींटी को खाना खिलाना चाहिए। यह माना जाता है कि कोलम के बहाने अन्य जीव जन्तु को भोजन मिलता है

जिससे प्राकृति चक्र की रक्षा होती है। रंगोली को झाड़ू या पैरों से नहीं हटाया जाता है। बल्कि इन्हें पानी के फव्वारों या कीचड़ सने हाथों से हटाया जाता है। मिथिलांचल में ऐसा कोई पर्व-त्योहeर या समारोह नहीं जब घर की दीवारों पर आंगन में चित्रकारी नहीं की जाती हो। प्रत्येक अवसर के लिए अलग ढंग से अरिपन बनाया जाता है। जिसके अलग-अलग आध्यात्मिक अर्थ होते हैं।

धीरे-धीरे हमारी परंपराएं आधुनिकता का शिकार होती जा रही हैं। आजकल लोग दिन-प्रतिदिन रंगोली बनाने को झंझट समझते हुए पेंट करके हमेशा के लिए एक तरह की रंगोली बना लेते हैं जिससे उनके घर का प्रवेश द्वारा सदैव सजा हुआ दिखे। कुछ लोग फ्लैटों में रहते हैं जहां रंगोली बनाना मुश्किल हो जाता है तो वे चॉक की सहायता से कुछ छोटी-मोटी आकृतियां बना कर अपनी परंपरा को कायम रखने का प्रयास भी करते हैं। समय बदल रहा है और इसी के साथ हर चीज का रूप भी बदल रहा है। आज हम रंगोली के बदले हुए रूप को भी देख सकते हैं। आज हमारी रंगोली मॉडर्न आर्ट का शिकार हो गई है मगर फिर भी कुछ परिवार ऐसे हैं जो इस प्राचीन परंपरा को पहले की ही तरह बनाए रखना चाहते हैं।

बेटी

एस.सुब्बलक्ष्मी, एनआरएससी, हैदराबाद

शादी के नौ साल बाद
पैदा हुई हमारे घर में
पक नन्ही सी परी
लेकर आई खुशियाँ, जो ढेर सारी ।

किलकारी से घर भर दिया
खुशियों का न रहा ठिकाना ।
हर साल बेटी का जन्म दिन
धूमधाम से है मनाया।

बेटी है हमारे घर की लक्ष्मी
बेटे के न होने का नहीं है
हमें कोई अफसोस क्योंकि
बेटी ने पूरी कर दी हर कमी ।

ना चाहे हम धन और वैभव, बस चाहे हम तुझको
तू ही लक्ष्मी तू ही शारदा तू ही दुर्गा, तू ही काली
है बड़ी शक्तिशाली जो छेड़े वो जल जाएं ।

जिसको हमने बहुत प्यार से है पाला
जिसको हर मश्किल में संभाला
जो है माँ-बाप का अभिमान परिवार का सम्मान ।

बेटी जो श्रृष्टि कि उपत्ति
एक डोर है जो रिश्तों को प्यार से बांधती ।
बेटी नयनों की ज्योति है सूरत उसकी प्यारी है ।

बेटी है ही कल है । बेटी से संसार सुनहरा।
बहन होगी ती तिलक होगा
राखी बंधेगी भाई के हाथ और वीर भी कहलाएगा।
शादी के बाद बेटियों को कहते हैं पराया।
पर उन्होने ही माता-पिता को है अपनाया।

जो दूर रहकर भी करते हैं
प्यार और देखभाल उनकी बेटो से भी बढ़कर
जो न कर पाते हैं साथ भी रहकर।

बेटी बचाओ क्योंकि बेटी बचेगी
तो बचेगा देशा
क्योंकि बेटि ही बड़ी होकर
सीता, सावित्री, अनसुसा जैसी।
त्यागा की मूरत बनी।
झांसी की शनो लक्ष्मीबाई बनी ।
लता मंगेसंकर और इंदिरा गांधी बनी और बनी ऐश्वर्या
पी वी सिंधु और कल्पना चावला।

किरन बेदी जो बनी, आई पी एस पुलिस आदि।
बेटियां ही आगे चलकर लेती हैं अवतार कई
बहन, भार्या, बहू माता
साँस, नानी, दादी, परदादी आदि।

बैटियां अबला नहीं सबला है ।
भारत की है शान बेटियां।
हिमालय पर तिरंगा फिराती बछेंद्री पाल।
बेटियां कहाँ बेटों से कम हैं ।
बेटों से कंधे से कंधा मिला करतीं।

संरक्षण या अतिसंरक्षण

डॉ. एन अपर्णा, एनआरएससी, हैदराबाद

आप सब को आश्चर्य होगा कि मैं इस विषय पर क्या कहानी बताने वाली हूं। आप सब जानते हैं कि मैं हमेशा जीवन में घटित घटनाओं के आधार पर ही कहानी सुनाती हूं। यह भी एक ऐसी ही कहानी है। जब हम छोटे थे तो आमतौर पर हम सभी संयुक्त परिवार में रहते हुए ही बड़े हुए। हर घर में दादा, दादी, चाचा-चाची, मौसी इत्यादि होते। स्कूल जाना हो तो साइकिल उठाओं और जाओ, कोई स्कूल छोड़ने या स्कूल से घर ले जाने के लिए नहीं था। साइकिल नहीं तो पैदल जाओ पर अपने आप ही जाना होता था और अक्सर हम सब सरकारी स्कूल के ही पढ़े हुए हैं। हम सब आजाद पंछी की तरह उड़ते थे, हर छोटे-मोटे निर्णय खुद ही कर सकते थे जैसे किस दोस्त के साथ खाना है, किसके साथ खेलना है, किसके साथ स्कूल जाना है, किसके साथ प्यार बांटना है आदि क्योंकि हम संयुक्त परिवार में रहते थे तो हर चीज बांट कर खाने की आदत ही सिखाई जाती थी, सब मिल कर एक ही चीज सबके साथ इस्तेमाल करके खुश होते थे। मिल बांट कर रहते थे। साथ ही खाना-पीना, खेलना, उटना सोना जगना, हंसना-रोना, सब कुछ साथ में ही करते थे। घर चाहे छोटा सा हो या बड़ा सब एक साथ रहते थे और कभी न हुआ तो एक ही कमरें में सारे सोते भी थे। ऐसे मिल कर रहने पर जिन्दगी के हर उतार चढ़ाव को सहने की शक्ति मिलती है। हमारे माता-पिता ने कभी भी यह दबाव नहीं डाला कि हमें कक्षा में प्रथम आना है या सबसे अच्छे अंक लाना है। उन्होंने कभी नहीं कहा कि हमें संगीत या खेलकूद में भी अव्वल रहना है। वह तो कभी पूछते ही नहीं थे बस माँ को यह फिक्र होती कि मेरे बच्चे कभी भूखे न रहे और पिता जी सिर्फ इतना ही पूछते कि पास हुए या नहीं, इतनी जानकारी उनके लिए काफी थी। घर पर सभी थे, तो देखभाल भी सभी के साथ होती थी। रिश्तों की समझ जैसे बचपन से ही सीख जाते थे। बड़ो का आदर करना, दादी, बुआ, ताई जब भी आएंगी तो उनके पैर छूना या उन्हें प्रणाम करना, यह सब हमारी जीवन शैली के नियमों में आते थे। कोई विशेष देखभाल किसी एक सदस्य के लिए कभी नहीं थी। घर में जितने भी बच्चे हो, बड़े या छोटे, सभी एक समान होते, सभी को खाना-पीना साथ में एक जैसा ही दिया जाता। कभी माँ अपने मायके जाती तो दादी के हाथ के पकवान खाने को मिलते, या दादी अगर तीर्थ पर जाती तो बुआ आकर कच्चा-पक्का खिला देती थी। घर के आंगन में, गली में जहां मन किया वहां खेलने निकल जाते थे।

आजकल जन्म से ही बच्चों को विशेष देखभाल मिलने लगी है क्योंकि आजकल हम संयुक्त परिवारों में नहीं रहते हैं। माता-पिता दोनों का सारा समय व ध्यान सिर्फ और सिर्फ बच्चे की तरफ केन्द्रित होता है। वे बच्चे को उसकी मर्जी के अनुसार खेलने भी नहीं देते हैं। उनके खाने का समय, खेलने का समय, सोने का समय सब माता-पिता अपने तरीके से बनाते हैं और बच्चे को उसी का पालन करने के लिए कहा जाता है। इतना ही नहीं एक आया यानि दाई मां हर समय उसके साथ रहती है, वह जमाना चला गया जब दायम्मा बच्चे को अपने बच्चे की तरह संभालती थी। आपने पन्ना धाय का किस्सा तो सुना ही होगा किस तरह उसने राजकुमार को बचाने के लिए अपने बच्चे का त्याग किया था। आजकल तो ऐसी देखभाल करने वाली दायम्मा नहीं मिलेगी। स्कूल जाना हो तो कोई न कोई उनको छोड़ेगा, ट्यूशन जाने के लिए माता-पिता में से किसी एक की ड्यूटी रहती है कि छोड़ने जाओ और फिर लेने जाओ। पढ़ाई के लिए भी ट्यूशन जरूरी होती है, ट्यूशन न गए तो नाक कट जाती है। माता-पिता आजकल बच्चों की हर चीज पर नियंत्रण रखते हुए आखिर में मोबाइल उसके हाथ में थमा देते हैं और फिर मोबाइल पर बच्चा अपना अधिक से अधिक समय बिताने लगता है। फिर धीरे-धीरे जब उसको मोबाइल की आदत पड़ जाती है तो उस पर नियंत्रण शुरू कर देते हैं। इस अतिसंरक्षण के कारण बच्चों का मानसिक व शारीरीक विकास नहीं हो पा रहा है और इसका असर सीधे उनके

स्वास्थ्य पर पड़ता है। संयुक्त परिवार में न रहने के अभाव में उन्हें रिश्तों की गहराई समझने में मुश्किल होती है। जहां वे सिर्फ माता-पिता को देखते हैं तो उनके मन में दादा-दादी, नानी, ताऊ, चाची आदि रिश्तों के साथ की समझ कैसे आएगी। चलते—चलते अगर गिर भी जाएं तो स्वयं उठने के बजाय रोते हैं कि माता-पिता आकर उन्हें उठा कर खड़ा करेंगे। उनके अन्दर किसी भी छोटी सी समस्या का सामना करने की भी हिम्मत नहीं होती है। ऐसे में बच्चे या तो डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं या फिर उनकी अपनी एक अलग दुनिया बन जाती है जिससे बाहर आकर किसी और के साथ वक्त बिताना उन्हें बहुत खलता है। उन्हें अकेले रहना पसंद आता है।

माता-पिता अक्सर बच्चों को जीतने की सीख देते हैं लेकिन कभी हार का सामना करना नहीं सिखाते। कई दिनों पहले मैंने छिछोरे नामक एक फिल्म देखी थी, पहले तो लगा कि ये क्या नाम है फिल्म का, यह बकवास फिल्म होगी लेकिन बच्चों के जोर देने पर जब मैंने यह फिल्म देखी तो लगा कि कितना बड़ा संदेश इस फिल्म के द्वारा ऐसे बच्चों तक पहुंच रहा है जो हार से डर कर जीवन खत्म करने को उतारू हो जाते हैं। फिल्म में यही दिखाया है कि हारने पर एक बच्चा जहां आत्महत्या करने की कोशिश करता है वहां उस बच्चे के माता-पिता एवं उनके सभी दोस्त मिलकर उस बच्चे का मनोबल बढ़ाने के लिए एकजुट हो जाते हैं और उस बच्चे को बताते हैं कि हारने पर जिन्दगी खत्म नहीं होती बल्कि जीतने का हौसला बढ़ जाता है और फिर भी अगर हार का सामना करना पड़े तो कोई बात नहीं क्योंकि वे सभी जीवन में स्कूल या कॉलेज के दिनों में हार का सामना कर चुके हैं। हारने से ज्यादा जरूरी होता है किसी की जीत का हिस्सा बनना। सामने वाला जीत पाया क्योंकि वो कहीं तुमसे थोड़ा आगे निकल गया लेकिन क्या इसका यह मतलब है कि तुम कभी उससे आगे नहीं निकल पाओगे। यह फिल्म वास्तव में देखने लायक लगी। कहा तो यही जाता है कि फिल्में हमारा समाज का आईना होती हैं। कहीं न कहीं उनमें जो दिखाया जाता है उसमें सच्चाई होती है।

माता-पिता को भी बच्चों को अंको की दुनिया नहीं दिखानी चाहिए। उनके अनुसार दुनिया मात्र अंकों का खेल है, 99.99 प्रतिशत ही नहीं 100 प्रतिशत सबसे अच्छा माना जाता है। महाभारत में भी यह प्रश्न किया गया था कि कलयुग कैसा होगा तो एक दृश्य का वर्णन करते हुए कहा गया जहां एक गाय अपने नवजात बछड़े को चाटती है और इतना चाटती है कि बछड़ के शरीर में से खून निकलने लगता है, फिर भी गाय उसे नहीं छोड़ती है तब आसपास के लोग आकर बछड़ को उसकी माँ से अलग करते हैं। इस दृश्य का तात्पर्य यही है कि मां बाप कलियुग में बच्चों को संरक्षण के बजाय अतिसंरक्षण देंगे जो कि हमें आजकल देखने को मिल रहा है। जहां हमें केवल संरक्षण देना चाहिए, वहीं हम इन बच्चों को अतिसंरक्षण से कमजोर बना देते हैं। यदि ये बच्चे कमजोर इंसान बने तो आगे जाकर समाज का सामना कैसे करेंगे। हमें गाय की तरह अपने बच्चों को नहीं बल्कि हिरण की तरह अपने बच्चों को बड़ा करना चाहिए। हिरनी जन्म देते ही बच्चे को लात मारती है, दुनिया में प्रवेश करते ही लात खाया हुआ नवजात खुद को संभाल भी नहीं पाता कि अपनी माँ से लात खाता है, लड़खड़ाते हुए खड़ा होकर जब वह खड़े होने की कोशिश करता है तो वह फिर लात मारती है, बार-बार लात खाते हुए डर के मारे बच्चा उठकर सीधे भागना शुरू कर देता है। हिरनी को पता है कि उसे बचपन से ही बच्चे को शेर का शिकार होने से बचना सिखाना होगा और इसका सबसे प्रमुख नियम है भागना, तेजी से भागना और जितनी ज्यादा ऊंची छलांग लगा कर भागेगा उतना ही जीवन बचा रहेगा। बस यह सीख वह जन्म देते ही सीधे अपने बच्चे को सिखाना शुरू कर देती है।

कलयुग के बच्चे काफी समार्ट हैं, कहीं न कहीं हम उन पर गलत तरह के नियंत्रण लगा कर उनके विकास को रोक देते हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। इन बच्चों का विकास और अधिक बेहतर तरीके से हो, यह निश्चित करना भी हमारा ही कर्तव्य है। मां-बाप होने के नाते हमें अपने बच्चों को आरंभ से ही हर काम खुद करने की सीख देनी चाहिए। उन्हें स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने की सीख देनी चाहिए। आरंभ से ही छोटी-छोटी बाते खुद करने की आजादी देनी चाहिए। जब बच्चे शुरू से कुछ चीजें अपने आप करने लगेंगे तो आगे चल कर उनमें स्वायत्ता अपने आप ही आ जाएगी। हमें बच्चों को पिंजरे के किसी पंछी की तरह कैद करके नहीं रखना चाहिए, उनका संरक्षण करने चाहिए मगर अतिसंरक्षण से उनके विकास को अवरूद्ध नहीं करना चाहिए।

द्वारका-सोमनाथ—एक अविस्मरणीय यात्रा

मीनाक्षी सक्सेना, एनआरएससी, हैदराबाद

द्वारिका, भगवान श्री कृष्ण की नगरी, यह नाम मन में आते ही कृष्ण भगवान से जुड़ी कई गाथाएं मन में घूम जाती हैं। मैं हर साल अपने बेटे को उसकी दादी के पास कुछ दिनों के लिए लेकर जाती हूं। श्रेयान की दादी जामनगर से दूर सिंघच नामक एक छोटे से गांव में अपने बेटे मनोज के साथ रहती हैं जो मेरे पति पंकज के बड़े भाई हैं। वर्ष 2015 तक उसके दादा-दादी हमारे साथ थे और फिर प्रकृति का कुछ खेल ऐसा रचा गया कि उन्हें हमसे दूर वहां जाकर रहना पड़ा। लेकिन मैं खुद अपने सास-ससुर को बहुत याद करती हूं और मेरा बेटा तो अपनी दादी से मिलने की खुशी हमेशा जाहिर करता है। इस बार मैंने सोचा कि क्यों न एक साथ दो काम किए जाएं। श्रेयान को उसकी दादी से मिलवाकर हम आगे भगवान श्रीकृष्ण की द्वारिका नगरी और आगे फिर सोमनाथ में दर्शन कर आएं। श्रेयान को फ्लाइट में घूमने और दादी से मिलने की दोगुनी खुशी थी तो मुझे भी अपने सास-ससुर से मिलने और फिर द्वारिका दर्शन की खुशी थी। कुछ साल पहले जब मैं एक नवविवाहिता थी तब अपने जेठ-जेठानी के घर, मैं अपने पति के साथ गई थी, तभी मुझे द्वारिका दर्शन का सौभाग्य मिला और आज अपने बेटे के साथ जा रही थी। चूंकि श्रेयान बड़ा शरारती और छोटा है तो मेरी हर यात्रा में मेरी बड़ी बहन मेरे साथ रहती है, लिहाज़ा वह भी इस यात्रा का हिस्सा बनीं। हमने अपनी तरफ से तैयारी पूरी कर ली। मैंने भी द्वारिका तथा सोमनाथ में रहने के लिए होटल बुक कर लिए और निकल पड़े। पहला पड़ाव मुंबई था, हमारी फ्लाइट मुंबई इंटरनेशनल पर पहुंची। आलीशान सजावट से भरा मुंबई इंटरनेशनल वाकई में बहुत ही सुंदर एयरपोर्ट है। वहां पर हमें दो घंटे बिताने थे लिहाजा हमने सामान सीधे जामनगर पर ही लेने के लिए अनुरोध किया और मुंबई एयरपोर्ट पर उतर कर एयरपोर्ट का मजा लेने लगे। कुछ समय इधर-उधर घूमते हुए बिताया और फिर अपने निश्चित गेट सं. पर जाकर बैठ गए। हवाई जहाज में हमें काफी आगे की सीटें मिली थीं। इकोनॉमी के आगे बिजनेस क्लास थी और हमारी सीट के आगे कुछ लड़के थे जिनकी बातों से ऐसा लगा कि कोई वीआईपी भी उसी फ्लाइट में जामनगर के लिए निकला है। कुछ देर बाद वह वीआईपी इकॉनॉमी तक अपने दोस्तों के पास आता है जिसे देख कर मैं बाग-बाग हो गई। हमारे समय का मशहूर गायक के.के. जिसका एक प्राइवेट एलबम युवाओं के बीच काफी पापुलर हुआ था। "यारो दोस्ती बड़ी ही हसीन है...ये न हो तो बोलो क्या फिर जिंदगी है"। के.के. का यह गाना सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि हर युवा की पसंद हुआ करता था। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि के.के. के साथ उड़ते हुए मैं जामनगर पहुंची। जामनगर का हवाई अड्डा डिफेन्स का है और वहां पर केवल एयर इंडिया की उड़ानों के लिए ही अनुमति है व फोटो खींचना अपराध है। मगर मैंने उस दिन यह अपराध करने का जोखिम उठा लिया। के.के. के साथ एक सेल्फी लेना तो बनता है। उसके बाद वहां के सेक्योरिटी वालों ने मुझे बड़ी गालियां दीं और मेरा फोन छीनने पर उतर आए मगर मैंने मौके की नजाकत को समझते हुए माफी मांगी और वहां से निकल लिए। बाहर मेरे जेठ जी एक गाड़ी लेकर हमारा इंतजार कर रहे थे। उन्हें भी अपने भतीजे से मिलने की उत्सुकता थी। वे अपने साथ श्रेयान के मनपसंद बेसन के लड्डू लेकर आए थे। श्रेयान अपने पापा की हुबहु नकल है, उसे देखते ही घर के सभी लोग पंकज की कमी महसूस नहीं करते हैं, ऐसा लगता है कि पंकज हमारे साथ ही हैं। हम सब बातें करते हुए, रास्ते के अपने अनुभव बताते हुए वहां से लगभग 1 घंटे का रास्ता तय कर सिंघच पहुंचे जहां श्रेयान अपने दादी-बाबा से मिल कर बहुत खुश हुआ। वे दोनों भी अपने पोते से मिलकर बहुत खुश थे। कुछ दिन हमने सिंघच में रहकर वहां की आबोहवा का आनंद लिया। वहां पर गांव जैसा माहौल होता है। असली दूध और उसकी मलाई से बना असली देसी घी,

जिसमें खाना पकाया जाता है। सब्जियों का स्वाद और खाने का स्वाद तो जैसे हमें वहां रोक रहा था मगर हमें अपनी आगे की यात्रा भी आरंभ करनी थी अतः तीन चार दिन वहां रूकने के बाद हम आगे द्वारिका के लिए निकल पड़े।

सिंघच से एक बड़ी कार लेकर हमने आगे सारा सफर कार से ही पूरा करने का फैसला लिया। द्वारिका पहुंचते हुए हमने सबसे पहले एक होटल में चेक-इन किया। होटल की खिड़की से ही द्वारिकाधीश मंदिर की ध्वजा फहरती हुई दिखती रही। लंबी यात्रा के बाद मेरी बड़ी दीदी काफी थक चुकी थीं अतः उन्होंने कुछ देर आराम करने की इच्छा जताई। हम कुछ देर कमरे में रहे, आराम किया और फिर नहा धोकर मंदिर में दर्शन के लिए निकल पड़े। एक विशाल भव्य मंदिर जिसकी धार्मिक मान्यता और उसके इतिहास से कौन परिचित नहीं है, मंदिर में दर्शन के लिए कुछ नियम बताए गए जैसे चमड़े का बैग, मोबाइल, पर्स भीतर ले जाने की अनुमति नहीं थी। लिहाजा हम केवल एक छोटा सा पर्स और सिर्फ मेरा मोबाइल लेकर गए ताकि किसी से संपर्क करने में मुश्किल न हो। मंदिर पहुंचने पर देखा कि मोबाइल जमा करने के लिए लंबी लाइन है अतः मैंने मोबाइल को अपने कपड़ों में छिपा कर यह सोच लिया कि किसी न किसी तरह से बच कर निकल जाएंगे। लेकिन "बच्चे मन के सच्चे" कहते हैं न कि कृष्ण भगवान ने अपने बाल रूप में कई लीलाएं दिखाई थीं और सभी बच्चे कहीं न कहीं कृष्ण का ही रूप होते हैं। जब महिला सुरक्षाकर्मी हमारी जांच कर रही थी तो उसने पूछा कि मोबाइल है, मैंने तुरंत ना में सिर हिला दिया लेकिन मेरे साथ मेरा बेटा था उसने तुरत जवाब दिया, हां आंटी मोबाइल है ना, मम्मी ने अपने ड्रेस में रखा है। उस महिला सुरक्षाकर्मी को भी हंसी आ गई और बोली क्या मैडम आप लोग क्यों नहीं समझते कि मोबाइल अंदर लेकर नहीं जा सकते हैं। मैंने उससे विनती की कि लाइन बहुत लंबी है, हम बहुत दूर से आए हैं सारा समय यहीं निकल गया तो दर्शन कैसे कर पाएंगे लेकिन वो टस से मस न हुई। जाहिर है वह नियमों का पालन कर रही थी। लिहाजा मैंने बेटे को अपनी दीदी के पास छोड़ा और कहा आप दोनों यहीं रूको मैं मोबाइल जमा करके आती हूं। कुछ देर में वापिस आकर हम फिर मंदिर में जा सके। शाम की आरती का समय था और मंदिर की सजावट के साथ हरे कृष्णा की गूंज सारे मंदिर में सुनाई दे रही थी। मंदिर के एक हिस्से में कुछ विदेशी भजन कर रहे थे तो दूसरे हिस्से में कृष्ण रास लीला पर गोपियां गर्भा खेल रही थीं। मनोरम सौंदर्य से अभिभूत हम चारों ओर मंदिर की सुंदरता निहारते रहे। लगभग दो-तीन घंटे हम अंदर थे लेकिन मेरे कन्हैया को अब बाहर जाना था और हमारे पास कोई रास्ता नहीं था। हम बाहर निकले और श्रेयान का कार्यक्रम खत्म करके ड्राइवर की खोज में लग गए। मैंने मोबाइल निकाला और ड्राइवर को फोन किया। अंजान जगह पर किसी को रास्ता बताना या किसी से रास्ता पूछना दोनों ही डर पैदा करते हैं। जैसे-तैसे हमें ड्राइवर मिला और हम होटल पहुंचे। ड्राइवर ने कहा कि अगले दिन सुबह-सुबह ही भेंट द्वारिका में दर्शन के लिए निकलना होगा क्योंकि वहां नाव से जाना होगा और मंदिर ठीक 12 बजे के बाद बंद हो जाता है जो सायं 4 बजे ही खुलता है। हमने सुबह जल्दी निकलने का फैसला किया और होटल पहुंच कर खा-पीकर सो गए। सुबह-सुबह भेंट द्वारिका के लिए निकले। नाव में बैठकर भेंट द्वारिका में दर्शन पूरे किए और फिर आगे सोमनाथ के लिए निकल पड़े। सोमनाथ पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई थी। हमने होटल में चेक-इन किया और नहा धोकर सोमनाथ भगवान के दर्शन के लिए निकल गए। किस्मत से वहां अधिक भीड़-भाड़ नहीं थी। शाम की आरती का समय हो रहा था। हम जैसे ही मंदिर में घुसे तो अंदर भीड़ का नजारा देख कर घबरा गए।

सबसे पहले तो हमने अपने छोटे नवाब को संभाला। मैने और दीदी दोनों ने उसको एक-एक ओर से पकड़ लिया था और हम यह ध्यान रख रहे थे कि हम साथ रहें तथा हमारा हाथ न छूटे। जैसे ही द्वार पट खुले लोगों में न जाने क्या पागलपन सवार हुआ सब एक साथ आगे को बढ़ने लगे। गर्भ ग्रह में सजे हुए भगवान बड़े ही सुंदर दिख रहे थे। कुछ देर हम दूर खड़े होकर भगवान के दर्शन करने लगे। उन दोनों के लिए इस भीड़ के साथ आगे बढ़ना मुश्किल था लगभग आधे घंटे बाद जब भीड़ थोड़ी कम हुई तो हमने अपना किनारा छोड़ा और भगवान के दर्शन किए। भव्य आरती की गूंज और बहुत ही सुंदर धुन से गुंजायमान मंदिर में जैसे हमारे पैर जम गए थे, हम

मंदिर से बाहर जा ही नहीं पा रहे थे लेकिन वहां के सेवक भीड़ कम करने के लिए लोगों को वहां रूकने ही नहीं दे रहे थे। वह मधुर आरती की धुन जो पहले कभी नहीं सुनी थी, उसे हम रिकॉर्ड नहीं कर सकते थे क्योंकि वहां भी मंदिर के अंदर फोन ले जाने की अनुमति नहीं थी। मंदिर से बाहर आने के बाद दूर-दूर तक फैला सागर और उसकी विशाल लहरों की आवाज़ काफी भयावह थी लेकिन सकारात्मकता से भरा मंदिर के प्रांगड़ ने हमें अभिभूत कर दिया था । वहीं

बैठ कर हमने काफी समय बिताया, मंदिर के पीछे की तरफ एक तंग गली थी जिसमें छोटे-छोटे व्यापारी अपनी दुकानें लगा कर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मोती एवं सीपि के साथ शंख के कई सामान बेच रहे थे। हमने वहां से कुछ छोटी-छोटी चीजें खरीदीं और होटल की तरफ वापिस निकल गए। अगले दिन हमें ड्राइवर वापिस सोमनाथ मंदिर तक लेकर आया और बोला कि रात के अंधेरे में आप असली शिवलिंग के दर्शन नहीं कर पाए होंगे। वह मात्र ड्राइवर नहीं हमारा अच्छा गाइड भी था, उसने बताया कि समुद्री किनारे से काफी दूरी पर एक शिवलिंग है माना जाता है कि वर्षों पहले भगवान का मंदिर वहीं हुआ करता था और अब मात्र शिवलिंग है। इसके दर्शन किए बिना आपके दर्शन पूरे नहीं होते हैं। मेरी दीदी को सागर की लहरों से बड़ा डर लगता है लिहाजा हम शिवलिंग तक तो नहीं जा सके, दूर से ही दर्शन कर हमने वहां कुछ समय बिताया और आगे निकल गए। उस दिन हम काफी थके हुए थे। हमने रात का खाना होटल में ही खाया क्योंकि ब्रेकफास्ट और डिनर पैकेज के अन्दर ही था तो हम खाना खाकर सो गए। अगले दिन हमारी यात्रा जामनगर की ओर शुरू हुई रास्ते में हमने पोरबंदर जाने का फैसला किया। पोरबंदर महात्मा गांधी की जन्मभूमि तो है ही साथ ही यहीं पर सुदामा का भी जन्म हुआ था। यहां सुदामा के नाम से एक मंदिर भी बना हुआ है जहां पर विरले ही पर्यटक जाते दिखते हैं। हमारी यात्रा के रास्ते में ही एक मीरा मन्दिर भी पड़ता है। मीराबाई के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर में जल का बहुत महत्व है। यहां आसपास पीने के पानी की काफी कमी भी है जिससे लोग जल के महत्व को समझते हुए उसे ही प्रसाद रूप में पीते हैं। यहां से

हमारी यात्रा आगे पोरबंदर की तरफ बढ़ी। पोरबंदर पहुंचते हुए हम सबसे पहले उस स्थान पर पहुंचे जहां गांधी जी का जन्म हुआ। आजकल वह घर जहां पर उनका बचपन बीता, युवा गांधी के रूप में स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा रहे जहां शादी कर वे कस्तूरबा बा को लेकर पहुंचे, उस स्थल को अब पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। यहां पहुंचने के बाद हम उनकी जीवन शैली को देख कर सोच रहे थे कि कितना सादा जीवन जिया उन्होंने। गांधी युग के बर्तन, उनका चरखा, उनकी कई चीजें घर में आज भी वैसे ही रखी हुई हैं जिन्हें देखने के लिए पर्यटक दूर-दूर से आते हैं। उनके घर की सीढ़ियां बड़ी खड़ी और ऊंची थी। घर में कई कमरे और उनमें जाने-आने के रास्ते बड़े भ्रमित करते थे। मेरी दीदी बेचारी उन सीढ़ियों तक चढ़ कर घर के ऊपरी हिस्से को देख न सकी। बहरहाल हमने गांधी जी का घर देखा। वहां पर हम लगभग दोपहर तक थे।

उसके बाद आगे जामनगर जाने के लिए रास्ते में एक छोटा सा महल और वन्यजीव संरक्षण का राष्ट्रीय उद्यान गिर नेशनल पार्क देखने की इच्छा भी हुई। ड्राइवर ने हमें बताया कि अगर आपको राष्ट्रीय उद्यान का आनंद लेना है तो कम से कम एक रात यहां बिताना चाहिए तभी आप इसका असली मजा ले सकेंगे। यदि समय कम है तो आपको मैं यहां का एक ज़ू दिखा सकता हूं। मेरे साथ दो डरपोक लोग थे मेरी दीदी और मेरा बेटा, लिहाजा मैंने प्लान बदल दिया और फिर हम वहां किसी अच्छे होटल में गुजराती खाना खाने के लिए पहुंचे। मैं ऐसा मानती हूं कि आप जहां जाते हो वहां का लोकल खाना अवश्य खाना चाहिए क्योंकि विविध पकवान व स्वाद का अपना अलग मज़ा होता है। हम काफी भूखे थे तो एक अच्छे से गुजराती खाने के होटल में पहुंच कर हमने खाना खाया। उसके बाद आगे निकले, ड्राइवर हमें एक किला दिखाने ले गया लेकिन इतना खाना खाने के बाद किले में कौन घूमेगा। हमने उसे आगे ले जाने को कहा। जामनगर के रास्ते में एक नागेश्वर भगवान का ज्योतिर्लिंग है। भगवान शंकर के

इस ज्योतिर्लिंग का दर्शन करके जब हम बाहर निकले तो हमारी नजर वहां की एक विशेष सवारी गाड़ी पर पड़ी जिसे हमने आते समय रास्ते में कई लोगों को इस्तेमाल करते देखा। वहां के एक लोकल से जब हमने पूछा तो पता चला कि उस गाड़ी को छकड़ा कहा जाता है। छकड़ा का उपयोग लोग सवारी गाड़ी या माल ढोने के लिए करते हैं। यह मात्र एक गाड़ी नहीं बल्कि उनकी शान का प्रतीक होती है। जितनी भव्य गाड़ी उतनी ही ऊंची शान, नागेश्वर मंदिर के दर्शन करने के बाद हम वहां से आगे चले और कमलानेहरू चिड़ियाघर गए। जहां हमने कई पशु-पक्षी देखे और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया। इसके बाद हमारा अंतिम पड़ाव जामनगर था जहां पर हमारी एक दीदी रहती हैं। उनसे मेल-मिलाप करने के बाद हम जामनगर एयरपोर्ट की तरफ चल दिए। वहां जाने पर आरंभिक सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद पता चला कि हमारी फ्लाइट 2 घंटे देरी से उड़ेगी। जामनगर से मुंबई और फिर हैदराबाद, अपने घर वापसी के लिए निकल पड़े।

मंडला आर्ट

✍ *दीप्ति सक्सेना, सुपुत्री सुभाष चन्द्र सक्सेना,, एनआरएससी, हैदराबाद*

पेन्सिल स्कैच

✍ *शंभू सिंह टाक, आरआरएससी, जोधपुर*

पीछे क्यों छूट गए पापा ...

श्रीनिवास राव रोंगला,
आरआरएससी, जोधपुर

नौ महीने तक ढोती अम्मा,
जिंदगी भर साथ निभाते पापा,
हालांकि दोनों पर भार एक समान,
फिर भी पीछे क्यों छूट गए पापा ।

बिना वेतन हर काम करती अम्मा,
सारी कमाई घर पर खर्च करते पापा,
हालांकि दोनों का श्रम समान,
फिर भी पीछे क्यों छूट गए पापा ।

जो चाहें वो बनाती अम्मा,
चाहें वो खरीद के दिलवाते पापा,
हालांकि दोनों का प्यार समान,
फिर भी कीर्ति में पीछे क्यों हैं पापा ।

हर वक्त याद आती हैं अम्मा,
सिर्फ जरूरत के समय याद आते हैं पापा,
दोनों का अपना महत्त्व - अपना स्थान,
फिर भी बच्चों का प्यार पाने में पीछे क्यों हैं पापा ।

अलमारी भरी है अम्मा के कपड़ो से,
हेंगर भी नहीं भरा, पापा के कपड़ो से,
हालाँकि दोनों का सामजिक जीवन समान,
फिर भी पापा क्यों वंचित उचित स्थान से ।

अम्मा के पास सोने के आभूषण,
पर स्वर्णिम बॉर्डर की धोती पहने पापा,
परिवार का मुखिया और अभिमान,
फिर भी उचित पहचान पाने में क्यों पीछे हैं पापा ।

अम्मा के चरणों में हैं जन्नत,
पर उसका रक्षक हैं पापा,
दोनों एक दूसरे के पूरक,
फिर भी पीछे क्यों छूट गए पापा ।

पिता पीछे इसीलिए हैं
क्योंकि वह हम सभी की रीढ़ हैं,
जिससे हम सीधे खड़े हो पाते हैं,
वह हम सबके ईश्वर – भगवान्,
उनका हमारे जीवन पर बहुत एहसान ।

कोरोना

राधेश्याम
यादव,आरआरएससी, बेंगलुरू

नैसर्गिक रहन-सहन चिंतन,
शाश्वत सृजन करो न
सीख है कातिल कोरोना,
संयम सेवा करम करो न।

माँ प्रकृति का दोहन शोषण
बंद करो पंच - भूत प्रदूषण

तन बरगद मन चंदन कर संजीवन पवन झरो न।
मंदिर मस्जिद के झगडे छोड़ो
जाति - पंथ के बंधन तोड़ो

विज्ञान सम्मत श्रद्धा अर्चन अनुशीलन मनन करो न।
कलह कलुष नफ़रत के कोरोना
भ्रष्ट भूख दहशत के कोरोना

रोग शोक दुःख दारिद का मिलकर निवारण करो न।
समता ममतामयी शिक्षा-दीक्षा
रोजी – रोटी की सही समीक्षा

आरोग्य आराधन शिक्षण सदन शुचि समन्वयन करो न।
साँसों की सौदेबाजी छोड़ो
काली कमाई कालाबाजी छोड़ो

वैद्य विज्ञानी संत मौलवी मानवता पूजन करो न।
न मुँह मोड़ो न जड़ों को छोड़ो
स्नेह संवेदना की डोर न तोड़ो

नेता प्रेता विक्रेता क्रेता जन सत्यम शिवम करो न।
व्यष्टि नहीं समष्टि को पूजो
सम्यक समग्र सृष्टि को पूजो

तन बरगद मन चंदन कर जीवन जग मधुवन करो न।
सीख है कातिल कोरोना,
सत्यम शिवम सृजन करो न।

भूवैज्ञानिक स्मारक "मिलानी इग्नीस सुइट", जोधपुर, राजस्थान

स्वाति सिंह, एनआरएससी, हैदराबाद

प्रकृति एक उत्कृष्ट शिल्पकार है। अनेको प्राकृतिक शिल्पकृतिया एवं भूदृश्य, जो हमारे आस पास देखने को मिलते है, वो सब भूगर्भीय प्रिक्रियायो (geological process like erosion and deposition) के परिणाम है ,ऐसी प्रक्रियाएँ जो न केवल सतह पर बल्कि पृथ्वी के अंदर भी, गहराई तक क्रियाशील होती है. ऐसे भूदृश्य पृथ्वी के इतिहास और समय के साथ हुए विकास को दर्शाते है, जिससे केवल हमे संरक्षित रखना चाहिए बल्कि उसके महत्व को प्रचारित करना भी आवश्यक है।

भारत उपमहाद्वीप अपने भौगोलिक एवं भूवैज्ञानिक विविधताओं (geological diversity) के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ कानेक ऐसे स्थान है जो अपने अद्वित्य भूदृश्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है. ये स्थल न केवल देश विदेश के वैज्ञानिक समुदाय को बल्कि आम जनता को भी अपने प्राकृतिक एवं प्राचीन सुंदरता से आकर्षित करते हैं। भारत के कई राज्यो में ऐसे स्थल है जो न केवल संरक्षित प्राकृतिक विरासत (Heritage) के बारे में हमे जागरूक करने में मदद करते हैं बल्कि यह स्थानीय समुदाय के लिए भी गर्व के विषय होते है। ऐसे कई भू-विशेषताएं स्थलो को राष्ट्रीय भूवैज्ञानीक स्मारकों (National Geological Monument) का दर्जा दिया गया है।

आज हम ऐसे ही एक जियोलाजिकल स्थल की बात करेंगे जो भारत के राजस्थान राज्य में स्थित है, जो मिलानी इग्नियस सुइट कांटेक्ट (Milani Igneous Suite Contact) के नाम से प्रशिद्ध है और यह भूवैज्ञानिको द्वारा एक अद्वित्य स्थल माना गया है. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological Survey of India) ने इस स्थल को नेशनल जियोलाजिकल मोन्यूमेंट (national geological monument)घोषित किया है।

मिलानी इग्नियस सुईट की चट्टानें पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है और अरावली पर्वत श्रृंखला का अंश है.यहाँ की चट्टानें पूर्व-कैम्ब्रियन समय काल (Precambrian age) की है और लगभग 700 million years पुरानी है. इन चट्टानों की खास बात यह है कि ये आग्नेय गतिविधि की श्रृंखला/चक्र(igneous series) को दर्शाती है। यह विदर प्रकार के विस्फोट (fissure type eruption) से बनती हैं जो कि लगभग 1०० मी. की मोटाई की है और इनके ऊपर जोधपुर चट्टानों का समूह मिलता है , जो की मुख्य रूप से बलुआ पत्थर (sandstone) और शैल (shale) का है।

मिलानी इग्नियस सुईट के चट्टानें, सबसे अच्छी तरह जोधपुर शहर के भीतर स्थित मेहरानगढ़ किलें में देखने को मिलती है (नीचे चित्र देखें)

ज्ञान का अहंकार

शिवाजय सक्सेना, सुपुत्र श्रीमती जया सक्सेना, एनआरएससी

महाकवि कालिदास के कंठ में साक्षात सरस्वती का वास था| शास्त्रार्थ में उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता था| अपार यश, प्रतिष्ठा और सम्मान पाकर एक बार कालिदास को अपनी विद्वत्ता का अहंकार हो गया| उन्हें लगा कि उन्होंने विश्व का सारा ज्ञान प्राप्त कर लिया है और अब सीखने को कुछ बाकी नहीं बचा| उनसे बड़ा ज्ञानी संसार में कोई दूसरा नहीं।

एक बार पड़ोसी राज्य से शास्त्रार्थ का निमंत्रण पाकर कालिदास विक्रमादित्य से अनुमति लेकर अपने घोड़े पर रवाना हुए| गर्मी का मौसम था| धूप काफी तेज़ और लगातार यात्रा से कालिदास को प्यास लग आई| थोड़ी तलाश करने पर उन्हें एक टूटी झोपड़ी दिखाई दी| पानी की आशा में वह उस ओर बढ चले| झोपड़ी के सामने एक कुआं भी था| कालिदास ने सोचा कि कोई झोपड़ी में हो तो उससे पानी देने का अनुरोध किया जाए| उसी समय झोपड़ी से एक छोटी बच्ची मटका लेकर निकली| बच्ची ने कुएं से पानी भरा और वहां से जाने लगी| कालिदास उसके पास जाकर बोले- बालिके ! बहुत प्यास लगी है ज़रा पानी पिला दे| बच्ची ने पूछा- आप कौन हैं ? मैं आपको जानती भी नहीं, पहले अपना परिचय दीजिए| कालिदास को लगा कि मुझे कौन नहीं जानता भला, मुझे परिचय देने की क्या आवश्यकता ?

फिर भी प्यास से बेहाल थे तो बोले- बालिके अभी तुम छोटी हो| इसलिए मुझे नहीं जानती| घर में कोई बड़ा हो तो उसको भेजो| वह मुझे देखते ही पहचान लेगा| मेरा बहुत नाम और सम्मान है दूर-दूर तक| मैं बहुत विद्वान व्यक्ति हूं| कालिदास के बड़बोलेपन और घमंड भरे वचनों से अप्रभावित बालिका बोली-आप असत्य कह रहे हैं| संसार में सिर्फ दो ही बलवान हैं और उन दोनों को मैं जानती हूं| अपनी प्यास बुझाना चाहते हैं तो उन दोनों का नाम बाताएं ? थोड़ा सोचकर कालिदास बोले- मुझे नहीं पता, तुम ही बता दो मगर मुझे पानी पिला दो| मेरा गला सूख रहा है| बालिका बोली - दो बलवान हैं - 'अन्न' और 'जल'| भूख और प्यास में इतनी शक्ति है कि बड़े से बड़े बलवान को भी झुका दें| देखिए प्यास ने आपकी क्या हालत बना दी है| कालिदास चकित रह गए| लड़की का तर्क अकाट्य था| बड़े-बड़े विद्वानों को पराजित कर चुके कालिदास एक बच्ची के सामने निरुत्तर खड़े थे| बालिका ने पुनः पूछा- सत्य बताएं, कौन हैं आप ? वह चलने की तैयारी में थी| कालिदास थोड़ा विनम्र होकर बोले-बालिके ! मैं बटोही हूं| मुस्कुराते हुए बच्ची बोली- आप अभी भी झूठ बोल रहे हैं| संसार में दो ही बटोही हैं| उन दोनों को मैं जानती हूं, बताइए वे दोनों कौन हैं ? तेज़ प्यास ने पहले ही कालिदास की बुद्धि क्षीण कर दी थी पर लाचार होकर उन्होंने फिर से अनभिज्ञता व्यक्त कर दी| बच्ची बोली- आप स्वयं को बड़ा विद्वान बता रहे हैं और ये भी नहीं जानते ? एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना थके जाने वाला बटोही कहलाता है| बटोही दो ही हैं, एक सूर्य और दूसरा चंद्रमा जो बिना थके चलते रहते हैं| आप तो थक गए हैं| भूख प्यास से बेदम हैं| आप कैसे बटोही हो सकते हैं ?

इतना कहकर बालिका ने पानी से भरा मटका उठाया और झोपड़ी के भीतर चली गई| अब तो कालिदास और भी दुखी हो गए| इतने अपमानित वे जीवन में कभी नहीं हुए| प्यास से शरीर की शक्ति घट रही थी| दिमाग़ चकरा रहा था| उन्होंने आशा से झोपड़ी की तरफ़ देखा|

तभी अंदर से एक वृद्ध स्त्री निकली| उसके हाथ में खाली मटका था| वह कुएं से पानी भरने लगी| अब तक काफी विनम्र हो चुके कालिदास बोले- माते पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा| स्त्री बोली- बेटा मैं तुम्हें जानती नहीं| अपना परिचय दो| मैं अवश्य पानी पिला दूंगी| कालिदास ने कहा- मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें| स्त्री बोली- तुम मेहमान कैसे हो सकते हो ? संसार में दो ही मेहमान हैं| पहला धन और दूसरा यौवन| इन्हें जाने में समय नहीं लगता| सत्य बताओ कौन हो तुम ? अब तक के सारे तर्क से पराजित हताश कालिदास बोले- मैं सहनशील हूं| अब आप पानी पिला दें| स्त्री ने कहा- नहीं, सहनशील तो दो ही हैं| पहली, पृथ्वी जो पापी औऱ पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है| उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है| दूसरे, वृक्ष जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं| तुम सहनशील नहीं| सच बताओ तुम कौन हो ? कालिदास लगभग मूर्च्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्लाकर बोले- मैं हठी हूं| स्त्री बोली- फिर असत्य| हठी तो दो ही हैं- पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं| सत्य कहें ब्राह्मण कौन हैं आप ? पूरी तरह अपमानित और पराजित हो चुके कालिदास ने

कहा- फिर तो मैं मूर्ख ही हूं| नहीं तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो| मूर्ख दो ही हैं| पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है, और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए ग़लत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है|

कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे| वृद्धा ने कहा- उठो वत्स ! आवाज़ सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात माता सरस्वती वहां खड़ी थी| कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए|

माता ने कहा- शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार| तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे । इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा|

कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े|

नाम था उनका एपीजे अब्दुल कलाम

मोहन प्रसाद,
आरआरएससी, कोलकाता

एक थे देश के मिसाइल मैन,
नाम था उनका अब्दुल कलाम।
हम नकमस्तक उनके आगे ,
पूरा देश करता उन्हें सलाम।
देश की उन्नति की खातिर ,
त्यागा अपना सकल जहान।
इसलिए तो पूरा भारत,
करता उनका दिल से सम्मान।
राष्ट्रपति के पद पर भी रहते,
दीखते एक साधारण इंसान।
थे वे देश के सच्चे सेवक,
सच्चा था उनका ईमान।
भूल न जाना प्यारे उनको,
नाम था उनका अब्दुल कलाम।

ग़ज़ल

ध्रुव कुमार झा
आरआरएससी,कोलकाता

काँटों में पलना था हमें पलते चले गए
तूफाँ में जलना था हमें जलते चले गए
हर रोज़ सच को वो भी बदलते चले गए
तो हम भी झूठ से ही बहलते चले गए
इंसाफ मिलना था मुझे जिन फैसलों के बाद
वो फैसले तो रोज़ ही टलते चले गए
क़दमों पे था भरोसा मगर दिल की राह में
इक बार फिसले हम तो फिसलते चले गए
ढलने लगी जो उम्र हमारी तो ये हुआ
दुनिया से रफ्ता रफ्ता निकलते चले गए
दौलत की भूख इतनी थी हम सबको,
क्या कहें इंसान से मशीन में ढलते चले गए
हमको नहीं था शायरी का इल्म कोई भी
ज़ज्बात थे कि ग़ज़लों में ढलते चले गए ।

युद्ध भूमि - शुद्ध भूमि - बुद्ध भूमि, राजगीर

मोहन प्रसाद, *आरआरएससी,कोलकाता*

पाँच पहाड़ियों के हृदय में बसा एक अद्भुत, मनोरम, ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी है राजगीर। राजगीर को पौराणिक काल में वसुमतिपुर, कुशाग्रपुर एवं राजगृह के नाम से जाना जाता था। वर्तमान समय में यह क्षेत्र राजगृह के नाम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। राजगृह से जुडी बातों का वर्णन ऋग्वेद , अथर्वेद , वायुपुराण, महाभारत एवं वाल्मिकी रामायण में भी मिलता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगृह ब्रह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, प्राचीन संस्कृति एवं वैभव का केंद्र था। जैन ग्रन्थ के अनुसार राजगृह जरासंघ , बिम्बिसार , अजातशत्रु आदि प्रसिद्ध शासको का निवास स्थल था। यह जैन धर्म के 24वे तीर्थकर महावीर स्वामी की प्रथम तीर्थस्थली थी। भगवान बुद्ध की साधना भूमि भी राजगृह को ही माना जाता है। यह प्राचीन काल से मगध साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी। चारो ओर से पहाड़ियों से घिरे होने के कारण यह एक सुरक्षित राजधानी थी , जिस पर विजय प्राप्त करना असंभव था।

वर्तमान समय में राजगीर बिहार की राजधानी पटना से 100 की. मि. दक्षिण पूर्व में पाँच पहाड़ियों एवं घने जंगलो के बीच बसा हुआ है। राजगीर न केवल एक प्रसिद्ध धार्मिक एवं ऐतिहासिक तीर्थस्थल है, बल्कि एक सुन्दर पहाड़ी सैरगाह के रूप में भी प्रसिद्ध है। राजगृह हिन्दू, मुस्लिम, जैन एवं बौद्ध धर्मो के धार्मिक स्थलों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। खासकर बौद्ध धर्म से इसका बहुत पुराना रिश्ता है। महात्मा बुद्ध ने राजगीर की धरती पर वर्षावास के रूप में कई महत्वपूर्ण वर्ष बिताये है। राजगीर में ही बुद्ध के उपदेशो को सर्वप्रथम लिपिबद्ध किया गया था और यही प्रथम बौद्ध संगीत का भी आयोजन हुआ था। यहाँ की ऐतिहासिक भूमि पर तीन वर्ष के अंतराल पर आने वाला मलमास मेला एवं यहाँ की खूबसूरत वादियाँ पर्यटकों को खूब लुभाती है। यही वजह है कि आज राजगीर की पहचान अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक स्थल के रूप में है। यहाँ की पंचपहाड़ियाँ, विपुलगिरि, वेभारगिरी, रत्नागिरी, उदयगिरी, स्वर्णगिरी की जंगल मानसून की दिनों में एक अत्यंत मनोरम छटा प्रस्तुत करते हैं। यहाँ का घोडा - कटोरा झील और झील में सूर्यास्त का दृश्य सबका मन मोह लेती हैं।

पहाड़ियों के बीच स्थित "राजगीर" वन्य जीवन अभयारण्य प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण होने के साथ - साथ अपने अंदर जैव विविधता को समेटे जिले का इकलौता अभयारण्य है। बिहार के कुल बारह वन्य - जीव अभयारण्य में से राजगीर अभयारण्य में जीव - जंतु एवं औषधिए वनस्पतियो के कई दुर्लभ प्रजातियां पाई जाती है। इसे 1978 में पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा अभयारण्य घोषित किया गया है। राजगीर के हृदय में स्तिथ गृद्धकूट पर्वत पर विराजमान' विश्व शांति स्तूप 'जो जापानी बौद्ध श्रद्धालुओ द्वारा 1959 में बनवाया गया था, वो आज देश विदेश के पर्यटको को आकर्षित करता है। प्रति वर्ष यहाँ इसके स्थापना दिवस पर विश्व शांति सम्मेलन का आयोजन भी किया जाता है। यहाँ की पावन भूमि पर हमारे इतिहास की कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ है जो प्राचीन सभ्यता एवं कला को दर्शाती है, जैसे जापानी मंदिर, वेणुवन, नौलखा मंदिर, पाण्डु पोखर, सोनभंडार इत्यादि यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को एक अद्भुत रूप देती है। वसंत ऋतू में राजगीर का दृश्य कुछ और ही होता है। जंगलो में जीव - जन्तुओ की चहल पहल और पक्षियों के मधुर संगीत से सारा वातावरण संगीतमय हो जाता है। मंजरी लगे पेड़ खासकर फलो से लदे बेर के पेड़ आनंद की अनुभूति का एहसास कराते है। वातावरण पूरी तरह पवित्र एवं स्वच्छ हो जाता है।

अगर आप प्रकृति प्रेमी है, वातावरण के संरक्षण में रूचि रखते है एवं वास्तविक प्राकृतिक छटा को निहारना चाहते है, तो आप एक बार राजगीर जरूर पधारिये, क्योंकि मै दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह पवित्र स्थान आपके जीवन में अविस्मरणीय पल साबित होगा।

हमारे सनातन धर्म का एक अति दुर्लभ ग्रंथ

डॉ आशुतोष सक्सेना, पति, श्रीमती जया सक्सेना, एनआरएससी

यह दक्षिण भारत का एक अनोखा ग्रन्थ है जिसकी विशिष्टता यह है कि जब उसे सीधा पढ़ा जाए तो राम कथा के रूप में पढ़ा जाता है और जब उसी ग्रंथ में लिखे शब्दों को उल्टा करके पढ़े तो कृष्ण कथा का रूप ले लेता है ।

कांचीपुरम के 17वीं शदी के कवि वेंकटाध्वरि रचित ग्रन्थ "राघवयादवीयम्" ऐसा ही एक अद्भुत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को 'अनुलोम-विलोम काव्य' भी कहा जाता है। पूरे ग्रन्थ में केवल 30 श्लोक हैं। इन श्लोकों को सीधे-सीधे पढ़ते जाएँ, तो रामकथा बनती है और विपरीत (उल्टा) क्रम में पढ़ने पर कृष्णकथा। इस प्रकार हैं तो केवल 30 श्लोक, लेकिन कृष्णकथा (उल्टे यानी विलोम)के भी 30 श्लोक जोड़ लिए जाएँ तो बनते हैं 60 श्लोक। पुस्तक के नाम से भी यह प्रदर्शित होता है, राघव (राम) + यादव (कृष्ण) के चरित को बताने वाली गाथा है ~ "राघवयादवीयम।" उदाहरण के तौर पर पुस्तक का पहला श्लोक हैः

वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रन्तारं कालं भासा यः ।
रामो रामाधीराप्यागो लीलामारायोध्ये वासे ॥ १॥
अर्थातः
मैं उन भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूं,
जिनके हृदय में सीताजी रहती है तथा जिन्होंने अपनी पत्नी सीता के लिए सहयाद्रि की पहाड़ियों से होते हुए लंका जाकर रावण का वध किया तथा वनवास पूरा कर अयोध्या वापिस लौटे।

अब इस श्लोक का विलोमम्: इस प्रकार है
सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी रामामोः ।
यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम् ॥ १॥
अर्थातः
मैं रूक्मिणी तथा गोपियों के पूज्य भगवान श्रीकृष्ण के
चरणों में प्रणाम करता हूं, जो सदा ही मां लक्ष्मी के साथ
विराजमान है तथा जिनकी शोभा समस्त जवाहरातों की शोभा हर लेती है।

"राघवयादवीयम" के ये 60 संस्कृत श्लोक इस प्रकार हैं:-
राघवयादवीयम् रामस्तोत्राणि

वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रन्तारं कालं भासा यः ।
रामो रामाधीराप्यागो लीलामारायोध्ये वासे ॥ १॥
विलोमम्:
सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी भारामोराः ।
यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम् ॥ १॥

साकेताख्या ज्यायामासीद्याविप्रादीप्तार्याधारा ।
पूराजीतादेवाद्याविश्वासाग्र्यासावाशारावा ॥ २॥
विलोमम्:
वाराशावासाग्र्या साश्वाविद्यावादेताजीरापूः ।
राधार्यप्ता दीप्राविद्यासीमायाज्याख्याताकेसा ॥ २॥

कामभारस्थलसारश्रीसौधासौघनवापिका ।
सारसारवपीनासरागाकारसुभूरुभूः ॥ ३॥
विलोमम्:
भूरिभूसुरकागारासनापीवरसारसा ।
कापिवानघसौधासौ श्रीरसालस्थभामका ॥ ३॥

रामधामसमानेनमागोरोधनमासताम् ।
नामहामक्षररसं ताराभास्तु न वेद या ॥ ४॥
विलोमम्:
यादवेनस्तुभारातासंररक्षमहामनाः ।
तां समानधरोगोमाननेमासमधामराः ॥ ४॥

यन् गाधेयो योगी रागी वैताने सौम्ये सौख्येसौ ।
तं ख्यातं शीतं स्फीतं भीमानामाश्रीहाता त्रातम् ॥ ५॥
विलोमम्:
तं त्राताहाश्रीमानामाभीतं स्फीत्तं शीतं ख्यातं ।
सौख्ये सौम्येसौ नेता वै गीरागीयो योधेगायन् ॥ ५॥

मारमं सुकुमाराभं रसाजापनृताश्रितं ।
काविरामदलापागोसमावामतरानते ॥ ६॥
विलोमम्:
तेन रातमवामास गोपालादमराविका ।
तं श्रितानृपजासारंभ रामाकुसुमं रमा ॥ ६॥

रामनामा सदा खेदभावे दया-वानतापीनतेजारिपावनते ।
कादिमोदासहातास्वभासारसा-मेसुगोरेणुकागात्रजे भूरुमे ॥ ७॥
विलोमम्:
मेरुभूजेत्रगाकाणुरेगोसुमे-सारसा भास्वताहासदामोदिका ।
तेन वा पारिजातेन पीता नवायादवे भादखेदासमानामरा ॥ ७॥

सारसासमधाताक्षिभूम्नाधामसु सीतया ।
साध्वसाविहरेमेक्षेम्यरमासुरसारहा ॥ ८॥
विलोमम्:
हारसारसुमारम्यक्षेमेरेहविसाध्वसा ।
यातसीसुमधाम्नाभूक्षिताधामससारसा ॥ ८॥

सागसाभरतायेभमाभातामन्युमत्तया ।
सात्रमध्यमयातापेपोतायाधिगतारसा ॥ ९॥
विलोमम्:
सारतागधियातापोपेतायामध्यमत्रसा ।
यात्तमन्युमताभामा भयेतारभसागसा ॥ ९॥

तानवादपकोमाभारामेकाननदाससा ।
यालतावृद्धसेवाकाकैकेयीमहदाहह ॥ १०॥
विलोमम्:
हहदाहमयीकेकैकावासेद्ध्वृतालया ।
सासदाननकामेराभामाकोपदवानता ॥ १०॥

वरमानदसत्यासह्रीतपित्रादरादहो ।
भास्वरस्थिरधीरोपहारोरावनगाम्यसौ ॥ ११॥
विलोमम्:
सौम्यगानवरारोहापरोधीरस्थिरस्वभाः ।
होदरादत्रापितह्रीसत्यासदनमारवा ॥ ११॥

यानयानघधीतादा रसायास्तनयादवे ।
सागताहिवियाताह्रीसतापानकिलोनभा ॥ १२॥
विलोमम्:
भानलोकिनपातासह्रीतायाविहितागसा ।
वेदयानस्तयासारदाताधीघनयानया ॥ १२॥

रागिराधुतिगर्वादारदाहोमहसाहह ।
यानगातभरद्वाजमायासीदमगाहिनः ॥ १३॥
विलोमम्:
नोहिगामदसीयामाजद्वारभतगानया ।
हह साहमहोदारदार्वागतिधुरागिरा ॥ १३॥

यातुराजिदभाभारं द्यां वमारुतगन्धगम् ।
सोगमारपदं यक्षतुंगाभोनघयात्रया ॥ १४॥
विलोमम्:
यात्रयाघनभोगातुं क्षयदं परमागसः ।
गन्धगंतरुमावद्यं रंभाभादजिरा तु या ॥ १४॥

दण्डकां प्रदमोराजाल्याहतामयकारिहा ।
ससमानवतानेनोभोग्याभोनतदासन ॥ १५॥
विलोमम्:
नसदातनभोग्याभो नोनेतावनमास सः ।
हारिकायमताहल्याजारामोदप्रकाण्डदम् ॥ १५॥

सोरमारदनज्ञानोवेदेराकण्ठकुंभजम् ।
तं द्रुसारपटोनागानानादोषविराधहा ॥ १६॥
विलोमम्:
हाधराविषदोनानागानाटोपरसाद्रुतम् ।
जम्भकुण्ठकरादेवेनोज्ञानदरमारसः ॥ १६॥

सागमाकरपाताहाकंकेनावनतोहिसः ।
न समानर्दमारामालंकाराजस्वसा रतम् ॥ १७
विलोमम्:
तं रसास्वजराकालंमारामार्दनमासन ।
सहितोनवनाकेकं हातापारकमागसा ॥ १७॥

तां स गोरमदोश्रीदो विग्रामसदरोतत ।
वैरमासपलाहारा विनासा रविवंशके ॥ १८॥
विलोमम्:
केशवं विरसानाविराहालापसमारवैः ।
ततरोदसमग्राविदोश्रीदोमरगोसताम् ॥ १८॥

गोद्युगोमस्वमायोभूदश्रीगखरसेनया ।
सहसाहवधारोविकलोराजदरातिहा ॥ १९॥
विलोमम्:
हातिरादजरालोकविरोधावहसाहस ।
यानसेरखगश्रीद भूयोमास्वमगोद्युगः ॥ १९॥

हतपापचयेहेयो लंकेशोयमसारधीः ।
राजिराविरतेरापोहाहाहंग्रहमारघः ॥ २०॥
विलोमम्:
घोरमाहग्रहंहाहापोरातेरविराजिराः ।
धीरसामयशोकेलं यो हेये च पपात ह ॥ २०॥

ताटकेयलवादेनोहारीहारिगिरासमः ।
हासहायजनासीतानाप्तेनादमनाभुवि ॥ २१॥
विलोमम्:
विभुनामदनाप्तेनातासीनाजयहासहा ।
ससरागिरिहारीहानोदेवालयकेटता ॥ २१॥

भारमाकुदशाकेनाशराधीकुहकेनहा ।
चारुधीवनपालोक्या वैदेहीमहिताहृता ॥ २२॥
विलोमम्:
ताहृताहिमहीदेव्यैक्यालोपानवधीरुचा ।
हानकेहकुधीराशानाकेशादकुमारभाः ॥ २२॥

हारितोयदभोरामावियोगेनघवायुजः ।
तंरुमामहितोपेतामोदोसारज्ञरामयः ॥ २३॥
विलोमम्:
योमराज्ञरसादोमोतापेतोहिममारुतम् ।
जोयुवाघनगेयोविमाराभोदयतोरिहा ॥ २३॥

भानुभानुतभावामासदामोदपरोहतं ।
तंहतामरसाभक्षोतिरातकृतवासविम् ॥ २४॥
विलोमम्:
विंसवातकृतारातिक्षोभासारमताहतं ।
तं हरोपदमोदासमावाभातनुभानुभाः ॥ २४॥

हंसजारुद्धबलजापरोदारसुभाजिनि ।
राजिरावणरक्षोरविघातायरमारयम् ॥ २५॥
विलोमम्:
यं रमारयताघाविरक्षोरणवराजिरा ।
निजभासुरदारोपजालबद्धरुजासहम् ॥ २५॥

सागरातिगमाभातिनाकेशोसुरमासहः ।
तंसमारुतजंगोप्ताभादासाद्यगतोगजम् ॥ २६॥
विलोमम्:
जंगतोगद्यसादाभाप्तागोजंतरुमासतं ।
हस्समारसुशोकेनातिभामागतिरागसा ॥ २६॥

वीरवानरसेनस्य त्राताभादवता हि सः ।
तोयधावरिगोयादस्ययतोनवसेतुना ॥ २७॥
विलोमम्
नातुसेवनतोयस्यदयागोरिवधायतः ।
सहितावदभातात्रास्यनसेरनवारवी ॥ २७॥

हारिसाहसलंकेनासुभेदीमहितोहिसः ।
चारुभूतनुजोरामोरमाराधयदार्तिहा ॥ २८॥
विलोमम्
हार्तिदायधरामारमोराजोनुतभूरुचा ।
सहितोहिमदीभेसुनाकेलंसहसारिहा ॥ २८॥

नालिकेरसुभाकारागारासौसुरसापिका ।
रावणारिक्षमेरापूराभेजे हि ननामुना ॥ २९॥
विलोमम्:
नामुनानहिजेभेरापूरामेक्षरिणावरा ।
कापिसारसुसौरागाराकाभासुरकेलिना ॥ २९॥

साग्र्यतामरसागारामक्षामाघनभारगौः ॥
निजदेपरजित्यास श्रीरामे सुगराजभा ॥ ३०॥
विलोमम्:
भाजरागसुमेराश्रीसत्याजिरपदेजनि ।स
गौरभानघमाक्षामरागासारमताग्र्यसा ॥ ३०॥

॥ इति श्रीवेङ्कटाध्वरि कृतं श्री ।।

यह दुनिया में कहीं भी ऐसा न पाया जाने वाला ग्रंथ है । एवं पुनःभारत की महान संस्कृति व सभ्यता को दर्शाता है|

प्यारा हाथी

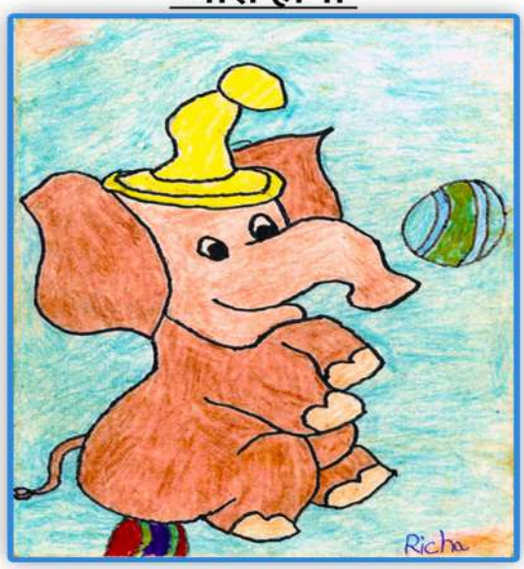

बच्चों का है प्यारा हाथी,
श्री गणपति जी की याद दिलाये,
बच्चों के साथ फुटबाल खेले बनके हमारा साथी।
सरकस में हाथी जब अपना करतब दिखाये,
बच्चे खुशी से नाचे गायें और ताली बजायें।

नन्हें-बच्चे

नन्हें- नन्हें कदम जब तुम्हारे बढ़ जाए,
माँ खुशी से अपने आंसु रोक ना पाए।
बच्चे नया काम कर जाए,
तो माता-पिता मन ही मन मुस्काएं।

सुभाषित सुविचार

बी महबूब बाशा, आरआरएससी, बेंगलुरु

- हर छोटा बदलाव बड़ी कामयाबी का हिस्सा होता है।
- मैं शुक्रगुज़ार हूँ उन तमाम लोगों का जिन्होनें बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें भरोसा था कि मैं मुसीबतों से अकेले ही निपट सकता हूँ।
- ज्यादा बात करने वाले कुछ नहीं कर पाते हैं और कुछ कर दिखाने वाले ज्यादा बात करने में यकींन नहीं रखते हैं।
- जिस काम में काम करने की हद पार ना हो वो काम किसी काम का नहीं।
- नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फैसले बदल लेते हैं और कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते हैं।

लिखो प्यार से

हरीश जी, एनआरएससी, हैदराबाद

मैं जब लिखता हूँ,
खुद के लिए ही लिखता हूँ ।
वयोंकि जो मैं देख या सुन रहा हूँ,
अपने में देख या सुन रहा हूँ ।
ये सोच-विचार केवल मेरा ही नहीं,
महात्मा गांधीजी जी का भी हैं,
देश की आजादी में वे अपनी मुक्ति देखें ।
मदर टेरेसा भी कुष्ठ रोगी के सेवा में,
अपनी मुक्ति देखी थी,
हमारा ब्रहदरण्य का उपनिषद में,
महर्षी याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रेयी से
कहा था कि हम खुद से प्यार करते है ।
अपने मन में दूसरों की छवि से प्यार करते है ।
इसलिए मैं बेहद प्यार करता हूँ,
क्योंकि मेरा प्यार मेरा पास ही रहने वाला है,
प्यार देने वाला, प्यार पाने वाला एक ही है ।

पेन्सिल स्कैच

वी वेंकट रमणा, एनआरएससी, हैदराबाद

हौसला

आशा सुरेश,
एनआरएससी, हैदराबाद

हौसला ये तुम्हारा कभी न झुके,
विश्वास तुस्हारा हरदम बढता रहे,
यह जिन्दगी एक रंगमंच है,
जहाँ हर किरदार निष्टा और
जुनून के साथ निभाता है।

देखो, जीवन एक पंछी का,
नन्ही सी एक जान का,
जिसे माँ ने लिया उडना सिखाने का प्रण,
देखो संघर्ष एक तितली का,
एक हरे कीडे से रंग-बिरंगी तितली बनने का।

सुबह के सूरज की पहली किरण,
शाम के सितारे और रात की चाँदनी की शीतलता,
हर वक्त ये सभी समय की गरहाई को दर्शाते है,
और हमारे अंदर की ममता
और उत्साह को जगाते हैं।

हर इन्सान का सबसे वफादार दोस्त,
एक कुत्ता जो हर वक्त चहरे पे लाये मुस्कान,
रहे ऐसे सच्चा और अच्छा रिश्ता,
जो सदियों तक बना रहे ऐसी दास्तान।
हौसला ये तुम्हारा कभी न झुके,
विश्वास ये तुम्हारा हरदम बढ़ता रहे ।।

पेन्सिल स्कैच

अंकिता , सुपुत्री, श्रीमती आशा सुरेश
एनआरएससी, हैदराबाद

ननद का भाभी को निवेदन

संतोष शर्मा, धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा,
आरआरएससी,जोधपुर

वो मेरी माँ है जो तुम्हारी सास है
आज वो मुझसे दूर मगर तुम्हारे पास है
तुम मेरी जगह कभी ना आना
अपने लिये नई राह बनाना
जब कभी वो तुम्हें लाड ना करें
इस का कसूरवार मुझे ना बताना
मुझे तो माँ लाड़ कम
करती डांटती ज्यादा थी
आसान नहीं था तब भी उन्हें मनाना
नये घर जाना है हर रोज सुनाती थी
ऐसा कहकर हर काम सिखाती थी
कभी मन से कभी बेमन से चुपचाप
बिना कुछ कहे मैं भी सीख जाती थी
मगर मैं जानती थी
वो ऐसा मुझे मजबूत बनाने को करती हैं
जग हंसाई ना हो वो इस बात से डरती हैं
नहीं तो कौन माँ ये सब कहती है
भाभी यही उम्मीद वो तुमसे लगा बैठी
मेरी ही तरह तुम्हें समझा बैठी
उनके लाड़ के तरीके ही ऐसे है
हम दोनों ही उनकी नज़र में एक जैसे हैं
आज दूर हूँ और कभी कभार आती हूँ
वक्त कम होता है माँ का लाड़ पाती हूँ
तुम्हें लगता है
ननद को इतना प्यार क्यूं
मुझे हर बार नसीहत क्यूँ
आज तुम बहू हो वहां की

मैं हूँ बहू अपने यहां की
तो मुझसे ये ईर्ष्या कैसी
मैं भी हूँ भाभी किसी की
मत रख भाभी मन में मलाल कोई
औरत जान मुझसे ना कर सवाल कोई
सास बहू में ननद का शोर ना रख
मेरी प्यारी भाभी अपने मन में कोई चोर ना रख
माँ के बाद भाभी तुझसे ही निभानी है
मेरे मायके की लक्ष्मी भैया के दिल की रानी है
भाभी ननद का रिश्ता खट्टा मीठा आचार है
भाई भाभी हैं तो ननद के तीज त्यौहार है...

चित्रकारी

✍ *विनोद एम बोथले, एनआरएससी, हैदराबाद*

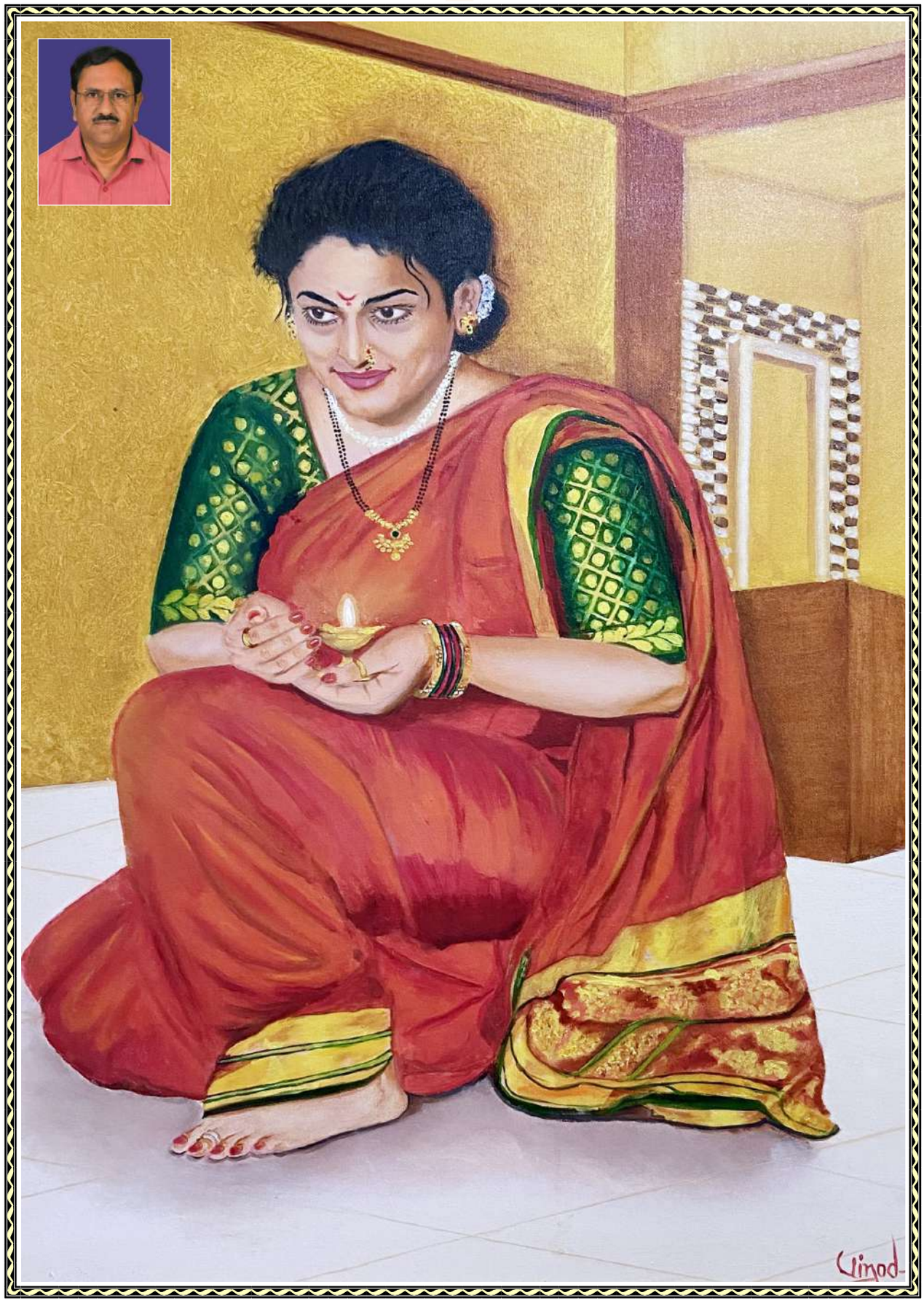

एक कविता हर माँ के नाम

✍ वेदिका शर्मा, सुपुत्री श्री ओम प्रकाश शर्मा, आरआरएससी, जोधपुर

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-साधा, भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।
जीवन उसी का पूरा है ।

मौसम

✍ निवेदिता सिन्हा, आरआरएससी, कोलकाता

एक बरस में मौसम चार,
कभी पतझड़ तो कभी बहार,
कभी धूप तो कभी सावन की फुहार ।

ये हर एहसास कराती है,
कभी ओले तो कभी शोले बरसाती है ।
मानो प्रकृति अपने ढंग से
जीवन का राग सुनाती है ।
सुख-दुःख हैं जीवन के दो पहलू
ये बात हमें समझाती है ।

जीवन में गर ना हो गम,
खुशी का एहसास अधूरा है ।
जो हर एहसास को जीता हो,
जीवन उसी का पूरा है ।

पेन्सिल स्कैच

✍ अनन्या .सुपुत्री , हरीश, जी
एनआरएससी, हैदराबाद

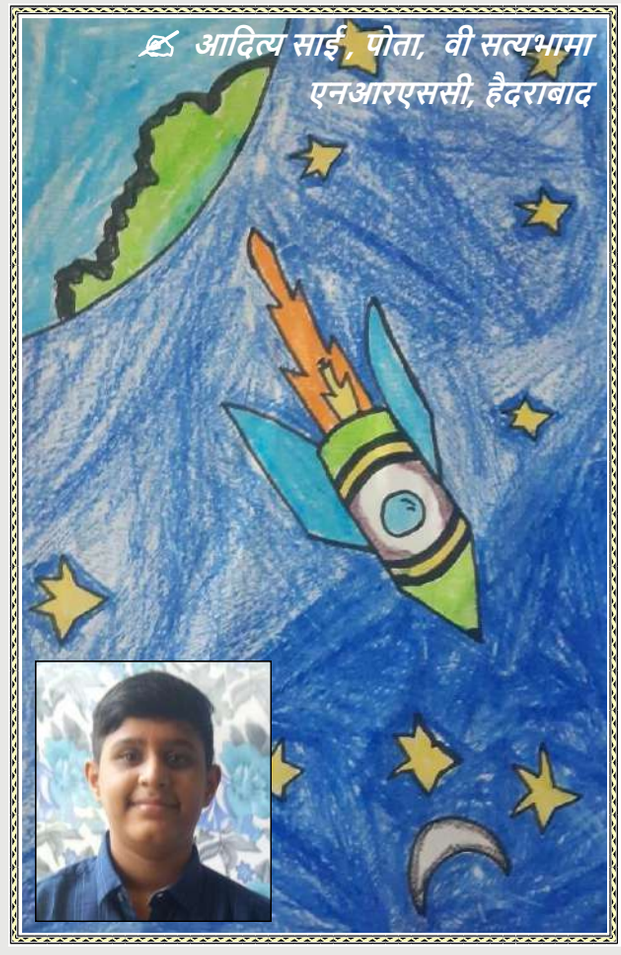

✍ आदित्य साई , पोता, वी सत्यभामा
एनआरएससी, हैदराबाद

वर्चुअल वर्ल्ड—एक अलग दुनिया

विशाल सक्सेना, सुपुत्र, श्री सुभाष सक्सेना, एनआरएससी, हैदराबाद

स्वागत है आपका एक ऐसी दुनिया में जहां आप मनचाहा रूप-रंग पा सकते हैं, गायब होकर सैकेंड्स में कहीं भी पहुंच सकते हैं, इंसान होने के बावजूद भी उड़ सकते हैं और पलक झपकाते ही किसी भी वस्तु का निर्माण कर सकते हैं। चौंकिए मत, ये किसी वीडियो गेम्स का ट्रेलर नहीं है, वास्तव में यही वर्चुअल वर्ल्ड है। यह वह दुनिया है जहां आप न होकर भी खुद की उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं। जहां आप अगर हिमालय पर चढ़ने का ख्वाब रखते हैं तो आपको हिमालय की घाटियों में यात्रा करने का सुख महसूस हो सकता है। मेरी बात से शायद आपको जीन्स फिल्म का वह गाना याद आया होगा जहां ऐश्वर्या राय की एक इमेज क्रिएट करके दो हीरोइनों को एक साथ नाचते दिखाया गया है। यह भी इसी दुनिया का एक हिस्सा है। जहां तक इस विचार धारा की नींव रखने की बात है तो इसके प्रमाण 1962 में अविष्कृत संसोरेमा नामक एक मैकेनिकल मशीन के रूप में मिलते हैं। ये मशीन दृष्टि, ध्वनि, संतुलन, गंध व स्पर्श को महसूस कर सकती थी। धीरे-धीरे इस तकनीक का प्रयोग मनोरंजन जगत में किया जाने लगा। जब 3डी फिल्मों ने सफलता हासिल की तब अविष्कार हुआ 4डी फिल्मों का, जिसमें दर्शक सामने चल रहे

दृश्य को स्वयं पर महसूस भी कर सकते थे। वीडियो गेम्स के जगत में मेज वार नामक शूटिंग गेम एक मील का पत्थर साबित हुआ जो कि 3डी तकनीक पर आधारित था। ड्रिमस्केप, सीटिस्पेस तथा द प्लेस कुछ शुरूआती वर्चुअल वर्ल्ड के मंच रहे जन्होंने 2डी और 3डी में काफी क्रांतिकारी आयाम दिए। प्रथम ऑनलाइन वर्चुअल वर्ल्ड का खिताब पाया 1987 में ल्यूकास फिल्म गेम्म द्वारा अविष्कृत हैबिटेट ने।

कार्यशैली: एक वर्चुअल वर्ल्ड को काम करने के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म चाहिए होता है जो प्रतिदिन हर घंटे और हर मिनट सक्रिय रहे। छोटे स्तर पर ये आसान होता है क्योंकि वहां मेंटेनेंस के लिए कम से कम डाउनटाइम की आवश्यकता पड़ती है। कुछ लोग इसे मात्र काल्पनिक मान कर अनदेखा भी कर देते हैं परंतु ध्यानपूर्वक अध्ययन में पाया गया है कि असली और आभासी दुनिया में अधिक अंतर नहीं है। दोनों में ही समय-समय पर प्रतिभागी आते और जाते रहते हैं। आभासी दुनिया में भी सबके अवतार वैसे ही अलग-अलग होते हैं जैसे असली दुनिया में सबकी संस्कृति और मान्यताएं होती है। आभासी दुनिया में भी लोगों के पास कम समय होता है जैसे कि असली दुनिया में। वर्चुअल वर्ल्ड के प्रतिभागियों के पास भी सीमित समय होता है जिसमें उन्हें अपनी जरूरत के साधन भी जुटाने होते हैं।

अब अगर हम इसके दायरे की बात करें तो समय व परिस्थिति के अनुसार इसका दायरा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसका सम्मोहन बच्चों और युवाओं को तेजी से अपनी गिरफ्त में ले रहा है। हाल ही में ग्रेट ब्रिटेन में किए गए सर्वेक्षण से यह पता चला है कि ब्रिटेनवासियों को वे वर्चुअल सुख अधिक प्यारे हैं जो इंटरनेट की सोशल नेटवर्किंट से प्राप्त होते हैं। अब वहां मां-बाप व बच्चों का संवाद इंटरनेट के जरिए ही होता है। उनकी सामाजिक दुनिया इंटरनेट तक सिमट कर रह गई है और आपसी दूरियां काफी बढ़ कई हैं। भारत भी इससे बच नहीं सका है। यहां भी इंटरनेट की आभासी दुनिया ने सामाजिक संबंधों के प्रत्यक्ष संवाद को घुन की तरह चाटना शुरू कर दिया है। मुंबई में ऐसे कई इंटरनेट एडिक्टेड क्लीनिक खुल गए हैं जहां दर्जनों मां-बाप अपने इंटरनेट व्यसन से घिरे बच्चों को लेकर पहुंचते हैं। जहां बच्चे अपने दिन का अधिकांश समय इंटरनेट पर या विविध सोशल मीडिया पर बिताने में सुख का एहसास पाते हैं। इंटरनेट के प्रयोग के मामले में भारत आज एशिया में तीसरे या चौथे नंबर पर है। साथ ही इंटरनेट प्रयोग करने वाली 85 फीसदी आबादी यहां 14 से 40 वर्ष के बीच है। यह वह वर्ग है जो नेट सर्च, ई-मेल, फेसबुक,

ट्विटर व इंस्टाग्राम के जरिए समाज के वास्तविक संबंधों से धीरे-धीरे कट रहा है।

सामाजिक तथ्य बताते हैं कि आज कंप्यूटर और इंटरनेट की आभासी दुनिया बच्चों में परिवार, स्कूल व क्रीड़ा समूह जैसी प्राथमिक संस्थाओं की उपादेयता पर प्रश्नचिह्न लगा रही है। पिछले दो दशकों से लगातार कंप्यूटर व इंटरनेट सूचनाओं की नई नेटवर्क सोसाइटी गढ़ रहे हैं। यह वह सोसायटी है जिसमें पारस्परिक संवाद के लिए दैहिक उपस्थिति आवश्यक नहीं है, निश्चित ही सूचनाओं के इस देहविहीन समाज में आमजन के समक्ष इन यक्ष प्रश्नों का उठना स्वाभाविक ही है कि इस इंटरनेट उन्मुख नेटवर्क यानि नेटीजन सोसाइटी में हमारे फेस-टू-फेस संवाद बनाने वाले रोल मॉडल दम क्यों तोड़ रहे हैं? क्यों सोशल मीडिया पर अपनी उपस्थिति दर्ज करने की होड़ में हमारे मस्तिष्क को तरोताजा रखने वाली स्वस्थ क्रियाएं हमारे प्रत्यक्ष सामाजिक जीवन से नदारद हो रही हैं। क्यों इस प्रकार का अस्वस्थ संदेश देने वाली वेबसाइटें बच्चों और युवाओं के वास्तविक संसार को नष्ट कर रही हैं। विद्यालयों मं पठन-पाठन की क्रिया और शिक्षक की तुलना में इंटरनेट की सोशल वेबसाइटों से संवाद प्रभावी क्यों हो रहा है?

यह दौर सूचना क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण दौर है, निश्चित ही सूचनाओं के तकनीकी संवाद ने परिवार व उसकी सामूहिकता को विखंडित करके बचपन को सबसे अधिक प्रभावित किया है। दादा-दादी, नाना-नानी की बाहों से लिपट कर कहानियां सुनने वाला बचपन अब कंप्यूटर, इंटरनेट, टीवी व वीडियो गेम जैसे संचार माध्यमों के बीच की मशीनी दुनिया के साथ विकसित हो रहा है। उसके इस मनो-शारीरिक विकास में दैहिक समाज नदारद है। आज आर्थिक दबावों के समक्ष मां-बाप को इतनी फुरसत ही नहीं है जो वह संतान को बता सके कि समाज का उसके जीवन में क्या महत्व है तथा उसके सामाजिक जीवन को चयन करने की दिशा क्या होगी। बच्चों के जीवन में संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों की सनातनधर्मिता की सीख देने वाले परिवार और स्कूल तक उनके बचपन से दूर हो रहे हैं। एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि परिवारों से बड़े-बूढ़ तो निकाल दिए गए हैं और मां-बाप भी अब बच्चों के बचपन से अनजान होकर सिर्फ उनकी परवरिश के लिए धन अर्जन में लगे रहते हैं। जहां बच्चों को दादा-दादी का लाड़ प्यार मिलना चाहिए वहां वे अपने बचपन केवल एक टैब या लैपटॉप के जरिए बिताते हैं। इंटरनेट की दुनिया ने संस्कृति और मौलिक मूल्यों को मानो शून्य कर दिया है। जहां आज बच्चे सांस्कृतिक शून्यता के दौर से गुजर रहे हैं जो भविष्य और समाज दोनों के लिए हानिकारक है। इस वर्चुअल दुनिया के फायदे तो हैं लेकिन इससे कल की चिंता भी बढ़ रही है। इतना ही नहीं वर्चुअल वर्ल्ड का शिकार हो रहे हमारे बच्चे जब अपना अधिकांश समय वर्चुअल दुनिया के विविध पात्रों के साथ बिताते हैं तो वे अपने आपको उनसे अधिक जुड़ा हुआ महसूस करने लगते हैं और धीरे-धीरे उनमें इन चीजों के इस्तेमाल के प्रति एडिक्शन भी आ जाता है। माता-पिता अपने मन की शांति या चैन के लिए बच्चों के हाथ में जो खिलौना थमा देते हैं अक्सर वहीं खिलौना इन बच्चों का कायाकल्प करने लगता है। समय के साथ-साथ ये बच्चे दिन भर में अधिक से अधिक रेडियेशन का प्रभाव न समझते हुए इनका धड़ल्ले से इस्तेमाल करते रहते हैं। माता-पिता इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि बहुत ही कम उम्र में बच्चों ने टेक्नोलॉजी से हाथ मिला लिया है। बीते कुछ दिनों में हमने ऐसी कई खबरें पढ़ी भी होंगी जहां बच्चे वर्चुअल वीडियो गेम का शिकार होकर आत्महत्या कर रहे हैं या किसी न किसी अपराध के शिकार होते जा रहे हैं। जहां यह दुनिया आपसी संवाद का एक अच्छा साधन है वहीं यही दुनिया मनोविज्ञान की दृष्टि से बच्चों व युवाओं को एक अलग ही दुनिया से जोड़ती जा रही है जो हमारे समाज के लिए घातक सिद्ध होगा। यह तो हम सभी मानते हैं कि किसी भी तरह की तकनीक मनुष्य द्वारा तैयार की जाती है ताकि उसके सही इस्तेमाल से लोगों को सुविधाएं प्राप्त हो सकें और उन्हें आसानी हो लेकिन जब हम इन तकनीकों का गलत इस्तेमाल करने लगते हैं तो यही हमारे लिए घातक बन जाती हैं। ज़रा सोचिए कि हम नई तकनीक के साथ नई पीढ़ी को क्या दिशा दे रहे हैं.....

सचित्र—कविताएँ

ऋचा त्रिवेदी, बहन शिवम त्रिवेदी
आरआरएससी, बेंगलुरु

संगीत की महफ़िल

महफ़िल है सजी हुयी,
लोगों की भीड़ है भरी हुयी।
गायक कलाकार हैं आते,
अपना हुनर वह दिखाते,
दर्शक खुशी से तालियां बजाते।।

शिक्षा एक वरदान

शिक्षा है ऐसा वरदान,
पढ़-लिखकर हम बने बुद्धिमान।
सबको दे गौरव और आत्म सम्मान,
ज्ञानी से बड़ा न कोई धनवान।।

प्यारी तितली

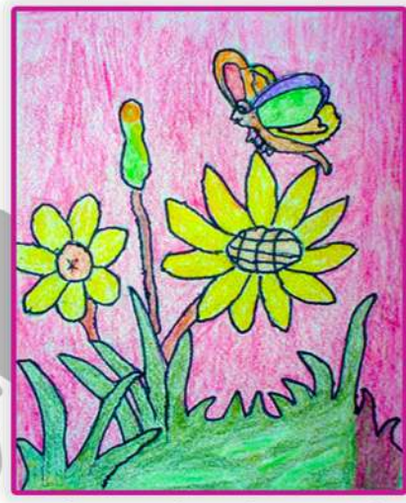

कभी इठलाती कभी मुस्कुराती,
सब पर अपना रौब जमाती।
फूलों कलियों पर ये हक़ जमाती,
फूलों की सुगंध में खो जाती,
इसलिए तो यह तितली कहलाती ॥

पानी का मोल

पानी तो है जीवन दान,
कुदरत का है ये वरदान।
पानी से है बुझती प्यास,
वर्षा ऋतु है इसकी शान,
खेतों में डाले ये नयी जान।।

विश्व हिंदी दिवस

10 जनवरी 2021

राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केन्द्र
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
बालानगर, हैदराबाद - 500037
www.nrsc.gov.in